

jftLV³h laö Mhö ,yö&33004@99

REGD. NO. D. L.-33004/99

vlk/kj.k

Hkxk II—[k.M 3—mi&[k.M (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

izkf/dkj ls izdkf'kr

la- 471]

ubZ fnYyh] lkseokj] tqykbZ 11] 2016@vk''kk<+ 20] 1938

No. 471]

NEW DELHI, MONDAY, JULY 11, 2016/ASADHA 20, 1938

खान मंालय

अधिसूचना

नई दली, 11 जुलाई, 2016

(अ).—कीय सरकार, खान और खिनज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 (1957 का 67) क

धारा 11 ख ारा द शिय का योग करते ए, िन#िलिखत िनयम बनाती है, अथात् :—

अयाय 1

ारंभिक

1. संि नाम और ारंभ — (1) इन िनयम का संि- नाम परमाणु खिनज उरयायत िनयम, 2016 है ।
(2) ये राजप4 म5 उनके काशन क तारीख को वृ9 त हगे ।
2. परभाषाएं — (1) इन िनयम म5, जब तक <क संदभ' से अयथा अपेि-त न हो,—
(क) “अधिनयम” से खान और खिनज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 (1957 का 67) अभेत है;
(ख) “परमाणु खिनज” से अधिनियम क थम अनुसूची के भाग ख म5 विनAदB खिनज अभेत हC;
(ग) “तटीय बालू खिनज” से टेरी या तटीय बालू म5 पाए गए लाभदायक भारी खिनज, िजनके अंतगत, इलमेनाइट, Eटाइल,
िलयोकोFसीन, गानGट, मोनोज़ाइट, तुरसावा (जिरकान) और िसलीमेनाइट भी है, अभेत हC;
(घ) “बोड” से परमाणु ऊजा' अधिनियम, 1962 (1962 का 33) क धारा 27 के अधीन ग3ठत परमाणु ऊजा' विनियामक बोड' अभेत है;
(ङ) “विभाग” से के िय सरकार के परमाणु ऊजा' विभाग अभेत है;
(च) “निदेशालय” से विभाग के अधीन परमाणु खिनज खोज और अनुसंधान निदेशालय अभेत है;
(1)
(छ) “अवैध खनन” से <कसी Nि या कंपनी ारा <कसी -े4 म5, अधिनियम क धारा 4 क उपधारा (1) के अधीन यथा अपेि-त खिनज उरयायत धारण <कए िबना, क गई कोई भूमी-ण या पूवG-ण या खनन सं<Qया अभेत है ।
ीकरण—इस खंड के योजन के िलए,—
(क) अधिनियम क धारा 23 ग के अधीन बनाए गए िनयम से िभर <कहS िनयम का <कसी खनन पTे के धारक ारा खनन पTे के -े4 म5 के अितQमण काअथा' वयन अवैध खनन के Eप म5 नहS <कया जाएगा;
(ख) अवैध खनन क सीमा का अवधारण करते समय, <कसी खिनज उरयायत के अधीन अनुद9 त -े4 ऐसी खिनज उरयायत के धारक ारा विविधपूण' ाधिकार से धाउरत <कया आ -े4 माना जाएगा;
(ज) “विहित पदाथw” से परमाणु ऊजा' अधिनियम, 1962 (1962 का 33) के अधीन विहित पदाथw क सूची म5 सिXमिलत
<कए गए खिनज अभेत हC;
(झ) “रेल” और “रेल शासन” का Qमश: वही अथ' होगा जो रेल अधिनियम, 1989 (1989 का 24) म5 उनका है;
(ञ) “खान साधारण” से खनन पTा -े4 के खिनजीकृत जोन से विवZफोटन या खुदाई या झमाई के प]ात् उसक ाकृतिक
दशा म5 अिभा. क^ी, असंZकृतया असंदिलत साम_ी अभेत है ।
(ट) “अनुसूची” से इन िनयम क अनुसूची अभेत है;

3460GI/2016

- (ठ) “धारा” से अधिनियम क कोई धारा अभिमत है; और
 (ड) “ारंभिक मूय” से परमाणु खनिज का अयकम5 अंतवB विहित पदाथW के भार क ितशतता के EP म5 विनिAदB

ऐसा ेड अभिमत है जो विभाग ारा समय-समय पर अनुसूची क

EP म5, आने वाले विविध B परमाणु खनिज के िलए ारंभिक मूय के EP म5 विनिAदB और अधिसूचित <कया जाएगा;

और

- (ढ) “पूण भारी खनिज” से ऐसे खनिज अभिमत हC िनम5 इलामेनाइट, Eटाइल, तुरसावा, मोनाजाइट, िसलीमेनाइट, िलियोकोFसीन और गानGट है;

(2) उन शब्द और पद का, जो इन िनयम म5 युF त हC कतु इसम5 प3रभाषित नहS हC, वही अथ होगा जो, यथािZथित, अधिनियम, उसके अधीन बनाए गए िनयम या परमाणु ऊजा अधिनियम, 1962 (1962 का 33) के अधीन उनका है ।

3. लागू होना—(1) ये िनयम एक या अधिक अय खनिज म5 उस EP म5 या सहचारी EP म5 आने वाले परमाणु खनिज से संबंधित खनिज उरयायत को ही लागू हगे परंतु यह तब जब<क ऐसे परमाणु खनिज का ेड ारंभिक मूय के बाराबर या उससे अधिक है ।

- (2) परमाणु खनिज से संबंधित खनिज उरयायत5, जहां अयक म5 अंतवB परमाणु खनिज का ेड ारंभिक मूय से कम है,

यथावे यक, प3रवतन सहित खनिज (परमाणु और हाइड्रोकोबन ऊजा खनिज से िभR) उरयायत िनयम, 2016 के वृ उपबंध ारा शासित हगी ।

- (3) खनिज अंतवZतुह के साय के ित ारंभिक मूय के िनधारण के अनुसरण म5 इन िनयम के लागू होने के बारे म5 अवधारण

निदेशालय ारा, यथािZथित, िनयम 4 के उपनियम (5) या िनयम 6 के उपनियम (3) के उपबंध के अनुसार <कया जाएगा ।

- (4) यद एक या उससे अधिक परमाणु खनिज अय खनिज के सहयोजन म5 उ9पर होते हC कतु परमाणु खनिज का ेड ारंभिक मूय से कम है, तो खनिज संQयाह, संZ करण या सज जीकरण से प3रणत <कहS परमाणु खनिज को परमाणु खनिजके संरण के बारे म5 विभाग ारा जारी <कए गए िनदेश और रेडियोधामता सुरा के बारे म5 बोड' ारा जारी <कए गए िनदेश के अनुसार संभाला

जाएगा और उनका नयन <कया जाएगा ।

परमाणु खनिज& के िलए (पूव)ण—(1) अधिनियम क धारा 4 क उपधारा (1) के दूसरे परतुक के अधीन अनुकात अभिकरण परमाणु खनिज के िलए पूवG-ण संQयाएं <कसी पूवG-ण अनुकि. के िबना कर सक5गे और ऐसी

अनुसूची खके अनुपालन म5 क जाएंगी :

'Hkx IIμ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

3

परतु जहां पूवG-ण संQया इसउपनियम के अधीन क जानी है, वहां पूवG-ण संQया करने क वांछा रखने वाले अभिकरण राज सरकार को उस े4 क और पूवG-ण के िलए अपेित अविध क विविधय के साथ एक अनुरोध प4 Zतुत कर5गे ।

(2) राज् य सरकार ऐसे अनुरोध प4 क ाकि के तीस <दन के भीतर िनदेशालय के पूव' अनुमोदन से राजप4 म5 एक अधिसूचना उपनियम (1) के योजन के िलए जारी करेगी ।

- (3) राज् य सरकार अधिसूचना के जारी <कए जाने पर, ऐसे <कसी े4 या उसके भाग के िलए, िजसके संबंध म5 अधिसूचना जारी

क गई है, <कसी अय m यि या अभिकरण को कोई खनिज उरयायत अनुद9 त नहS करेगी ।

- (4) उपनियम (1) के अधीन पूवG-ण संQयाएं पूरी होने पर, पूवG-ण संQयाएं करने वाला अभिकरण अपने िनकषW क भूगभ' नुसूची खम5 विनिAदn ट EP म5 Zतुत करेगा और यदपूवG-ण संQया निदेशालय ारा क जाती है तो ऐसी उरपोट' अपेित नहS होगी ।

(5) उपनियम (4) के अधीन भूगभ' संबंधी उरपोट'के ा. होने पर, िनदेशालय पूवG-ण े4 म5 के परमाणु खनिजके ेड क तुलना ारंभिक मूय से करेगा और,—

- (क) यद परमाणु खनिज का ेड ारंभिक मूय से कम है, तो िनदेशालय भूगभ' संबंधी उरपोट' क ित के साथ एक

िलिखत संसूचना राज्‍य सरकार को उपलब्ध कराएगा, जो अधिनयम क, यथािर्‍थित, धारा 10ख या धारा 17क और उसके अधीन बनाए गए िनयम के अनुसार उस े4 पर खिनज 3रयायत5 अनुद कर सकेगी;

(ख) यद परमाणु खिनज का ेड ारंभिक मू'य के बराबर या उससे अधिक है तो राज्‍य सरकार ारा खनन पट्टा केवल इन िनयम के अनुसार अनुद कया जाएगा :

परतु िनदेशालय पूवग-ण संंQयाह के संबंध म5 िनदेशालय ारा तैयार क गई भू-गभ' संबंधी 3रपोटW क भी उपरो एप म5 संवी-ा कराएगा और उसका डाटा खंड (क) और खंड (ख) के अधीन अनुयात कारवाई के िलए राज्‍य सरकार को सपेगा ।

(6) यद िनदेशालय का यह िन कष' है क उपिनयम (4) के अधीन Z तुत क गई भू-गभ' संबंधी 3रपोट' उपिनयम (5) के अधीन अवधारण कए जाने के िलए अपयार् त है, तो वह अित3रF त जानकारी क ई सा कर सकेगा या अित3रF त खोज करने का और ऐसे

अित3रF त डाटा के बारे म5, जो िनदेशालय ारा िविनAदह ट कया जाए, िन कष' Z तुत करने का िनदेश दे सकेगा और ऐसे िन कष' और

डाटा ार त होने पर, िनदेशालय उपिनयम (5) म5 यथा िविनAदह ट कारवाई करेगा ।

(7) राज्‍य सरकार उपिनयम (1) के अधीन अनुद अनुकि. को, यद परमाणु खिनज िनदेशालय िलिखत म5 इस बात क संसूचना

देता है क पूवग-ण संंQयाएं पूण' हो चुक हC; प3रसंस्त कर सकेगी ।

अ याय 2

खिनज रयायत& का पता लगाया जाना और अनुद+ त ,कया जाना

,कया जाना—(1) जहां िनदेशालय ारा अनुसूची ख

अनुएप तैयार क गई पूवग-ण 3रपोट' क िनयम 4 के उपिनयम (5) के उपबंध के अनुसार परी-ा कए जाने पर यह उपदशत होता है क परमाणु खिनज का ेड ारंभिक मू'य के बराबर या उससे अधिक है, वहां राज्‍य सरकार,—

(क) उस े4 क पहचान और उसका सीमांकन करेगी जहां कसी खनन पट्टे को वन भूमि, राज्‍य सरकार के Z वामि9 वाधीन

आने वाले भूमि और राज्‍य सरकार के Z वामि9 वाधीन न आने वाली भूमि म5 आबं3टत कए जाने का Z ताव है;

(ख) उन िमत े4 के साथ, खंड (क) के अधीन पहचान कए गए और सीमांकत े4 पर खनन पट्टा अनुद9 त करने का Z ताव सवग-ण संं याक सहित क5ीय सरकार को इस अनुरोध के साथ Z तुत करेगी क कसी सरकारी कंपनी या सरकार के Z वामि9 वाधीन या िनयं4णाधीन िनगम को ऐसा खनन पट्टा अनुद9 त करने के िलए नामिनAदह ट कया जाए :

पर तु जहां के िय सरकार क यह राय है क ऐसे पहचान कए गए े4 म5 खनन सरकारी कंपनी या सरकार के Z वामि9 वाधीन या िनयं4णाधीन िनगम ारा और िनयम 6 के उपबंध के अधीन रहते ए कया जाना अपेित नहS है, तो वह िलिखत आदेश ारा ऐसा घोषित कर सकेगी और ऐसे मामल म5, उपिनयम (2) के उपबंध यथावक यक प3रवतन सहित लागू हगे और राज्‍य सरकार उस े4 पर कोई खिनज 3रयायत अधिनयम क धारा 10ख या धारा 11 या धारा 17क, और धारा 13 के अधीन बनाए गए खिनज (खिनज अंतव'Z तु का सा; य) िनयम, 2015, खिनज

(नीलामी) िनयम, 2015, खिनज (सरकारी कंपनी ारा खनन) िनयम, 2015 और खिनज (परमाणु और हाइड्रोकार्बन ऊजा' खिनज से िभ न) 3रयायत िनयम, 2016 के उपबंध के अनुसार अनुद9 त कर सकेगी :

पर तु यह और क खनन संंQयाह के दौरान पता चले परमाणु खिनज को परमाणु खिनज के संरण के बारे म5 िवभाग ारा जारी कए गए िनदेश और रेडियोधामता सुर-ा के बारे म5 बोड' ारा जारी कए गए िनदेश के अनुसार संभाला जाएगा और उनका म ययन कया जाएगा ।

अनुसूची खम5 िविनAदह ट सिरयम के अनुएप तैयार क गई पूवग-ण 3रपोट'क िनयम 4 के उपिनयम (5) के उपबंध के अनुसार परी-ा कए जाने पर उपदशत होता है क परमाणु खिनज का ेड ारंभिक मू'य से कम है, वहां राज्‍य सरकार उस े4 पर कोई खिनज 3रयायत, अधिनयम क धारा 10ख या धारा 11 या धारा 17क और धारा 13 के अधीन बनाए गए खिनज (खिनज अंतव'Z तु का सा; य) िनयम, 2015, खिनज (नीलामी) िनयम, 2015, खिनज (सरकारी कंपनी ारा खनन) िनयम, 2015 और खिनज (परमाणु और हाइड्रोकार्बन ऊजा' खिनज से िभ न) 3रयायत िनयम, 2016 िनयम भी हC, के उपबंध के अनुसार अनुद9 त कर सकेगी :

पर तु खनन संंQयाह के दौरान िनकाले गए परमाणु खिनज को परमाणु खिनज के संरण के बारे म5 िवभाग ारा जारी कए गए िनदेश और रेडियोधामता सुर-ा के बारे म5 बोड' ारा जारी कए गए िनदेश के अनुसार संभाला जाएगा और उनका म ययन कया जाएगा ।

धीन या िनयं/णाधीन िनगम 0ारा खनन—(1) रा् य सरकार ारा िनयम 5 के उपिनयम (1) के खंड (ख) के अधीन <कए गए अनुरोध के उ9 तर म5, िवभाग रा् य सरकार को पूवG-ण पाटेदार क उस -े4 म5 परमाणु खिनज के -ेड के ारंभिक मू य के बराबर होने या उससे अधिक होने के बारे म5 पुिB के साथ, संसूचना देगा ।

(2) उपिनयम (1) म5 िनAदn ट संसूचना को धारा 5 क उपधारा (2) के खंड (ख) के योजन के िलए उस -े4 म5 परमाणु खिनज के िलए खिनज अंतवZ तुh क िवwमानता को दaशत करने हेतु साi य माना जाएगा और ऐसी संसूचना को एक ित पूवG-ण पाटेदार को भी भेजी जाएगी ।

(3) उपिनयम (1) और उपिनयम (2) म5 अंतavन ट <कसी बात के होते ए भी, िवभाग यूरेिनयम और थो3रयम, िजसम5 खिनज ह, क दशा म5 -े4 और िन-ेप-िविनAदn ट ारंभिक मू य को अित3रF त EP म5 अधिसूचित करने के िलए अपने अधिकार को, जहां-कहS अपेि-त हो, आरि-त रखता है और के िय सरकार म5 के खान मं4ालय और संबंधित रा् य सरकार को, िवभाग ारा िविनAदn ट िनबंधन और शतW के अधीन रहते ए, परमाणु खिनज से सहयोिजत एक या अधिक िवwमान िविनAदn ट खिनज के िलए खनन पाTा अनुद9 त करने के िलए ाधिकृत करता है ।

(4) पूवG-ण पाटेदार, उपिनयम (2) के अधीन संसूचना क ित ाr त होने से दो मास के भीतर, रा् य सरकार को, िवभाग ारा िविनAदn ट EP म5 खनन पाTा अनुद9 त <कए जाने के िलए एक आवेदन, दस हजार xपे ित <कलोमीटर क आवेदन फस के साथ, Z तुत करेगा ।

(5) रा् य सरकार, उपिनयम (4) के अधीन सX यक् EP से भरे गए आवेदन क ाि. के नb बे <दन के भीतर पूवG-ण पाटेदार को खनन पाTा अनुद9 त <कए जाने के िलए संबंधित सरकारी अभिकरण के यथा अपेि-त अनुमो<दत खनन योजना और अ य आवे यक अनापि माणप4 Z तुत करने क संसूचना देगा :

पर तु पूवG-ण पाटेदार के सवािम9 वाधीन न आने वाली ाइवेट भूमिय के िलए, जो रा् य सरकार ारा िनयम 5 के उपिनयम (1) के खंड (क) के अधीन सीमांकत -े4 के भीतर उपलb ध हC, रा् य सरकार उपिनयम (5) के अधीन आदेश जारी करने के दौरान संबंधित ाइवेट भू Z वािमिय क सहमित Z तुत करने या भू-Z थल संबंधी या वैसे ही अधिकार आ<द अभार त करने के िलए बल नहS देगी :

पर तु यह और <क रा् य सरकार पूवG-ण पाटेदार से इस बात का एक “वचनबंध” या “शपथप4”, िजसम5 यह कथन हो <क ाइवेट भू-Z वामी क सहमित या भू-Z थल संबंधी अधिकार अभार त कर िलए जाएंगे और उ ह5 QमबY रीित म5 रा् य सरकार क, खनन के िलए ाइवेट भूमिम5 वेश करने के पूव, Z तुत कर <दया जाएगा, अभार त करेगी और ऐसी ाइवेट भूमिय पर, जो पाटेदार के Z वािमि9 वाधीन नहS हC, सहमित या Z थल संबंधी अधिकार ाr त <कए िबना, कोई खनन काय नहS <कया जाएगा ।

¹HkKx Iiμ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vIk/kj.k

5

(6) रा् य सरकार से उपिनयम (5) के अधीन ऐसी संसूचना ाr त होने पर, पूवG-ण पाटेदार—

(क) अo याय 4 के उपबंध के अनुसार एक खनन योजना तैयार करेगा और उसे धारा 5 क उपधारा (2) के खंड (ख) के अधीन िनदेशालय के अनुमोदनाथ' उपिनयम (5) के अधीन रा् य सरकार ारा संसूचना के जारी <कए जाने क तारीख

से बारह मास क अविध के भीतर Z तुत करेगा :

(ख) अनुसूची गम5 िविनAदn ट EP के अनुसार बCक गारंटी के EP म5 या ितभूित िन-ेप के EP म5

ाF किलत संसाधन के मू य के 0.50 तिशत के बराबर रािश क एक काय'पालन ितभूित उपलb ध कराएगा, िजस

काय'पालन ितभूित का रा् य सरकार ारा खान िवकास और उ9 पादन करार तथा खनन पाTा िवलेख के िनबंधन और

शतW के अनुसार अवलंब िलया जा सकेगा;

(ग) काय'पालन ितभूित को ित पांच वर्ष' म5 समायोिजत <कया जाएगा िजससे <क वह ाF किलत संसाधन के पुनः

िंधा'3रत मू य के 0.50 ितशत के त9 समान बनी रहे;

(घ) संबंधित सरकारी ाधिका3रय से अनुमोदन या अनुkाप4 या िनरा-ेप या वैसे ही माणप4 अभार त करेगा जो खनन सं<Qयाएं ारंभ करने क लागू िविधय के अधीन अपेि-त ह;

(ङ) इस उपिनयम के खंड (क), खंड (ख), खंड (ग) और खंड (घ) म5 िविनAदn ट शतW के अनुपालन के पे चात् के िय सरकार

ारा िविनAदn ट EP के अनुसार रा् य सरकार के साथ खान िवकास और उ9 पादन करार पर हZ ता-र करेगा; और

(च) ऐसी अ य शतW को पूरा करेगा जो रा् य सरकार ारा िवभाग के पूव' अनुमोदन से िविनAदn ट क जाएं ।

(7) पूर्वG-ण पाटेदार, उपिनयम (6) म5 िविनAदn ट शतW को पूरा <कए जाने के समथन म5 दZ तावेज Z तुत करेगा और राज् य

सरकार, ऐसे दZ तावेज क ाि. के नb बे <दन के भीतर पूर्वG-ण पाटेदार को खनन पाटा अनुद9 त करने संबंधी आदेश जारी करेगी।

(8) पूर्वG-ण पाटेदार उपिनयम (7) म5 पाटा अनुद9 त करने के आदेश क ाि. के नb बे <दन के भीतर खनन पाटा िनn पा<दत करेगा

और य<द ऐसी कोई िवलेख पूर्वG-ण पाटेदार क ओर से कोई m यितQम <कए जाने के कारण उF त अविध के भीतर िनn पा<दत नहS क जाती

है तो राज् य सरकार पाटा अनुद9 त <कए जाने संबंधी आदेश को ितसंत कर सकेगी और उस दशा म5 उपिनयम (4) के अधीन संद9 त फस

राज् य सरकार को समपसत हो जाएगी।

(9) खनन पाटा िनX नलिखत शतW के अधीन होगा, अथात्:—

(क) अनुसूची घम5 िविनAदn ट िवधान म5 होगा;

(ख) ऐसे खनन पाटे का -े4 वही होगा जो राज् य सरकार ारा िनयम 5 के उपिनयम (1) के खंड (क) म5 िविनAदn ट <कया

गया है और राज् य सरकार ारा उस -े4 म5 कोई प3रवतन िवभाग के पूर्व अनुमोदन के िबना नहS <कया जाएगा:

पर तु परमाणु खिनज के िवकास के िहत म5 सरकारी कंपनी या िनगम एक या अधिक परमाणु खिनज के

संबंध म5 ऐसे एक या अधिक खनन पाटे, िजिनम5 धारा 6 क उपधारा (1) के खंड (ख) म5 िविनAदn ट -े4 से अधिक -े4

आता है, य<द िवभाग ारा ऐसा अनुक्ात <कया जाए, अाजत कर सकेगा;

(ग) य<द ारंभिक मू य के बराबर या उससे अधिक -ेड म5 के परमाणु खिनज, अ य खिनज के सहयोजन म5, िवमान हC,

तो ऐसे सभी खिनज के िलए, िजिनके अंतगत परमाणु खिनज भी हC, खनन पाटा उसी पाटेदार को अनुद9 त <कया

जाएगा।

(10) उस अविध के, िजसके िलए खनन पाटा अनुद9 त <कया जाता है, ारंभ क तारीख वह तारीख होगी िजसको सX यक् Eप से

िनन पा<दत खनन पाटा रिजZ िकृत <कया जाता है।

(11) इन िनयम के अधीन अनुद9 त सभी खनन पाटे तब तक क अविध के िलए अनुद9 त <कए जाएंगे जब तक <क खान म5 ऐसे

खिनज क संपूर्ण आरि-ितयां समात् त नहS हो जाती हC:

पर तु इन िनयम के वृ9 त होने क तारीख को <कसी सरकारी कंपनी को िविहत पदाथW के, िजिनके अंतगत यूरेिनयम या थो3रयम भी है, उ9 खनन के िलए अनुद9 त <कया गया कोई खनन पाटा िवमान है तो उसके बारे म5 यह समझा जाएगा <क वह तब तक <क

अविध के िलए अनुद9 त <कया गया है जब तक <क खान म5 ऐसे खिनज क संपूर्ण आरि-ितयां समात् त नहS हो जाती हC।

(12) राज् य सरकार <कसी सरकारी कंपनी या सरकार के Z वािम9 वाधीन या िनयं4णाधीन िनगम को अनुद9 त <कसी िवमान

खनन पाटा -े4 म5 पाए गए <क हS नए खिनज को सिXमिलत नहS करेगी:

पर तु नए खिनज को ऐसे सिXमिलत <कए जाने के िलए, पाटेदार संबंधित राज् य सरकार के माo यम से िवभाग से अनुक्ा

अिभाप् त करेगा और िवभाग से अनुक्ा ात् होने के प< चात् खनन योजना को, िजसके अंतगत नए खिनज भी हC, उपांत3रत करेगा और

निदेशालय का अनुमोदन लेगा:

पर तु यह और <क जहां <कसी खनन पाटे के अनुद9 त <कए जाने के प< चात् <कसी -े4 म5 एक या अधिक खिनज पाए जाते हC और

ऐसे खनिज को खनन पट्टे म 5 सिखमिलत <कया जाता है या कोई पृथक् खनन पट्टा अनुद 9 त <कया जाता है, वहां सभी खनिज के लिए पट्टे क

अविधियां उस अविध को, जिस तक थम पट्टा मूल Eप से अनुद 9 त <कया गया था, एक साथ समाप्त हो जाएंगी।

7. खनिज रयायत के धारकों द्वारा परमाणु खनिज का पता लगाया

13 के अधीन बनाए गए नियम के अनुसरण म 5 अनुद 9 त क गई है, धारक को <कसी परमाणु खनिज का पता चलता है, तो वह ऐसे पता चलने के 3रपोट निदेशालय तथा राज् य सरकार को उस Eप म 5 देगा जो विभाग द्वारा विहित <कया जाए।

(2) निदेशालय, उपनियम (1) के अधीन 3रपोट का। पर, 3रयायत - 4 म 5 के परमाणु खनिज के डेड क ारंभिक मू य से

तुलना करेगा और —

(क) य<द परमाणु खनिज का डेड ारंभिक मू य से कम है तो खनिज 3रयायत म 5 उसक सं<Qयाएं जारी रखी जा सक 5गी;

या

(ख) य<द परमाणु खनिज का डेड ारंभिक मू य के बराबर या उससे अधिक है तो, —

(i) भूमी-ण अनुक्ा क दशा म 5, जो 12 जनवरी, 2015 के पूर्व अनुद 9 त क गई थी, ऐसी भूमी-ण अनुक्ा का

धारक पूर्वG-ण अनुक्ि. और त 9 पे चात् खनन पट्टा ार त करने का उस दशा म 5 पा 4 होगाय<द वह कोई

सरकारी कंपनी या विभाग द्वारा अनुमो<दत कोई निगम है;

(ii) पूर्वG-ण अनुक्ि. क दशा म 5, जिसके अंतगत धारा 10क के अधीन पूर्वG-ण अनुक्ि.-सह-खनन पट्टा भी है,

ऐसी पूर्वG-ण अनुक्ि. का धारक खनन पट्टा उस दशा म 5 ार त करने का पा 4 होगा य<द वह कोई सरकारी

कंपनी या विभाग द्वारा अनुमो<दत कोई निगम है;

(iii) खनन पट्टे क दशा म 5, पट्टेदार उस विविध ट खनिज के लिए जिसके लिए खनन पट्टा विभाग के पूर्व अनुमोदन

से अनुद 9 त <कया गया था, खनन जारी रखेगा और विभाग द्वारा इनकार <कए जाने क दशा म 5 खनन पट्टा

राज् य सरकार द्वारा, जैसे ही राज् य सरकार को इस आशय क सूचना मिलती है, समाप्त कर <दया जाएगा :

पर तु खनन सं<Qयाह के दौरान पता चले परमाणु खनिज को परमाणु खनिज के संरण के बारे म 5 विभाग द्वारा जारी <कए गए निदेश और रेडियोधर्मा मता सुर-ा के बारे म 5 बोड द्वारा जारी <कए गए निदेश के अनुसार संभाला जाएगा और उनका म यन <कया

जाएगा:

पर तु यह और <क य<द राज् य सरकार भूमी-ण अनुक्ा या पूर्वG-ण अनुक्ि. समाप्त कर देती है या य<द राज् य सरकार खनन पट्टा

विभाग द्वारा इनकार <कए जाने के आधार पर समाप्त कर देती है तो राज् य सरकार, यथािथित, भूमी-ण अनुक्ा या पूर्वG-ण अनुक्ि. या

खनन पट्टे के धारक को ऐसी रािश का, जैसी उसक राय म 5, यथािथित, ऐसे भूमी-ण या पूर्वG-ण या खनन सं<Qयाह पर उपगत म यय के

उचित ाफ कलन को दशाती हो, संदाय करेगा।

(3) य<द निदेशालय उपनियम (1) के अधीन 2 तुत क गई 3रपोट को उपनियम (2) के अधीन अवधारण करने के लिए अपयाप्त

पाता है, तो वह खनिज 3रयायत के धारक से अति3रफ त जानकारी क ई सा कर सकेगा या खनिज 3रयायत के धारक को खोज जारी रखने का निदेश दे सकेगा और ऐसे अति3रफ त डाटा के बारे म 5, जो निदेशालय द्वारा विविध ट <कया जाए, निन कष 2 तुत करने का निदेश दे

सकेगा।

(4) उपिनयम (3) म५ िनAदn ट ऐसे िनn कष' और डाटा ाr त होने पर, िनदेशालय उपिनयम (2) म५ यथा िविनAदn ट कार'वाई

करेगा ।

¹Hkkx Πμ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

7

अयाय 3

परमाणु खिनज& के िलए खिनज योजना

8. खनन योजना—(1) िनयम 6 के उपिनयम (7) के अधीन अनुद <कसी खनन पTे के संबंध म५ कोई खनन सं<Qयाएं ऐसी खनन

योजना के अनुसार, जो िनदेशालय ारा अधिनयम क धारा5 क उपधारा (2) के खंड (ख) के अनुसरण म५ अनुमो<दत क गई है, ही करेगा, अयथा नहS ।

(2) य<द िनयम 6 के उपिनयम (7) के अधीन अनुद कोई खनन पTा परमाणु खिनज से िभRा खिनज के िलए भी है, तो पTेदार खनन पTे म५ िविनAदB् सभी खिनज के िलए, िजनके अंतगत परमाणु खिनज भी हC, एक समे<कत खनन योजना तैयार करेगा और

ऐसे <कसी मामले म५, समे<कत खनन योजना केवल िनदेशालय ारा धारा 5 क उपधारा (2) के खंड (ख) के अनुसरण म५ अनुमो<दत क जाएगी ।

(3) समे<कत खनन योजना अनुमोदन के िलए, िनदेशालय के िनदेशक को उस -े4 के, िजस पर पTे के िलए आवेदन <कया गया है

आनुपातिक आधार पर एक हजार xपए ित वग' <कलोमीटर क अितदेय फस के साथ Zतुत क जाएगी ।

(4) िनदेशालय, खनन योजना के अनुमोदन संबंधी आवेदन का िनपटारा सXयक् EP से भरे गए आवेदन क ाि. क तारीख से

नbबे <दन क अविध के भीतर करेगा :

परतु य<द िनदेशालय आवेदन को अपूण' पाता है और <कसी उपांतरण क अपे-ा करता है तो ऊपरवणत अविध क संगणना उस तारीख से क जाएगी िजसको पूरा भरा गया आवेदन पुनः Zतुत <कया जाता है ।

(5) खनन योजना म५ िन#िलिखत अंतavन ट होगा,—

- (i) पTाधृत -े4 क योजना िजससे खिनज िनकाय क कृित और िवZ तार दाशत होता हो;
- (ii) -े4 के भू-गभ्य और Zतरीय bयौरे, िजनके अंतगत -े4 क खिनज आरि-ितयां भी हC,
- (iii) हZतसाधित खनन या मशीनरी और यांिक युिय के योग ारा खनन क सीमा;
- (iv) उस -े4 क योजना, िजसम५ ाकृतिक जल मागW, आरि-ितय और अय वय -े4 और वृ- क सघनता, य<द कोई हो, वन पर खनन <Qयाकलाप के भाव के िनधारण, भू-सतह को दाशत <कया गया हो और पयावरण, िजसके अंतगत

वायु और जल दूषण भी है, वन रोपण भूमि उयार, दूषण िनयं4ण युियके योग और ऐसे अय उपायारा,

जिह५ िवभाग या राज्य सरकार ारा समय-समय पर िनAदB <कया जाए, -े4 को पुनः Zथापित करने क Z कम के

bयौरे;

- (v) खनन क एक अर्नितम Zकम और पांच वष' के िलए वषानुवष' उ9खनन का वाषक काय'Qम और योजना;
- (vi) राज्य सरकार से िमत -े4 या आबं3टत -े4 जो भू-कर मानिच4 म५ िचिहत हो;
- (vii) धारा 18 के अधीन बनाए गए खिनज संरण और िवकास िनयम, 1988 म५ यथा उपबंिधतगामी खान बंदीकरण योजना; और
- (viii) ऐसा कोई अय िवषय, िजसका िनदेशालय खनन योजना म५ उपबंध करने क अपे-ा करे ।

(6) खनन योजना िनदेशालय ारा उपबंधित EP के अनुसार बनाई जाएगी ।

(7) खनन योजना को एक बार अनुमो<दत कर <दए जाने पर, उसका सXयक् EP से िनnपा<दत खनन पTा िवलेख के रिजZीकरण

क तारीख से ारंभ होने वाले 9येक पांच वष' के अंतराल पर पुनःवलोकन<कया जाएगा और उसे अवतन बनाया जाएगा:

परंतु खनन योजना म5 के <कसी उपांतरण का खनन योजना के अनुमोदन से संबंधित इस िनयम म5 िविनAदB <Qया के अनुसार

िनिदेशालय ारा अनुमोदन <कया जाएगा और उपांतरण खनन योजना का ऐसा अनुमोदन अगलेपांच वर्ष क अविध तक िविधमाय बना रहेगा ।

(8) पाटेदार, उपिनयम (7) म5 िविनAदB 9येक पांच वर्ष के अवसान के एक सौ अZसी <दन पूव, अगले पांच वर्ष क अविध के

लिए खनन सं<Qयाएं करने हेतु एक खनन योजनाZतुत करेगा ।

(9) खनन पाटे का धारक अनुमो<दत खनन योजना म5, कारबार के वातावरण म5 के प3रवतन को ा यान म5 रखते ए या सुरि-त

और वैकानिक EP से खनन, खिनज के संर-ण के िहत म5, पयावरण क संर-ा, उ9पादन म5 वृि, पाटा -े4 म5 वृि या कमी के लिए,

संीकरण क <Qया म5 ए भारी प3रवतन के कारण या <कसी अय कारण से, जो खनन पाटे के धारक ारा िलिखत म5 िविनAदB <कया

जाए, ऐसे उपांतरण क ईसा कर सकेगा जो समीचीन समझे जाए और खनन योजना म5 के <कसी उपांतरण का िनिदेशालय ारा अनुमोदन

<कया जाएगा ।

9. खनन योजना का तैयार ,कया जाना—(1) धारा 5 क उपधारा (2) के खंड (ख) के अधीन 9येक खनन योजना ऐसे <कसी

Nि ारा तैयार क जाएगी िजसके पास िनलिखत अहताएं और अनुभव होअथात्:—

(क) <कसी कीय अधिनयम, ांतीय अधिनयम याराज्य अधिनयम ारा या उसके अधीन Zथापित या िनिगमित <कसी

िवे विव्ालय से, िजसके अंतगत िविव्ालय अनुदान आयोग अधिनयम, 1956 (1956 का 3) क धारा 4 के

अधीन िवे विव्ालय अनुदान आयोग ारा मायता. कोई संZथान भी हC, खनन इंजीिनयरी म5 िड_ी या भू-िव्ान

म5 Z नातकोर क िड_ी या भारत के बाहर <कसी िविव्ालय या संZथा से और के िय सरकार ारा मायता.

कोई समतुय अहता; और

(ख) िड_ी अिभा. करने के प्ात् खनन के -े4 म5 पयवे-णीय हैिसयत म5 काय करने का पांच वर्ष का वृिक अनुभव ।

(2) खनन योजना म5 उपांतरण खनन योजना तैयार करने के लिए आहत Nि ारा <कए जाएंगे ।

(3) पाटेदार यह सुनिित करेगा <क खनन योजना िनिदेशालय ारा इस संबंध म5 िविनAदn टEपिवधानके अनुसार तैयार क

जाए ।

अयाय 4

खनन प.े के िनबंधन और शत8

शत8—(1) राज् सरकार ारा अनुद 9येक खनन पाटा िनिXलिखत शतW के अयधीन होगाअथात्:—

(क) पाटेदार सभी समय अधिनयम, िनयम और सभी अय िविधयके उपबंध का, िजनके अंतगत परमाणु ऊजा

अधिनयम, 1962 (1962 का 33) भी है, अनुपालन करेगा;

(ख) पाटेदार सरकार और िवभाग को पाटा -े4 म5 पाए गए ऐसे <कसी खिनज का, जो पाटे म5 िविनAदB न हो, पता चलने के

साठ <दन के भीतरउसकिलिखत म5 3रपोट देगा;

(ग) य<द ऐसे <कसी खिनज का, जो पाटे म5 िविनAदB नहS है, पाटाधृत -े4 म5 पता चलता है, तो पाटेदार ऐसे खिनज को तब

तक खान से नहS िनकालेगा और उसका Nयन नहS करेगाजब तक <क ऐसे खिनज को पाटे म5 सिXमिलत नहS कर <दया

जाता है या उसके लिए एक पृथक् पट्टा अिभा. नहस कर लिया जाता है;

(घ) पट्टेदार, पट्टे के थम वग' के िसवाय, 9येक वष' के िलए अधिनयम क तृतीय अनुसूची म5 िविनAदB दर पर ऐसे

अिनवाय'भाटक को संदाय करेगा और यद पट्टे म5 उसी -े4 म5 एक से अधिक खिनज को खिनत करने क अनुकूा दी

गई हो तो रा्ज सरकार ऐसे खिनज के संबंध म5 पृथक् अिनवाय' भाटक भाउरत नहस करेगी:

परतुपट्टेदार—

(i) सभी खिनज के संबंध म5 सकल ZवािमZ व का; या

(ii) उतम मूय के खिनज के िलए अिनवाय' भाटक का, इनम5 से जो भी उतर हो, संदाय करने के िलए दायी होगा;

(ङ) पट्टेदार, उसके ारा खनन सं<Qयाह के योजन के िलए यु भू-Zथल -े4 के िलए भू-Zथल भाटक और जल रेट का ऐसी दर पर, जो भू-राजZव से अधिक न हो, और भूमि पर िनधा'य' ऐसेउपकर का भी, जो रा्ज सरकार ारा पट्टे म5

िविनAदB <कए जाएं, संदाय करेगा;

¹Hkkx IIµ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

9

(च) पट्टेदार खनन सं<Qयाएं, खनन पट्टा िवलेख के िनपादन क तारीख से दो वष' के भीतर, ारंभ करेगा और त9पुात्

ऐसी सं<Qयाएं समुचित, कौशलपूण' EP से और कुशलता से करेगा ।

पीकरण—इस खंड के योजन के िलए, “खनन सं<Qयाह” के अंतगत खान को खिनत करने के संबंध म5 मशीनरी का

पउरिनमाण, ामपथ िबछाना या <कसीसड़क का िनमाण भी आता है;

(छ) अधिनयम, िनयम और <कसी अय िविध के उपबंध के अधीन रहते ए, पट्टेदार को, उसे पट्टे पर दी गई भूमि के

संबंध म5, उस भूमि पर खनन सं<Qयाह के योजन के िलए—

(i) खान म5 खिनत काय' करने और खनन सं<Qयाएं करने,

(ii) गूँ और कूपक को दबाने और भवन तथा सड़क का िनमाण करने;

(iii) संयं4 और मशीनरी का पउरिनमाण करने;

(iv) भवन और सड़क सामि_य को खोदने और अिभा. करने तथा णट बनाने;

(v) जल का योग करने तथा काँ लेने;

(vi) चट्टा लगाने के योजन के िलए भूमि का उपयोग करने;

(vii) ऐसी कोई अय चीज़, जो पट्टे म5 िविनAदB हो, करने,

का अधिकार होगा;

(ज) पट्टेदार, अपने Z वयं के खचW पर, ऐसे सीमा िचन और Z तंभ का, जो पट्टे से उपाब्य खनन योजना म5 दशाए गए

सीमांकन को उपदाशत करने के िलए आवेक ह, पउरिनमाण करेगा और उ ह5 सभी समय पर अनुरि-त और अछी

मरX मत क दशा म5 बनाए रखेगा ।

(झ) पट्टेदारसीमा Z तंभ का िनमाण और उ ह5 िन X निलिखत EP म5 बनाए रखेगा:—

(क) पट्टा -े4 के 9येक <कनारे म5 एक सीमा Zतंभ (<कनारे का Zतंभ) होगा;

(ख) <कनारे के Zतंभ के बीच अंतव'त; सीमा Zतंभ का इस कार पउरिनमाण <कया जाएगा <क 9येक Zतंभ

उसके <कसी भी ओर अविZथत सामीत्य Z तंभ से द्िBगोचर हो;

(ग) दो सामीत्य Zतंभ के बीच का अंतर पचास मीटर से अधिक का नहस होगा;

(घ) Z तंभ सतह के ऊपर िपरामिड िछ नक आकार के और सतह के नीचे घनाभ (F यूबोइड) आकार के हगे;

(ङ) 9येक Zतंभ, पुनःबिलत सीम5ट कंQट का होगा;

- (च) <कनारे के Zतंभ का आधार 0.30 मीटर x 0.30 मीटर का तथा ऊंचाई 1.30 मीटर क होगी, िजसम 0.70 मीटर भू-Zथल से ऊपर और 0.60 भू-Z थल के नीचे हो;
- (छ) म० यवत} Z तंभ का आधार 0.25 मीटर x 0.25 मीटर का होगा और ऊंचाई 1.0 मीटर होगी िजसम 0.70 मीटर भू-Z थल से ऊपर और 0.30 मीटर भू-Z थल के नीचे हो;
- (ज) सभी Zतंभ को पीले रंग से प5ट<कयाजाएगा और उनके ऊपरी दस स5टीमीटर को लाल रंग से इनेमल प5ट ारा प5ट <कया जाएगा और सीम5ट कंQट से दरार को भरा जाएगा;
- (झ) <कनारे के सभी Zतंभ पर, आगे और पीछे के Zतंभ क दूरी तथा अ-ांश और रेखांश कोिचिहत <कया जाएगा;
- (ञ) 9येक Zतंभ पर दि-णावत' (दाएं से बाएं) <दशा म5 Qम संत्यांक हगेऔर वह संत्यांक Zतंभ पर उ9कणत <कया जाएगा;
- (ट) Zतंभ का संत्यांक पTे म5 के कुल संत्यांक पर NिBक Zतंभ का संत्यांक होगा;
- (ठ) <कनारेके सभी सीमा Zतंभ के िसरे प ह स5टीमीटर के वगाकार म5 हगे िजस पर दस स5टीमीटर Nास का एक Zथायी गोला प5ट से खSचा जाएगा या उ9कणत <कया जाएगा और वाZतिवक सीमा ँबदु न० बे िड_ी पर खSचा गया दो Nासीय काट_बदु होगा;
- (ड) पTा सीमा सवG-ण, भूल क ऐसी सीमाह के अ०यधीन, सही होगा जो िनदेशालय के िनदेशक ारा इस िनिम िविनAदB क जाएं;
- (ढ) Zतंभ क अविZथित और संत्यांक भू-Zथल म5 और पTेदार ारा बनाई गई अययोजनाह म5 भी दशाया जाएगा; और
- (ण) पTे के भीतर वय -े4 क दशा म5, सीमा Zतंभ का आकार और सिरमाण तथा रंगराज य सरकार के वन िवभाग ारा इस िनिम िविनAदB सिरयम के अनुसार होगा;
- (ज) पTेदार <कसी रेल पथ से पचास मीटर क दूरी के भीतर <कसी ँबदु पर संबंधित रेल क िलिखत अनुका से और उसके अनुसार या <कसी र०माग' या र०माग' ढांचे या Zटेशन के नीचे या तले म5 उस ाधिकारी क, िजसके Zवािम9वाधीन र०माग' है, िलिखत अनुका से और उसके अनुसार या <कसी जलाशय, नहर या अय लोक संकमW अथवा भवन से राज्य सरकार क िलिखत अनुका से और उसके अनुसार कोई खनन सं<Qयाएं करेगा अथवा करने क अनुका देगा, अयथा नहS ।
- करण—इस खंड के योजन के िलिए, रेल, जलाशय या नहर क दशा म5 पचास मीटर क दूरी, यथािZथित, तट के बाहरी िसरे से या कटाव के बाहरी <कनारे से -ैितज आधार पर और <कसी भवन क दशा म5 उसके कुस} -े4 से -ैितज आधार पर मापी जाएगी;
- (ट) पTेदार, ाम सड़क क दशा म5, िजनके अंतगत राजZव अभिलेख म5 ाम सड़क के EP म5 दशाया गया कोई िक भी है, उपायु अथवा कलFटर अथवा राज्य सरकार ारा इस िनिम9 त सXयक् EP से ाधिकृत <कसी अय अधिकारी क पूव अनुका से ही क_टग के बाहरी <कनारे के दस मीटर क दूरी के भीतर कोई काय करने कऔर अयथा ऐसे साधारण अथवा िवशेष िनदेश, िनबंधन और प3रवधन, जो ऐसी अनुका के साथ संल_ ह, के अनुसार ही अनुका देगा, अयथा नहS;
- (ठ) पTेदार, ऐसा शुय और सही लेखा रखेगा िजसम5 खान से अभिा. और ेिषित सभी खिनज क मा4ा और अय

विशिष्टियां, उसमें नियोजित नियमों की संख्या तथा राशीयता और खान की पूरी योजना दशक की गई हो और विभाग या निदेशालय या राज्य सरकार द्वारा इस नियम 9 तः अधिकृत <कसी अधिकारी को <कसी भी समय उसके द्वारा

बनाए रखे गए <कसी लेखा, योजना तथा अभिलेख की परीक्षा करने के लिए अनुकूल करेगा और के वी सरकार या राज्य सरकार को ऐसी जानकारी और विवरणियां प्रस्तुत करेगा जैसी उसके या उसके द्वारा उस नियम 9 तः अधिकृत <कसी अधिकारी द्वारा अपेक्षा की जाए :

पर तुल्यित पदार्थ वाले खनिज की दशा में, ऐसी जानकारी और विवरणियां केवल निदेशालय के निदेशक को प्रस्तुत की जाएंगी;

(ड) पाठेदार, पाठे के अधीन उसके द्वारा की गई खनन संख्या के अनुक्रम में उसके द्वारा बनाई गई समस्त, खाइय, ग

तथा फल के शुद्ध अभिलेख रखेगा तथा उनका निरीक्षण करने के लिए के वी सरकार या राज्य सरकार द्वारा अधिकृत <कसी अधिकारी को अनुकूल करेगा और ऐसे अभिलेख में निम्नलिखित विशिष्टियां अंतर्भाव हगी, अर्थात्:-

(i) अवमृदा और वह प्रत्यक्ष जिसमें खाइयां, गड्ढे या फल गुजरी हः;

(ii) पता चले खनिज के ब्यौरे;

1Hkkx II [k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % v[k/kj.k

11

(iii) ऐसी अथ विशिष्टियां निम्न की वी सरकार या राज्य सरकार समय-समय पर अपेक्षा करे;

(ढ) पाठेदार, यथास्थित, रेल शासन या संबंधित राज्य सरकार के समाधानद एप में, खान के <कसी भाग को, जिसको जिसका राय में <कसी रेल, जलाशय, नहर, सड़क या <कहः अथ लोक संक्रमण या भवन की सुरक्षा के लिए सुदृढ़ बनाना या अवलंब देना अपेक्षित है, सुदृढ़ बनाएगा या उसे अवलंब देगा ।

(ण) पाठेदार, के वी सरकार या राज्य सरकार द्वारा अधिकृत <कसी अधिकारी को पाठे में समाविष्ट <कसी भवन, उखनन या भवन में, उसका निरीक्षण करने के प्रयोजन के लिए वेश करने की अनुमति देगा;

(त) जब कभी खनन कार्य भूमि में कीटःय में या अथ खनिज से सहयु परमाणु खनिज वाले भूमि में कीटःय या - 4 में उपलब्ध तटीय बालू, खनिज निक्षेप या भारी खनिज निक्षेप के लिए <कया जाता है, तो पाठेदार खनिज खनिज की सूची के अभिलेख और ब्यौरे, खनन प्रयुक्त तथा खनन पाठे - 4 के भीतर इन खनिज के भंडारण की अवस्थिति, ऐसे खनिज के टन भार, खनिज विमान, प्रवर्धन खनिज अंतर्गत प्रवर्धन के संबंध में ऐसे खनिज के संरक्षण में संपूर्ण सामग्री संतुलन के ब्यौरे बनाए रखेगा :

पर तृतीय बालू खनिज की दशा में, वाणिज्यिक हित के एक या अधिक भारी खनिज के तटीय बालू खनिज से अधिमानी प्रथारण के प्रणाम प्रवर्धन अथ खनिज और परमाणु खनिज की निम्न अंतर्गत तटीय बालू में रह गया मोनाजाइट भी है, सापेक्ष अंतर्गत प्रवर्धन सवदावृत्ति हो जाएगी और पाठेदार — (i) अपिष्ट तथा खनन और खनिज संशोधन प्रयास के दौरान पैदा ए अपिष्ट की माता के ब्यौरे भी बनाए रखेगा; (ii) भंडारण की अवस्थिति का ब्यौरा योजना और रिजर्वायर में प्रवर्धन से बनाए रखेगा (iii) पाठेदार ऐसी सामग्री का विभाग परमाणु खनिज के संरक्षण के बारे में <दए गए पूर्व अनुमोदन और बोड' द्वारा रेडियोधर्मता सुरक्षा के बारे में जारी <कए गए निदेश के बिना अंतरण या विषय या नियम नहः करेगा;

(थ) पाठेदार नियोजन के मामले में उन जनजातियों और नियमों को अधिमान देगा जो खनन संख्याएं <कए जाने के कारण विवक्षित हो गए हः;

(द) पाठेदार भू-तल के अधिभोगी को ऐसे विकार का संदाय करेगा जो इन नियम के अधीन संदेय हो;

(ध) राज्य सरकार अथवा <कसी पाठेदार अथवा राज्य सरकार द्वारा उस नियम 9 तः अधिकृत <कसी निम्न को —

(i) प्राप्ति भूमि में वेश करने का अधिकार होगा और राज्य सरकार द्वारा अधिकृत <कसी प्रयोजन के लिए उस पर अथवा आर-पार कोई रेल पथ, प्राम पथ, सड़क मार्ग अथवा पाइपलाइन का निर्माण करने का और ऐसे रेल पथ, प्राम पथ, सड़क अथवा <कहः विमान रेल पथ और सड़क को बनाने, उनके अनुरण और मरम्मत के लिए उ भूमि से, प्रथर, गारा, मिट्टी और अथ सामग्री का करने का अधिकार होगा; और

(ii) ऐसे <कहः रेल पथ, प्राम पथ, रोड लाइन और अथ मार्ग के ऊपर से अथवा उसके साथ-साथ, हर समय, घोड़, पशु या अथ जीव-जंतु या ठेल, वैगन, वाहन, सहित या उनके बिना सभी प्रयोजन के लिए गुजरने की अनुमति देगा:

परंतु राज्य सरकार द्वारा अधिकृत ऐसे अथ पाठेदार अथवा निम्न द्वारा ऐसी प्रवर्तता और शि का योग करते ए पाठेदार की प्रवर्तता, शि और विशेषाधिकार में कोई विशेष अवरोध अथवा प्रवर्तता का प्रवर्तन नहः <कया जाएगा और राज्य सरकार द्वारा अधिकृत ऐसे अथ पाठेदार अथवा निम्न द्वारा सारभूत अवरोध अथवा प्रवर्तता

ेप के कारण पाटेदार को काउरत सभी हांन, अथवा, नुकसान के िलए परउपर सहमित के अनुसार अथवा असहमित क िउथित मऱाजुय सरकार के िविनजुय अनुसारउचित ितकर <दया जाएगा;

- (न) पाटेदार धारा 11ख के अधीन बनाए गए <कहऱ अय िनयम के उपबंध का अनुपालन करेगा ।
- (2) खनन पाटे मऱ ऐसी अय शत ं अंतवव क जा सकऱगी जैसी राजुय सरकार ारा िनलिखत के संबंध मऱ आवेयक समझी

जाएं, अथात्:—

- (क) भाटक और उवािमउव के संदाय क समय सीमा, ढंग और उथान;
- (ख) पाटे के अंतगत आने वाली भूमि को ए नुकसान के िलए ितकर;
- (ग) वृ- का िगराया जाना;
- (घ) <कसी ाधिकारी ारा ितिषय <कसी -े4 मऱ सतही संक्याह पर िनबधन;
- (ङ) सतही अधिभोग के िलए पाटेदार ारा सूचना;
- (च) उचित तौल मशीन का उपबंध;
- (छ) आरि-त अथवा संरि-त वन मऱ वेश और काय;
- (ज) गं और कूपक को सुरि-त रखना;
- (झ) दुघटनाह क उरपट करना;
- (ञ) अय प-कार के दाव के ित सरकार क ितपूत;
- (ट) पाटे के अयपण, समाि. अथवा पयवसान पर भूमि और खान के कबजा का पउरदान;
- (ठ) खनन पाटे क समाि. या शी पयवसान या अयपण अथवा पउरयग के प्ात् पाटधृत -े4 से खिनज, अयउक,

संयं4, मशीनरी और अय संपिय को हटाने क समय सीमा;

- (ड) पाटे के पयवसान के प्ात् शेष बची संपि का समपहरण;
- (ढ) युय अथवा आपातकाल क दशा मऱ संयं4, मशीनरी, पउरसर और खान का कबजा लेने क शि;
- (ण) पाटे के अधीन आने वाले -े4 से उभूत िववाद से संबंधित िसिवल वाद अथवा याचिकाह का फाइल <कया जाना ।

(3) राजुय सरकार, िवभाग के पूव अनुमोदन से अथवा िवभाग के कहने पर, ऐसी अितउर शत ं अधरोपित कर सकेगी जैसी परमाणु खिनज या अय खिनज से सहयु परमाणु खिनज वाले -े4 के िवकास के िहत मऱ आवेयक ह ।

(4) यद पाटेदार उपिनयम (1) के खंड (ठ), खंड (ड) या खंड (ण) के अधीन वेश अथवा िनरी-ण करने क अनुका नहऱ देता है

तो राजुय सरकार पाटेदार को िलिखत मऱ सूचना देकर उसे सूचना मऱ यथा िविनAदB समय के भीतर इस बात का कारण बताने क अपेा क

जाएगी <क एय न उसके पाटे का पयवसान कर <दया जाए और यद पाटेदार, राजुय सरकार के समाधानद एप मऱ पूव समय के भीतर कारण बताने मऱ असफल रहता है, तो राजुयसरकार िवभाग क सखय क अनुका से पाटे को पयविसत कर सकेगी ।

(5) यद खनन पाटा धारण करने वाले पाटेदार को अवैध खनन का िस्यदोष ठहराया जाता है तथा <कसी भी यायालय का, <कसी

भी यायालय मऱ ऐसे दोषिसि के िवव्य लंबित अपील मऱऐसी दोषिसि के आदेश के वतन को िनलंबित रखने संबंधी कोई ऐसा अंतउरम

आदेश नहऱ है, तो राजुय सरकार, ऐसी <कहऱ अय कायवाहिय पर, जो अधिनयम अथवा उसके अधीन बनाए गए िनयम के अधीन क जा सकती हऱ, ितकूल भाव डाले िबना ऐसे पाटेदार को सुनवाई का अवसर देने के प्ात् और लेखबय <कए जाने वाले और पाटेदार को

संसूचित <कए जाने वाले कारण से, ऐसे खनन पाटा को िवभाग क सखय क अनुका से पयविसत करने का िवकप अपना सकेगी ।

(6) यद पाटेदार, धारा 9 ारा यथा अपेि-त उवािमउव व का संदाय अथवा धारा 9क ारा यथा अपेि-त अिनवाय भाटक का संदाय अथवा धारा 9ख या धारा 9ग ारा यथा अपेि-त धनरािश के संदाय मऱ कोई ितिQम करता है अथवा इन िनयम मऱ िविनAदB

<कहऱ शतW का भंग करता है, तो राजुय सरकार पाटेदार को सूचना देगी, िजसमऱ सूचना क ािक तारीख से साठ <दन के भीतर,

यथास्थित, ZवािमZव अथवा अिनवाय' भाटक का संदाय करने अथवा भंग का उपचार करने क अपेा करेगी और यद उ अविध के भीतर ZवािमZव या अिनवाय' भाटक का संदाय नहस <कया जाता है अथवा भंग का उपचार नहस <कया जाता है तो रा्ज य सरकार, ऐसी <कहस अय काय'वाहिय पर ितकूल भाव डाले िबनाजो उसके िवxy क जा सकती हC, िवभाग क पूव' अनुका से पाटे का पयवसान कर

सकेगी और काय'पालन ितभूित को पूणतः अथवा भागतः समपसत कर सकेगी ।

¹Hkxkx $\Pi\mu[k.M\ 3(i)^\circ$

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

13

रा्ज सरकार 0ारा परमाणु खिनज& वाले े/& के िलए खनन प.ा अनुद< ,कया जाना—(1) परमाणु खिनज वाले ऐसे <कसी -े4 के िलए िजसके संबंध म5 िनदेशालय ारा ारंभिक मूय के बारे म5 कोई िनधारण नहस <कया गया है, खनन पाटा या पूवG-ण अनुकि.- सह-खनन पाटा अनुद करने क नीलामी <Qया करने के पूव', रा्ज सरकार िनदेशालय को नीलाम <कए जाने वाले Zतावित -े4 क िविशिBय को, भौगोलिक 'उरपोट' और ऐसे अय जानकारी को, जो सुसंगत हो, िविनAदB करते ए एक आवेदन Zतुत करेगी ।

(2) िनदेशालय, आवेदन क ाि. क तारीख से दो मास के भीतर, िनयम 4 के उपिनयम (5) के अनुसरण म5 िनधारण कराएगा और िनयम 4 के उपिनयम (6) म5 िविनAदB <Qया का पालन करेगा ।

मा कारBवाई—(1) खनन पाटा िवलेख के अधीन क बाो यताह या खनन पाटे के िनबंधन और शतW का उलंघन <कए जाने या उह5 पूरा न <कए जाने क दशा म5, रा्ज सरकार के पास िवभाग को संसूचना देते ए, समुचित कार'वाई करने का अधिकार, िजसके अंतगत खनन पाटे का पयवसान करने या खनन पाटे के धारक ारा जमा कराई गई काय'पालन ितभूित क रकम को, पूणतः या भागतः, समपसत करने का अधिकार भी है, आरि-त है :

परतु ऐसा कोई आदेश पाटेदार को अपना प- रखने का युियु अवसर दान <कए िबना नहस <कया जाएगा ।

(2) यद पाटेदार इसके अधीन या पाटा िवलेख के अधीन क अपनी बाोयताह को, उस िनिम िविनAदB समय के भीतर, िनभाने या उनका पालन करने म5 असफल रहता है, तो रा्ज सरकार उनका पालन करवा सकेगी और पाटेदार, रा्ज सरकार को, इस बारे म5 रा्ज सरकार ारा उपगत सभी Nय का, मांग <कए जाने पर, संदाय करेगा और रा्ज सरकार का ऐसे Nय के संबंध म5 िविनय अंतिम होगा ।

(3) यदपाटेदार इसके अधीन या खनन पाटे के अधीन <कहस िनबंधन और शतW को पूरा <कए जाने म5 असफल रहता है, तो के िय सरकार या रा्ज य सरकार का पाटेदार के िवxy, जहां तक ऐसी असफलता सुसंगत सरकार ारा अपउरहाय' घटना से उभुत ई मानी गई हो, कोई दावा नहस होगा या उसे पाटे का भंग नहस समझा जाएगा ।

करण—इस िनयम म5 “अपउरहाय' घटना” पद से अभेत है ऐसा दैवकृत, युy, िवःलव, ब'वा, िसिवल अशांित, हड़ताल, भूकंप, ज्वार, तूफान, ज्वारीय लहर5, बाढ़, तिड़त चालन, िवZफोट, आग, भूकंप और कोई अय घटना िजसे पाटेदार युियु EP से रोक नहस सकता अथवा िनयंित नहस कर सकता है ।

(4) यद पाटेदार इसके अधीन या खनन पाटे के अधीन के <कहस िनबंधन और शतW को पूरा करने म5 अपउरहाय' घटना के कारण कोई िवलंब आ है, तो ऐसे िवलंब क अविध को इन िनयम या खनन पाटे ारा िनयत क गई अविध म5 जोड़ <दया जाएगा ।

अयाय 5

अE यपBण अथवा पयBवसान

पगत होना—(1) इस िनयम के उपबंधके अधीन रहते ए, खनन पाटा उसदशा म5 Nपगत हो जाएगा, जहां <कखनन पाटे के िनपादन क तारीख से दो वष' क अविध के भीतर खनन सं<Qयाएं आरंभ नहस क जाती हC या ऐसी सं<Qयाह के ारंभ होने के प्ात दो वष' क िनरंतर अविध के िलए बंद कर दी जाती हC ।

(2) खनन पाटे के Nपगत होने को रा्ज सरकार ारा जारी <कए गए आदेश के माोयम से लेखब्य <कया जाएगा और उसक संसूचना पाटेदार को भी दी जाएगी ।

(3) जहां कोई पाटेदार खनन पाटे के िनपादन क तारीख से दो वष' क अविध के भीतर खनन सं<Qयाएं ारंभ करने म5असमथ' है या खनन <Qयाह के बंद रहने के कारण उसके िनयं4ण से परे हC, तो वह ऐसी दो वष' क अविध क समाि. से कम से कम तीन मास पूव' उसके कारण को ZपB करते ए रा्ज य सरकार को आवेदन Zतुत कर सकेगा:

परंतु जहां पाटेदार उपयु' िनयत समय के भीतर आवेदन करने म5 असफल रहता है, वहां पाटा दो वष' क अविध क समाि. पर Nपगत हो जाएगा ।

(4) उपिनयम (3) के अधीन <कए गए आवेदन म5 िवZतारपूव'क िन#िलिखत िविनAदB <कया जाएगा,—

(क) ऐसे कारण, िजिनसे पाटेदार के िलए खनन सं<Qयाएं आरंभ करना या ऐसी सं<Qयाएं जारी रखना संभव नहस हो पाया;

(ख) वह रीित, िजससे ऐसे कारण पाटेदार के िनयं4ण से परे हC, और

(ग) वे उपाय, जो ऐसे कारण के भाव को कम करने के िलए पाटेदार ारा <कए गए हC ।

(5) उपिनयम (3) के अधीन 9येक आवेदन के साथ एक लाख xपए क फस संल□ नक जाएगी ।

(6) राज्य सरकार, खनन सं<Qयाह के ारंभ न <कए जाने या उनके बंद होने के कारण क पया'ता और स9यता क परी-ा करने के प्ात्, उपिनयम (3) के अधीन <कए गए आवेदन क ाि. क तारीख से या उस तारीख से, िजसको खनन पTा अयथा m यपगत

हो जाता इनम5 से जो भी पूव'वत; हो, तीन मास क अविध के भीतर ऐसे अनुरोध को मंजूर करने या नामंजूर करने संबंधी आदेश पा3रत करेगी :

परंतु राज्य सरकार के ऐसे आदेश क, िजसम5 यह संसूिचत <कया जाए <क खनन पTा Nपगत नहS आ है, तारीख से छह मास

क अविध क समाि. के पूव' ऐसा, खनन सं<Qयाएं आरंभ करने या उह5 जारी रखने म5 असमथ' रहने पर खनन पTा Nपगत हो जाएगा ।

(7) राज्य सरकार, खनन पTे के Nपगत होने क तारीख से छह मास क अविध के भीतर खनन पTे के धारक ारा <कए गए आवेदन पर और खनन सं<Qयाह के आरंभ न <कए जाने या उनके बंद रहने के कारण क पया'ता और स9यता के बारे म5 यह समाधान होने पर <क यह खनन पTे के धारक के िनयं4ण के बाहर के कारण से आ था, आवेदन क ाि. क तारीख से तीन मास क अविध भीतर खनन पTे को ऐसी भिवनयल-ी या भूतल-ी तारीख से, जो वह उचित समझे, पुनज}िवतकर सकती है क्तु खनन पTे के Nपगत होने क

तारीख के पूव' ऐसा नहS <कया जाएगा :

परंतु कोई भी खनन पTा, खनन पTे क संपूण' अविध के दौरान दो बार से अधिक पुनज}िवत नहS <कया जाएगा ।

(8) उपिनयम (7) के अधीन खनन पTा पुनज}िवत करने हेतु <कए गए आवेदन म5 िवZतारपूव'क िन#िलिखत िविनAदB <कया

जाएगा :

(क) ऐसे कारण, िजिनसे पTेदार के िलए खनन सं<Qयाएं आरंभ करना या ऐसी सं<Qयाएं जारी रखना संभव नहS हो पाया;

(ख) वह रीित िजिसम5 ऐसे कारण पTेदार के िनयं4ण म5 नहS हC, और

(ग) वे उपाय, जो ऐसे कारण के भाव को कम करने के िलए पTेदार ारा <कए गए हC:

परंतु राज्य सरकार आवेदन के संबंध म5 ऐसी अित3र सूचना, दZतावेज या Z पn टीकरण क, िजिनक वह अपे-ा करे, ईrसा कर सकेगी ।

(9) उपिनयम (7) के अधीन 9येक आवेदन के साथ एक लाख xपए क फस संल□ क जाएगी ।

(10) राज्य सरकार को, उखनन पTे के, जो Nपगत हो गया है, पTाधृत -े4 म5 संर-ा9मक, सुधारा9मक और पुनवा'सन संबंधी

उपाय करने के िलए पTेदार क काय'पालन ितभूित को वातत करने का अधिकार होगा ।

(11) पTेदार, राज्य सरकार ारा उस खनन पTे के, जो Nपगत हो गया है, पTाधृत -े4 म5 संर-ा9मक, सुधारा9मक और पुनवा'सन संबंधी उपाय करने के िलए काय'पालन ितभूित से अधिक और उससे ऊपर उपगत<कए गए <कसी खच' का संदाय करेगा ।

,कया जाना—(1) पTेदार, अ' यपण क आशियत तारीख से बाहर कैले□डर मास से अयून क

िलिखत सूचना देने के प्ात्, खनन पTे के सXपूण' -े4 के अ□यपण के िलए आवेदनकर सकेगा और ऐसे आवेदन के साथ अनुमो<दत अंितम

खान बंदी योजना संल□ क जाएगी:

परंतु पTेदार खनन पTेके -े4के एक भाग के अ□यपण के िलए आवेदन केवल उस दशा म5 कर सकता है, य<द पTेदारखनन पTे

क <कहS शतW का पालन करने म5 असमथ' है ।

(2) खनन पTे के -े4 के एक भाग का अभयपण करने क दशा म5, खनन पTे का यूनतम -े4 तदनुसार समा योजित हो जाएगा ।

(3) राज्य सरकार भािगक -े4 का अ' यपण करने क अनुkा िवभाग के पूव' अनुमोदन से देगी ।

(4) राज्य सरकार उपिनयम (1) के अधीन खनन पाटे के अयपण क अनुका उस दशा म5 देगी यद िनलिखत शतW को पूरा

कया जाता है, अथात्:—

(क) पाटेदार ने िनदेशालय के िनदेशक ारा अनुमोदत अितम खान बंदी योजना के Qयावयन, िजसके अंतगत संर-ा9मक,

सुधारा9मक और पुनवा'सन संबंधी काय' भी है, क पुिB करने संबंधी िनदेशालय के िनदेशक का माणप4 Zतुत कर

दया है; और

(ख) खनन पाटे के संबंध म5 सभी शोयरािशियां का िहसाब कर दया गया है ।

(5) खनन पाटे के संपूण' -े4 के अयपण क दशा म5, पाटेदार ारा दी गई काय'पालन ितभूित समपऽत कर ली जाएगी ।

(6) पाटेदार, राज्य सरकार ारा उस खनन पाटे के, िजसे अयपत कर दया गया है, पााधृत -े4 म5 संर-ा9मक, सुधारा9मक और पुनवा'सन के उपाय करने के िलए काय'पालन ितभूित से अधिक और उससे ऊपर उपगत <कसी खच' का संदाय करेगा ।

पयवसान—(1) धारा 4क क उपधारा (1) या इन िनयम के उपबंध के अधीन <कसी खनन पाटे के पयवसान क दशा म5,

राज्य सरकार को उस -े4 म5 संर-ा9मक, सुधारा9मक और पुनवा'सन उपाय करने के िलए पाटेदार क काय'पालन ितभूित वृ9 त कराने का अधिकार होगा ।

(2) पाटेदार, ऐसे खनन पाटे के, जो पयविसत हो गया है, पााधृत -े4म5 संर-ा9मक, सुधारा9मक और पुनवा'सन संबंधी उपाय करने के िलए राज्य सरकार ारा काय'पालन ितभूित से अधिक और उससे ऊपर उपगत <कसी खच' का संदाय करेगा ।

(3) पाटेदार, इसके अधीन अथवा पाा िवलेख के अधीन संदेय भाटक, रेट और ZवािमZव का संदाय करने के प्ात्, पाटे क

अविध के समा' त अथवा पयविसत होने पर या उसके प्ात् छह कैलेडर मास के भीतर, इनम5 से जो भी पूववत; हो, अपने Zवय के फायदे

के िलए, पाा के चालू रहने के दौरान उ9खिनत सभी या <कसी अयZक खिनज, इंजन, मशीनरी, संयं4, भवन, ढांच, ाम, पथ, रेल पथ और अय संकमW, प3रिनमाण और सुविधा को ले सकेगा या हटा सकेगा जो पााधृत भूमिम5 या उस पर पाटेदार ारा प3रिनमत क गई

हो, Zथापित क गई ह या रखी गई ह और िज ह5 पाटेदार, राज्य सरकार को देने के िलए बाय नहS है अथवा िजसे राज्य सरकार Qय करने क वांछा नहS रखती है :

पर तुइस उपिनयम के उपबंध उस दशा म5 लागू नहS हगे यद पाा पाटेदार के मयितQम के कारण पयविसत कर दया जाता है ।

(4) यद पाा, पाटेदार के मयितQम के कारण पयविसत <कया जाता है, तो वह उपिनयम (3) के फायदे का दावा न तो तीन कैल5डर मास के अपूव' और न ही छह कैल5डर मास के अपे चात् <कसी समय करने का हकदार होगा ।

(5) यद पाा अविधक समाि. अथवा पयवसान के छह कC लेडर मास क समाि. पर, पााधृत भूमिम5 या पर कोई अयZक या

खिनज, मशीनरी, संयं4, भवन, ढांच, ाम, पथ, रेल पथ, और अय संकम', प3रिनमतयां और सुविधाएं अथवा ऐसी अय संपि बनी रहती हC िजनक पूवG-ण अनुि. अथवा खनन पाा के अधीन धा3रत <कसी अय भूमिम5 संQयाह के संबंध म5 पाटेदार को आवेयकता नहS है तो यद उ ह5हटाए जाने के िलए राज्य सरकार ारा अधसूचित <कएजाने के एक कैलेडर मास के भीतरपाटेदार ाराउह5 हटाया नहS जाता है तो वह राज्य सरकार क संपि हो गई मान ली जाएगी और उनकाइस संबंध म5 पाटेदार क - ितपूात अथवा िहसाब देने के दािय9व के िबना, िवQय अथवा Nयन ऐसी रीित म5 <कया जा सकेगा जैसी राज्य सरकार उचित समझे ।

अयाय 6

ितकर

आद के वामी को ितकर का संदाय—(1) <कसी खिनज उरयायत का धारक, िजस पर वह उरयायत धारण करता है, उस भूमिम के सतह के अधिभोगी को ऐसे वाषक ितकर का, जो राज्य सरकार ारा, अधसूचना ारा, इस िनिम िनयु

<कसी अधिकारी द्वारा अवधारित <कया जाए, उपिनयम (2) से उपिनयम (6) म5 उपबंधित रीति से संदाय करने के दायि9वधीन होगा।

(2) कृषि भूमि के मामले म5 उपिनयम (1) म5 निम्नलिखित टक्काशक तिकर क रकम क गणना, पूर्ववत्, तीन वर्ष के लिए, उसी कार क भूमि पर खेती से शुल्क वाशक आय के औसत के आधार पर क जाएगी।

(3) गैर-कृषि भूमि के मामले म5 उपिनयम (1) म5 निम्नलिखित टक्काशक तिकर क रकम क गणना, पूर्ववत्, तीन वर्ष के लिए, उसी कार क भूमि के लिए टक्काशक <कराया मूल्य के औसत के आधार पर क जाएगी।

(4) उपिनयम (1) म5 निम्नलिखित टक्काशक तिकर, ऐसी तारीख को या उसके पूर्व संदेय होगा, जो राज्य सरकार इस निम्नलिखित निम्नलिखित ट करे।

(5) खिज 3रयायत का धारक ऐसे तिकर के संदाय के लिए राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित पुनर्वासन और पुनर्निर्माण नीति के उपबंध का <क्यावयन कर सकेगा।

(6) यद ऐसे <कसी नुकसान के लिए, जिसके पते क तत्कालित सं<क्या से उभूत होने क संभावना है, तिकर क कोई Zथापना ा. होने के प्ात, उ भूमि के <कसी भाग के Zथल का अधिभोगी राज्य सरकार को आरित और खनन पते ारा अनुद अधिकार और शि का योग करने के त अपनी सहमित देने से इनकार कर देता है, तो पतेदार उस मामले क 3रपोट राज्य सरकार को देगा और तिकर के EP म5 Zथापित रकम उसके पास जमा कराएगा और यद राज्य सरकार का यह समाधान हो जाता है <क तिकर क रकम युयुहै या यद उसका उस बारे म5 समाधान नहS होता है और पतेदार ऐसी अत3र रकम, जिजतनी राज्य सरकार युयु समझे, उसके पास जमा करा देता है, तो राज्य सरकार अधिभोगी को उ भूमि पर वेश करने और ऐसी सं<क्याएं करने के लिए, जो पते के योजन के लिए आवेयक समझी जाएं, अनुकृत करने का आदेश करेगी।

(7) ऐसे तिकर क रकम का निधारण करने म5, राज्य सरकार भूमि अजन, पुनर्वासन और पुनर्निर्माण म5 उचित तिकर और पारदाशता अधिकार अधिनयम, 2013 (2013 का 30) के उपबंध से मागदाशत होगी।

(8) जब कभी ाइवेट पता भू-वामी पतेदार को अपनी भूमि पर लघु अविध के लिए सतही सं<क्याएं करने के त सहमित देते हC, तो उ लघु अविध के लिए तिकर क रकम क संगणना परZपर करार पाए गए निबंधन और शतW के आधार पर क जाएगी। (9) उपिनयम (8) म5 निम्नलिखित तिकर क रकम का निधारण राज्य सरकार के विवमान नियम के अनुसार या राज्य सरकार ारा नियु अधिकारी ारा <कया जाएगा।

(10) पतेदार ारा संबंधित भू-वामी को तिकर क रकम का संदाय, ाइवेट भूमि पर सहमित के अनुसार लघु अविध के लिए सतही सं<क्याएं करने और सतही सं<क्याएं पूरी होने के प्ात उ ाइवेट भूमि वापस सपने का काय पतेदार और ाइवेट भू-वामी के बीच परZपर करार पाए गए निबंधन और शतW के अनुसार <कया जाएगा।

(11) पतेदार पता भू-वामी क सहमित अभा. <कए िबना सतही सं<क्याएं करने के लिए ाइवेट पता भूमि म5 वेश नहS करेगा।

नुकसान के लिए तिकर का निधारण—(1) खिज 3रयायत के पयवसान के प्ात, राज्य सरकार, यथांशित, भूमि-ण या पूर्व-ण या खनन सं<क्याह ारा भूमि को ए नुकसान का, यद कोई हो, निधारण करेगा और खिज 3रयायत धारक ारा सतही भूमि के अधिभोगी को संदेय तिकर क रकम का अवधारण करेगा।

(2) उपिनयम (1) म5 निम्नलिखित टक्काशक निधारण खिज 3रयायत के पयवसान क तारीख से एक वर्ष क अविध के भीतर <कया जाएगा और वह राज्य सरकार ारा, अधिसूचना ारा, इस निम्न नियु त अधिकारी ारा <कया जाएगा।

अयाय 7

संदाय

फजस और निप कैसे कया जाएगा—अधिनयम अथवा उसके अधीन बनाए गए नियम के अधीन संदेय कोई रकम, नियम 24 के उपिनयम (2) के अधीन पुनरी-ण याचिका और नियम 8 के उपिनयम (3) के अधीन खनन योजना के संबंध म5 संदेय रकम को छोड़कर, ऐसी रीति से संदत क जाएगी जो राज्य सरकार इस निम्न विनिर्दिष्ट करे।

Kयाज का संदाय—राज्य सरकार, अधिनयम अथवा उसके अधीन बनाए गए नियम म5 अंतवB उपबंध पर तिकूल भाव डाले िबना, नियम 23 के उपिनयम (2) और नियम 8 के उपिनयम (3) के अधीन संदेय फस से िभर या अधिनयम अथवा उसके अधीन बनाए गए नियम अथवा <कसी खिज 3रयायत क निबंधन और शतW के अधीन उस सरकार का शोय अय राशि पर ऐसे ZवांमिZव, भाटक, फस अथवा अय राशि के भुगतान के संदाय के लिए उस सरकार ारानियत तारीख क समाि. के साठव5 <दन से और तब तक जब तक <क ऐसे ZवांमिZव, भाटक, फस अथवा अय राशि का संदाय नहS कर <दया जाता है, चौबीस तिशतितवष क दर पर साधारण ब्याज भा3रत कर सकेगी।

$1Hkx \Pi [k.M 3(i)^{\circ}$

$Hkjr dk jkti = k \% vlk/kj.k$

17

खनन पते के अधीन संदाय—(1) पतेदार, राज्य सरकार को अधिनयम क धारा 9 म5 विनिर्दिष्ट रीति म5 ZवांमिZव का और अधिनयम क धारा 9क म5 विनिर्दिष्ट अनवाय भाटक का संदाय करेगा।

(2) पतेदार, पते के थम वर्ष के िसवाय, 9येक वर्ष के लिए अधिनयम क तृतीय अनुसूची म5 विनिर्दिष्ट दर पर टक्काशक अनवाय भाटक का संदाय करेगा और यद पते म5 उसी े4 म5 एक से अधिक खिज को खिनत करना अनुकृत है तो राज्य सरकार 9येक खिज के संबंध म5 पृथक् अनवाय भाटक भा3रत नहS करेगी।

परतु पतेदार —

- (i) सभी खिनज के संबंध मऽ सकल ZवांमिZव का; या
- (ii) उत्तम मूय के खिनज के लिए अनिवार्य भाटक का, इनमऽ से जो भी उत्तर हो, संदाय करने के लिए दायी होगा।

(3) पाटेंदार, खनन संक्या के योजन के लिए उसके द्वारा यु सतही ढे4 के लिए ऐसे सतही भाटक और जल रेट का, ऐसी दर पर, जो भू-राज्य से अधिक न हो, और भूमि पर निधाण' ऐसे उपकर का भी, जो राज्य सरकार द्वारा पाटें मऽ विनिर्दिष्ट कया जाए, संदाय करेगा।

ग के अधीन के संदाय— नियम 20 मऽ विनिर्दिष्ट संदाय के अतिरिक्त, खनन पाटें के धारक से धारा 9ख और धारा 9ग और उससे संबंधित नियम के उपबंध के अनुसार निजला खिनज निष्पन्न और राष्ट्रीय खिनज खोज यास को धन का संदाय करने का अपेक्षा क जाएगी।

न के खिनज & कऽ दशा मा वामि व का भारण—(1) यद खान साधारण के खिनज का संस्करण पाटेंदृत ढे4 के भीतर कया जाता है तो ZवांमिZव पाटेंदृत ढे4 से निकाले गए संस्कृत खिनज पर माय' होगा।

(2) यद खान साधारण के खिनज को पाटेंदृत ढे4 से ऐसे संस्करण संयं4 मऽ ले जाया जाता है जो पाटेंदृत ढे4 के बाहर निश्चित है, तो ZवांमिZव असंस्कृत खान साधारण के खिनज पर भाय' होगा न क संस्कृत उपाद पर।

खिनज & पर मूयानुसार आधार पर वामि व के संदाय कऽ रीति— (1) खान का 9 येक Z वामी, उसका अभिकता, बंधक, कमचारी, सिंविदाकार या उपपाटेंदार खिनज पर Z वामिZ व क उस दशा मऽ जहां ऐसा Z वामिZ व मूल यानुसार आधार पर भाउरत कया जाता है, रकम क संगणना उपनियम(2) के उपबंध के अनुसार करेगा।

(2) अधिनियम क थम अनुसूची के भाग ख मऽ सभी परमाणु खिनज के लिए विभाग द्वारा निभ न निभ न खिनज के लिए राज् यवार यथा कांशित विव्य कमत, उस राज् य मऽ कसी खान मऽ कसी मास के दौरान कसी समय उ9 पादत कसी खिनज के संबंध मऽ Z वामिZ व क संगणना करने संबंधी विव्य कमत होगी और Z वामिZ व क संगणना नीचे दए सू4 के अनुसार क जाएगी :
परमाणु ऊजा विभाग/भारतीयखान क यू 0 द्वारा कांशित खिनज क विव्य कमत (पेडवार और राज् य
(पाटेंदृत ढे/ से हटाई गई) विविश 9 ट पेड के खिनज क कुल मा/ा :

पर तु यद कसी विविश 9 ट खिनज के लिए, कसी राज् य के लिए कसी विविश 9 ट मास क सूचना राज् य सरकार और विभाग द्वारा कांशित नहऽ क जाती है तो राज् य मऽ उस खिनज के लिए उपलब्ध नवीनतम सूचना निर्दिष्ट ट क जाएगी, जिसके न होने पर खिनज के लिए निखल भारतीय नवीनतम सूचना पर विचार कया जाएगा।

अध्याय 8 पुनरीण

24. पुनरीण के लिए आवेदन—(1) ऐसा कोई व्यक्ति जो,—

(क) इस अधिनियम या इन नियम द्वारा या उसके अधीन राज् य सरकार या अय अधिकारी को द9 त शिष का योग करते ए उसके द्वारा परमाणु खिनज उरयायत के विनियमन के संबंध मऽ और उससे संबंधित योजन के लिए पाउरत कसी आदेश से; अथवा

(ख) खंड (क) मऽ कोई विनिर्दिष्ट आदेश उसके लिए विनिर्दिष्ट समय के भीतर पाउरत न करने से, मथित है तो वह उसे आदेश क संसूचना दए जाने क तारीख से तीन मास के भीतर या उस तारीख को, जिसको ऐसा आदेश पाउरत करने क समयाविध क समाप्त हो गई है, विभाग को धारा 30 के अनुसरण मऽ अनुसूची ड.

आवेदन कर सकेगा।

(2) आवेदन के साथ आवेदन फस के EP मऽ कसी अनुसूचित बक पर वेतन एवं लेखा अधिकारी, विभाग, मुंबई को देय दस हजार रुपए का बक फाट संल न होना चाहिए अथवा विभाग के अभिहित बक खाते मऽ बक अंतरण के द्वारा वह फस दी जानी चाहिए:

परंतु कोई ऐसा आवेदन तीन मास क उर त अविध के पे चातु हण कया जा सकेगा यद आवेदक के ीय सरकार का यह समाधान कर देता है क उसके पास समय के भीतर आवेदन न करने का पयाप्त कारण था।

(3) उपनियम (1) के अधीन खिनज उरयायत अनुद9 त करने से इनकार करने संबंधी राज् य सरकार के कसी आदेश के विव्य 9 येक आवेदन मऽ, ऐसे कसी मथि को, जिससे उसी ढे4 या उसके कसी भाग क बाबत खिनज उरयायत अनुद9 त क गई थी, प-कार बनाया जाएगा।

(4) आवेदक, उपनियम (1) के अधीन आवेदन के साथ उसक उतनी नितियां Z तुत करेगा जिसतने उपनियम (3) के अधीन प-कार बनाए गए हऽ।

(5) के ीय सरकार, आवेदन तथा उसक नितय क ां. पर, उपनियम (3) के अधीन प-कार बनाए गए 9 येक प-कार को आवेदन क एक नित, वह तारीख विनिर्दिष्ट करते ए भेजेगी जिसको या जिसके पूर्व वह पुनरीण आवेदन के विव्य अपने अय आवेदन, यद कोई है, कर सकेगा :

पर तुजहां पुनरीण आवेदन इस कारण फाइल कया गया है क राज् य सरकार द्वारा आदेश पाउरत करने के लिए विनिर्दिष्ट समय के भीतर कोई आदेश पाउरत नहऽ कया गया है, वहां के ीय सरकार आदेश पाउरत करने के पूर्व राज् य सरकार को मामले मऽ सुने जाने या अय आवेदन करने का अवसर दान करेगी।

25. पुनरीण आवेदन पर आदेश—(1) नियम 24 के अधीन पुनरी-ण संबंधी आवेदन ार त होने पर उसक ितयां राज सरकार या अ य ाधिकारी को और सभी आल त प-कार को, उनम5 यह मांग करते ए अ_ेष्ठितक जाएंगी <क वे संसूचना के जारी <कए जाने क तारीख से तीन मास के भीतर अपनी 3टर पिणयां, जो वे करना चाहते हC, भेज5और राज सरकार या अ य ाधिकारी और आल त प-कार, के िय सरकार को 3टर पिणयां भेजते समय, 3टर पिणय क एक ित अ य प-कार को भी साथ-साथ पुन ठांकत कर5गे ।

(2) उपिनयम (1) के अधीन <कसी प-कार से ार त 3टर पिणयां अ य प-कार को संसूचना जारी करने क तारीख से एक मास के भीतर ऐसी अित3रF त 3टर पिणयां करने के िलए, जो वे करना चाहे, अ_ेष्ठितक जाएंगी और अित3रF त 3टर पिणयां करने वाले प-कार ऐसी अित3रF त 3टर पिणयां अ य सभी प-कार को अ_ेष्ठितकर5गे ।

(3) उपिनयम (1) और उपिनयम (2) म5 िनAदन ट पुनरी-ण आवेदन 3टर पिणय तथा ित- 3टर पिणय वाली संसूचनाएं मामले का अभिलेख ग3ठत कर5गी ।

(4) के िय सरकार, उपिनयम (3) म5 िनAदन ट अभिलेख पर िवचार करने के पे चात्, आदेश को पुन ट, उपांत3रत या अपाZ त कर सकेगी या उस संबंध म5 ऐसा अ य आदेश पा3रत कर सकेगी, जो के िय सरकार यायसंगत और समुचित समझे ।

(5) के िय सरकार पुनरी-ण संबंधी आवेदन का अंतिम िनपटारा होने तक, पयाF त कारण से, उस आदेश के िन पादन पर, िजसके िवxy कोई पुनरी-ण आवेदन <कया गया है, रोक लगा सकेगी ।

(6) य<द <कसी दशा म5 राज सरकार के आदेश को के िय सरकार ारा इनिनयमके अधीन क कायवािहय के अनुसरण म5 पुनरी-त, पुनअवलो<कत या र कर <दया जाता है, तो पाटेदार पाा िवलेख ारा पाटेदार को द9 त शिय और िवशेषाधिकार का योग करते ए पाटेदार को ई <कसी हािन के िलए ितकर का हकदार नहS होगा ।

आयाय 9

काणB

26. कट /ुटय& को सुधारने का शिX—इस िनयम के अधीन सरकार अथवा <कसी अ याधिकारी अथवा अधिकारी ारा पा3रत <कसी आदेश म5 िलिपकय अथवा अंकगणितीय 4ु3ट तथा संयोगवश कोई भूल अथवा अनवधानता से ई चूक या लोप के कारण उसम5क<कसी 4ु3ट को आदेश क तारीख से दो वष के भीतर, यथािZथित, सरकार, ाधिकारी अथवा अधिकारी ारा संशोधित <कया जाएगा :

'Hkkx ll[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

19

परंतु <कसी m यि पर कोई ितकूल भाव डालने वाला आदेश तब तक पा3रत नहS <कया जाएगा जब तक <क उस m यि को सुनवाई का समुचित अवसर न <दया गया हो ।

27. सरकार को प.& तथा वाYषक िववरणय& का ितयां दान ,कया जाना—(1) इन िनयम के अधीन अनुद9 त 9 येक खनन पाटे क एक ित 9 येक राज सरकार ारा ऐसे अनुदत <कए जाने अथवा नवीकृत <कए जाने के दो मास के भीतर िनदेशालय के िनदेशक तथा महािनदेशक, खान सुर-ा को दान क जाएगी ।

(2) इन िनयम के अधीन अनुद9 त सभी खनन पा क एक समे<कत वाषक िववरणी 9 येक राज सरकार ारा िनदेशालय के िनदेशक तथा महािनदेशक, खान सुर-ा को, उसके ारा यथािविनAदन ट EP म5 उसवष से, िजससे िववरणी संबंधित है, अगले वष जून मास के तीसव5 <दन के अपे चात् दान क जाएगी ।

पते मा परवतBन का सूचना का ,दया जाना—खनन पाटे का धारक परमाणु ऊजा िवभाग और राज सरकार को साठ <दन के भीतर अपने नाम, पते अ य िविशिBय म5 ए <कसी प3रवतन क सूचना अनुसूची च

,कया जाना—जहां <कसी मामले म5, अधिनयम

या इन िनयम के अधीन, के िय सरकार का पूर्वअनुमोदन अपेित है, वहां ऐसे अनुमोदन के िलए आवेदन, राज सरकार के माo यम से, के िय सरकार को <कया जाएगा ।

30. िव^ाYथय& के िशण हेतु सुविधाएं—(1) खान का 9 येक Z वामी, अभिकता अथवा बंधक, िवभाग या के िय सरकार ारा अनुमो<दत, खनन, भू-िवकांन और खिनज संZ करण संZ थान के अनुसंधानकताh या िवwoaथय को अनुसंधान करने अथवा उनके ारा संचालित खान और संयं4 का m यावहा3रक िश-ण अजात करने के िलए अनुका देगा और समZ त आवेक यक सुविधाएं, जो ऐसे िवwoaथय के िश-ण के िलए आवेक यक ह, उपलब्ध कराएगा ।

(2) खनन, भू-िवकांन अथवा खिनज संZ करण िश-ण संZ थान के िवwoaथय से अनुसंधान अथवा िश-ण संबंधी आवेदन को खान के Z वामी, अभिकता या बंधक को धानाचाय या संZ थान के मुख के माo यम से अ_ेष्ठित <कया जाएगा ।

(3) खान के <कसी Z वामी, अभिकता या बंधकारा अनुसंधान या m यावहा3रक िश-ण के िलए सुविधाएं उपलब्ध ध कराने से इनकार <कए जाने के मामले को सिचव, परमाणु ऊजा िवभाग को तीस <दन क अविध के भीतर उसके िविनe चय के िलए िनAदन ट <कया जाएगा ।

कड़े दाय ,कया जाना—(1) यथािZथित, खनन पाटे का धारक या पूर्वG-ण सं<Qयाएं करने वाला कोई m यिपरमाणु खिनज अ वेषण से संबंधित सभी सूचनाएं, जो खोज और खनन सं<Qयाh के दौरान उसके ारा एकित क गई ह, िनदेशालय के िनदेशक को, महािनदेशक, भागीगोलिक सवG-ण को और उस राज सरकार के, िजसम5 खनन सं<Qयाएं क गई ह, भू-िवकांन और खनन िनदेशक को दी जाएगी ।

(2) उपिनयम (1) म5 िनAदn टडाटा अथवा सूचना खनन पTे क कालाविध के ारंभ होने क तारीख से गणना <कए गए 9 येक वष म5 दी जाएगी ।

. रिज टर—इन िनयम के अधीन अनुद9 त खनन पT का रिजT टर राJ य सरकार ारा अनुसूची छ बनाए रखा जाएगा, िजस तक Qमशः परमाणु खिनज के संर-ण को सुनिित करने और रेडियोधामता सुर-ा िविनयम को वातत कराने के योजन के िलए ंच, जब कभी अपेित हो, िनदेशालय, िवभाग और बोड' क होगी ।

प.& का समामेलन—(1) राJ य सरकार, खिनज िवकास के िहत म5, और लेखबY <कए जाने वाले कारण से, <कसी पTेदार ारा धाउरत दो या अधिक पाेवZ थ पT के समामेलन क अनुका दे सकेगी :

पर तु समामेलित पTे क अविध उस पTे के, िजसक अविध पहले समाT त हो जाती है साथ ही समाT त हो जाएगी :

पर तु यह और <क ऐसे समामेलन के िलए िवभाग का पूव' अनुमोदन अभिा त करना होगा ।

(2) इन िनयम के ारंभ पर खनन पT के समामेलन के संबंध म5 लंबित आवेदन का िनपटारा इन िनयम के अनुसार <कया जाएगा ।

34. सतह से नीचे सीमाएं—खनन पTे के अंतगत आने वाले े4 क सीमाएं सतह से नीचे पृ वी के के क ओर नीचे क तरफ उo वाकर EP म5 हगी ।

35. लंबित आवेदन— इन िनयम के ारंभ पर लंबित आवेदन, जो अधिनयम और इन िनयम से असंगत नहS है, का िनपटारा इन िनयम के उपबंध के अनुसार <कया जाएगा ।

36. अनुसूची क का संशोधन करने क िवभाग क शिX—िवभाग, राजप4 म5 अधिसूचना ारा, अनुसूची किविनAदn ट EP म5 संशोधन कर सकेगा, िजससे <क ारंभिक मू य का संशोधन <कया जा सके ।

अयाय 10

शाित

37. दंड— इन िनयम का कोई उ' लंघन ऐसे कारावास से, िजसक अविध दो वष तक क हो सकेगी अथवा जुमाने से, जो पांच लाख xपे तक का हो सकेगा अथवा दोन से और लगातार उ' लंघन <कए जाने क दशा म5, अितउरF त जुमाने से, जो ऐसे 9 येक <दन के िलए, िजसके दौरान ऐसा उ' लंघन ऐसे थम उ' लंघन के िलए िसYदोष ठहराए जाने के पे चात् जारी रहता है, पचास हजार xपे तक हो सकेगा, दंडनीय होगा ।

अनुसूची क

परमाणु खिनज& के िलए ारंभिक मूय क िविशियां
[िनयम 2(1) (ड) और िनयम 36 देखिए]

1.	बेउरल और अय बेउरिलयमधारी खिनज	शैल का 0.1% बीई.ओ(1000 पी.पी.एम. बीईओ) या उ9खिनत साम_ी म5 टन 10 <क. ाI./टन बेउरल
2.	लीथियमधारी खिनज	□ाइन (200 पी.पी.एम. एलआई, अथात् ित टन 200 _ा.एलआई) के िसवाय, अयZक म5 0.5%(5,000 पी.पी.एम.) एल आई_ओ
3.	'दुल'भ मृदा' समूह के खिनज, िजनम5 यूरेिनयम और थोउरयम	अयZक म5 60 पी.पी.एम. यू_ओ_ और/या 250 पी.पी.एम. टीएचओ_
4.	नायोबियमधारी खिनज	अयZक म5 100 पी.पी.एम.(एनबी+टीए)_ओ_(100 _ाI./टन)
5.	फाZफोराइट और अय फाZफेटी अयZक, िजनम5 यूरेिनयम	अयZक म5 60 पी.पी.एम. यू_ओ_
6.	पिचबल_ड और अय यूरेिनयम अयZक	अयZक म5 60 पी.पी.एम. यू_ओ_, िसवाय झारखंड म5 □सहभूम शीयर -े4 म5, जहां <क आरंभिक मूय अयZक म5 150 पी.पी.एम. यू_ओ_होगा
7.	टाइटेिनयमधारी खिनज और अयZक (इ'मेनाइट, xटाइल और िलयोकोFसीन)	कठोर शैल म5 पाए जाने वाले टाइटेिनयमधारी खिनज क दशा म5, शैल म5 60 पी.पी.एम. यू_ओ_ और/या 250 पी.पी.एम. टीएचओ_ बालू-तट खिनज और मोनेज़ाइट से सहयु अय जमा िन-ेप म5 पाए जाने वाले टाइटेिनयमधारी खिनज क दशा म5 कुल भारी खिनज म5 0.75% मोनेज़ाइट
8.	टेटेलमधारी खिनज	अयZक म5 100 पी.पी.एम.(टीए+एनबी)_ओ_(100 _ाI./टन)
9.	यूरेनीफेरस ऐलैनाइट, मोनेज़ाइट और अय थोउरयम खिनज	बालू तट खिनज म5 और अय जमा िन-ेप म5 कुल भारी खिनज म5 60 पी.पी.एम. यू_ओ_ और/या 250 पी.पी.एम. टीएचओ_ और/या 0.75% मोनेज़ाइट
10.	तांबा और Zवण के िनकषण के प्ात् अयZक के बचे ए यूरेिनयमधारी अतिशय टापोनाट और अय	60 पी.पी.एम. यू_ओ_ और/या 250 पी.पी.एम. टीएचओ_

11.	जिकन नियम, जिसमें जिकन सहित खनिज और अयस्क होते हैं।	बालू तट खनिज में मोनेज़ाइट से सहयु पाए जाने वाले जिकन नियम क दशा में, जिसमें जिकन सहित खनिज और अयस्क होते हैं, कुल भारी खनिज में 0.75% मोनेज़ाइट। अयस्क में, जिकन, जिसमें 200 पी. पी. एम. हफिनियम अंतर्भाव है।
-----	---	---

¹Hkx μ[k.M 3(i)°

Hkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

21

अनुसूची ख

परमाणु खनिज के खनिजीकरण के विमानता थापित करने के लिए पैरामीटर

[नियम 4(1), नियम 4(4), नियम 5(1) और नियम 5(2) देखिए]

भूवैज्ञानिक निधारण—भूवैज्ञानिक निधारण का योजन किसी विनिधान अवसर को प्रभाषित करने के दृष्टि से साधनता निधारण के लिए खनिज निधि के खनिजीकरण के पहचान करना, उसके निरंतरता, षालिटी और माता को स्थापित करना है। आथक-मता का मूयंकन साधारणतया आरंभ में यह उपदशत करने वाली उपधारणा द्वारा किया जाता है कि निधि में हित अंतर्भूत है।

भाग-1: स्तरीकरण—(1) किसी खनिज निधि के खोज में आवश्यक स्तर से चार कार्यवाहियां अंतर्भूत होती हैं, अर्थात्, भूमि-ण

सर्वगण (जी4), आंशिक खोज (जी3), साधारण खोज (जी2) और विस्तृत खोज (जी1)। ये संसाधन और अतिरिक्त वगैरह दान करते हैं

जिनसे भूवैज्ञानिक आवासन के ऐसी बढ़ती ई माता की विविधता होती है जिसे संबंधित भूवैज्ञानिक स्तरों में स्तरीकरण द्वारा किया जा सकता है।

(2) उस स्तर का विस्तार, जिसमें खोज की जानी है, स्तरीकरण, उपलब्ध समय और अपेक्षित स्तर के स्तर पर निभर करते हैं, खोज के कार्यवाही को एक अथवा अधिक कार्यवाहियों के साथ मिलाया जा सकता है।

(3) भूमि-ण सर्वगण (जी4) मुखतः स्तरीय भूवैज्ञानिक अध्ययन, स्तरीय भूवैज्ञानिक मानचित्रण, वायु-वाहित और अग्र-प्राप्त, आंशिक स्तरीय निरीक्षण तथा भूवैज्ञानिक अनुमान और बिहवगण के आधार पर वाधत खनिज संभावना संबंधी स्तरीय पहचान करता है। इसका उद्देश्य ऐसे खनिजीकृत स्तरों के पहचान करना है जो निधि के पहचान करने के लिए अतिरिक्त अवेक्षण करने योग्य हैं।

(4) आंशिक खोज (जी3) आशाजनक वाधत खनिज संभावना संबंधी स्तरीय को सीमित करके किसी खनिज निधि के खोज करने के निश्चित स्तर पर है। इसमें उपयोग की गई प्राप्ति हैं, दृष्टांत पहचान, भूवैज्ञानिक मानचित्रण और अग्र-प्राप्ति जैसे भू-भौतिक और भू-रासायनिक अध्ययन। किसी निधि के पहचान करने के लिए नमूना लेने हेतु सीमित चौड़ाई वाले स्थान पर प्रिंटिंग या प्रिंटिंग या प्रिंटिंग, जो कि आगामी खोज के लिए लाय होगा। माता के षालन का अनुमान भूवैज्ञानिक, भू-भौतिक, भू-रासायनिक और भू-तकनीक अवेक्षण के प्रणाली के आधार पर लगाया जाता है।

(5) साधारण खोज (जी2) (सर्वगण) में किसी प्रसिद्ध निधि के आंशिक सीमांकन अंतर्भूत होता है। इसमें प्राप्ति में सतह मानचित्रण, प्रिंटिंग या प्रिंटिंग या प्रिंटिंग जिसके बाद खनिज के माता और षालिटी के मूयंकन के लिए नमूना लेना (जिसके अंतर्गत कि आवश्यक हो, तो योगशाला मापमान पर खनिज-विज्ञान संबंधी परीक्षण भी हैं) और अवेक्षण के अग्र-प्राप्ति पर आधारित सीमित बिहवगण है। इसका उद्देश्य, किसी निधि के निरंतरता का प्रिय संकेत देते हैं और आकार, स्तर, ढांचे और षाली का आंशिक षालन दान करते हैं उसके मुख्य भूवैज्ञानिक लक्षण को स्थापित करना है। शुद्धता के माता यह विनिर्जित करने के लिए पया।

होनी चाहिए कि नवहाय-पूर्व अध्ययन और विस्तृत खोज आवश्यक हैं।

(6) विस्तृत खोज (जी1) में नमूने के माध्यम से, जैसे दृष्टांत, गण, खड्ड, वेधन-छि, खोज संबंधी खनन (जहां कहें अपेक्षित हो) शास्त्र और सुरंग से। किसी स्तर निधि के तीन आयामी सीमांकन अंतर्भूत होता है। नमूना षाल को इस कार निरकट रखा गया है कि निधि के आकार, स्तर, संरचना, षाली और अग्र सुसंगत लक्षण को शुद्धता के स्तर तक स्थापित किया जाता है। ऐसे स्तरों में परीक्षण, जिनमें खोज संबंधी खनन से पुंज नमूने लेना अंतर्भूत है, अपेक्षित हो सकेगा।

(7) खनिज संसाधन (जी 4 और जी 3) भू-पट्टी में या उस पर आथक हित वाली ठोस सामग्री का ऐसे स्तर, षाली या षालिटी और माता में संकेत है कि अंतर्गत आथक निरक्षण के लिए प्रिय संभावनाएं हैं। किसी खनिज संसाधन के अविश्रुत, माता, षाली या षालिटी, निरंतरता और अग्र भूवैज्ञानिक लक्षण विनिर्देश भूवैज्ञानिक साधन और जानकारी से, जिसमें नमूना लेना भी है, स्तर, षालित हैं और उनका निर्वचन किया गया है।

(8) खनिज संसाधन, बढ़ते हैं भूवैज्ञानिक विज्ञान के स्तर में अनुमानित, उपदशत और मापित वगैरह में उप-विभाजित किए गए हैं।

(9) अनुमानित खनिज संसाधन (जी4) किसी खनिज संसाधन का वह भाग है जिनके लिए माता और षाली या षालिटी का षालन सीमित भूवैज्ञानिक साधन और आंशिक खोज के स्तर के माध्यम से लिए गए नमूने के आधार पर किया जाता है।

(10) <कसी अनुमानित संसाधन का विभास का Zतर <कसी उपदशत खिनज संसाधन को लागू होने वाले Zतर से कम होता है । अधिकांश अनुमानित खिनज संसाधन को निरंतर खोज के साथ उपदशत खिनज संसाधन म5 उरत <कया जा सकता है ।

(11) उपदशत खिनज संसाधन(जी3) <कसी खिनज संसाधन का वह भाग है जिसके लिए मा4ा, ञेणी या ञालिटी, घन9व, आकार और भौतिक ल-ण का ञलन पया। विभास के साथ <कया जाता है जिससे <क खान योजना और नि-पे क आथक Nवहायता के मूयांकन का समथन करने के लिए उपांतरणकारी कारक का पया। विZतार से अनुयोग अनुकृत हो सके ।

(12) भूवैकािनिक साय, पया। Eप से विZतृत और विवसनीय खोज, नमूने लेने और परी-ण से Nु9पR होता है और वह अवलोकन के बिदुह के बीच भूवैकािनिक और ञेणी या ञालिटी निरंतरता धा3रत करने के लिए पया। है ।

(13) मापित खिनज संसाधन(जी3 और जी 2)<कसी खिनज संसाधन का वह भाग है जिसके लिए मा4ा, ञेणी या ञालिटी, घन9व, आकार और भौतिक ल-ण का ञलन इतने विभास के साथ <कया जाता है जो विZतृत खान योजना और नि-पे क आथक Nवहायता के अंतिम मूयांकन का समथन करने के लिए उपांतरणकारी कारक का अनुयोग अनुकृत करने के लिए पया। है ।

(14) भूवैकािनिक साय, विZतृत और विवसनीय खोज, खोज संबंधी खनन, नमूने लेने और परी-ण से Nु9पR होता है और वह अवलोकन के बिदुह के बीच भूवैकािनिक और ञेणी या ञालिटी निरंतरता क पुिB करने के लिए पया। है ।

(15) <कसी मापित खिनज संसाधन का विभास का Zतर <कसी उपदशत खिनज संसाधन या <कसी अनुमानित खिनज संसाधन को लागू होने वाले विभास के Zतर से उतर होता है । इसे <कसी मापित खिनज आरि-ति या <कसी उपदशत खिनज आरि-ती म5 संप3रवातत <कया जा सकता है ।

(16) खिनज आरि-ति (जी2 और जी1)खिनज संसाधन का आथक Eप से खनन-योय भाग है । इसके अंतगत ऐसी हािनय के लिए, जो तब हो सकती है जब साम_ी का खनन या निनकषण होता है, साम_ी और मोक के तनुकरण भी आता है और इसे Nवहायतापूर्व या Nवहायता Zतर पर <कए जाने वाले अययन ारा समुचित Eप म5 प3रभाषित <कया जाता है जिसम5 उपांतरणकारी कारक का अनुयोग भी है ।

(17) संभान खिनज आरि-ति(जी2)<कसी उपदशत खिनज संसाधन और कुछ प3रिZथितय म5 <कसी मापित खिनज संसाधन का आथक Eप से खनन-योय भाग है ।

(18) <कसी संभान खिनज आरि-ति को लागू होने वाले उपांतरणकारी कारक म5 विभास <कसी िसy खिनज आरि-ति को लागू होने वाले विभास से कम है ।

(19) िसy खिनज आरि-ति(जी1)<कसी मापित खिनज संसाधन का आथक Eप से खनन-योय भाग है । <कसी िसy खिनज आरि-ति से उपांतरणकारी कारक म5 विभास क उ मा4ा विवि-त होती है ।

(20) उपांतरणकारी कारकऐसी विचारणाएं हC जिनका उपयोग खिनज संसाधन को खिनज आरि-तिय म5 संप3रवातत करने के लिए <कया जाता है । इसके अंतगत खनन, संZकरण, अंतिम उपयोग, कट-आफ ञेणी, आरंभिक मूय, धातुकम, अवसंरचना, आथक, विवपणन, विविधक, पयावरणीय, सामाजिक और सरकारी कारक आते हC <कतु वे यहS तक निबधित नहS हC ।

(21) सा0 यतापूर्व अययन<कसी खनन प3रयोजना क तकनीक और आथक Nवहायता के लिए विकप क ञृंखला का एक ऐसा अययन है जो एक ऐसे Qम तक आगे बढ़ गया है जहां भूमिगत खनन क दशा म5 अधमानित पयितया <कसी खुले गके क दशा म5, गके क आकृति Zथापित क जाती है और खनन <Qया क भावी पयित अवधा3रत क जाती है । इसम5 यह अवधा3रत करने के लिए उपांतरणकारी कारक क युयिु उपधारणा पर आधा3रत विीय विेषण और <कहS अय ऐसे सुसंगत कारकका मूयांकन शामिल है, जो पया। हC <क समZत खिनज संसाधन या उसके <कसी भाग को तिवेदन के समय <कसी खिनज आरि-ति म5 संप3रवातत <कया जा सकता है अथवा नहS । सा0 यतापूर्व अययन का विभास Zतर सा0 यता अययन क तुलना म5 कम होता है ।

(22) सा0 यता अययन<कसी खिनज प3रयोजना के लिए चयिनत विकास विकप का एक विZतृत नापक तकनीक और आथक अययन है, जिसके अंतगत लागू उपांतरणकारी कारक का, <कहS अय सुसंगत प3रचालन कारक सहित, समुचित Eप से विZतृत निधारण और ऐसा विZतृत विीय विेषण आता है जो तिवेदन के समय यह दशत करने के लिए आवेयक हC <क निनकषण युसंगत Eप से यायोचित(आथक Eप से खनन-योय) है । इस अययन का विभास Zतर <कसी सा0 यतापूर्व अययन के विभास Zतर क तुलना म5 उतर होगा ।

(23) आथक Nवहायता:<कसी नि-पेक आथक Nवहायता भाग 2 या भाग 4 म5 उपदशत <Qयाकलाप पर निभर करेगी और यह आरंभ <कए गए <Qयाकलाप के आधार पर एक विशेष्क के Eप म5 काय करेगी ।

(24) “कट-आफ _ेड”से खिनज का <कसी नि-पे के लिए ऐसा यूनतम आथक आमपन _ेड अभेत है जिससे नीचे खनन सं<Qयाएं

वतमान बाजार गितशीलता या अंतिम उपयोग ञालिटी म5 अNवहाय हो जाती हC । यह बाजार क अपेाह के आधार पर समय-समय पर और नि-पेपारिभर-िभर हो सकता है ।

भाग 2: खोज के लिए भूवैकािनिक पैरामीटर

1. हवाई भूमी-णःउप_ह ितमावली/दूर संवेदी/वायुवाहित भूभौतिक सर्वG-ण आ<द िजसम5 समुचित ौवोिगिक का योग <कया है [मुत्य EP से भूमी-ण सर्वG-ण(जी4) Qम के िलए लागू होता है] ।

भू-वैकानिक सर्व-ण(मानिच4ण):भूमी-ण (जी4) Qम के िलए 1 : 50,000 या छोटे मापमान पर;

ारंभिक खोज(जी3) Qम के िलए 1 : 10,000 या बृहर मापमान पर;

साधारण खोज(जी2) Qम के िलए 1 : 4000/1:5000 या बृह9 तर मापमान पर;

िविजत खोज(जी 1) Qम के िलए 1 : 2000 या बृहर मापमान पर

भूमि भूभौतिक और भू-रासायनिक सर्वG-ण:यथावयक समुचित तकनीकका योग करके भूभौतिक और भू-रासायनिक सर्वG-ण ौवोिगिक:खोज और Zथल, जैसे दयांश, खाइय, ग, पुराने खदान और वेधन िछ से समुचित तकनीक का योग करके नमूने लेना । नमूना अवZथान को अयZक िनकाय और उसक पाaक और उवाधर िनरतरता क िवमानता Zथापित करने के िलए उचित दूरी पर रखा जाता है (यथासंभव िवजतार तक िड पैटन' म5 और संरचना9मक ज3टलता के आधार पर उपांत3रत <कया जाए) । खोज के साधारण(जी2) और िविजत(जी1) Qम के िलए, खिनजीकरण क गहराई िनरंतरता पर उस सीमा तक िवचार <कया जा सकेगा िजस तक खिनजीकरण का 9य- साय Zथापित आ है ।

'Hkkx iμ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

23

संसाधन िनधारण के िलए िवचार म5 िलया जाने वाला पाaक िविजतारण भू-वैकानिक िवचारणा पर िनभर करेगा और वह <कसी भी दशा म5 जांच िबदुह क िड दूरी के 50 ितशत से अधिक नहS होगा ।

चयिनत जानकारी, जैसा िवयु आमापन, िवयु वेधन िछ, पैड संकेण के आमापन पर आधा3रत िनधारण क िसफा3रश नहS जाती है ।

नमूना लेना और उप-नमूना लेना:(क) भूमी-ण Qम के िलए यादृिछक पकड़/चिप/सतही अनावरण से चैनल नमूना लेना/कगार/नाला काटना/ग/चैनल आ<द ।

(ख) ऐसे ग/खाइय/दयांश/खदान आ<द से िविजत नमूने लेने िजनक दूरी पया' EP से कम है िजससे <क भू-वैकानिक िनधारण के

अय Qम के िलए भू-वैकानिक और ेड िनरतरता क पुिB हो ।

(ग) यथािजित, वेधन-िछ क िलथो-लाग और गामारे लाग, िनयिमत अंतराल पर, अधिमानतः खिनजीकृत भाग के िलए मीटर-

वार अथवा उससे कम वेधन कोर/चिप के नमूने लेना ।

(घ) िनयोिजित क जाने वाली वेधन तकनीक, अधिकतम नमूने/कोर वसूली ा. करने के उेय सहित अंतवGधन <कए जाने वाले शैल पर

िनभर करेगी ।

आमापन डाटा और योगशाला परी-ण:अवेषणाधीन खिनज के िलए उपयु मुख धातु के िलए तैयार <कए गए सभी नमून का िवेषण । उपो9पाद और हािनकर त9व का िवेषण, जहां कहS भी आवेयक हो ।

शैलवण'ना और िमनरा ा<फक अययन:शैल के कार और ेन आकार, बनावट, नाप और य<द आवेयक समझा जाए, तो उसके मोचन ल-ण आ<द सहित खिनज संयोजन का पता लगाने के िलए खिनजीकृत भाग का शैलवण'ना िवेषण

पुंज घन9व अययन:पुंज घन9व का मापमान ऐसी पयितय ारा <कया जाना चाहिए िजनम5 3र Zथान (शैल-िछो, सरं;ता आ<द) को पया' EP से िहसाब म5 िलया जाता है ।

धातुशोधन अययन के िलए पुंज नमूने लेना:संZकरण ौवोिगिक परी-ण के िलए, य<द आवेयक हो, पुंज नमूने लेना ।

पयावरणीय ढांचा:Zथानीय अवसंरचना, Zथानीय जनसंया, ऐतहािसक Zथल, वन, अयारय, राीय उवान के ढांचे और -े4 के पयावरणीय ढांचे क आधारभूत जानकारी एक4 क जाए ।

कोई अय सुसंगत डाटा:भूग' जल, भू-तकनीक और शैल क िविशेषताएं आ<द, जो सुसंगत ह ।

भाग 3 : िविभकार के यूरेिनियम, थोरयम और दुलBभ धातु और दुलBभ

भूसुझाए गए मानक

िन-ेप के कार और मख खिनज	जी4 Qम	जी3 Qम	जी2 Qम	जी1 Qम	3टपिण्यां
-------------------------	--------	--------	--------	--------	-----------

I. संतरत तरत और िनयिमत और अनियिमत Dवहार के सारणीबं यूरेिनियम िनेप जो िनृकार वगहकृत हांहांहां: बलुआ पथर कार, काबनेट झुंड, फाउफेट, काली शेल, सरकफिशयल और नोरे िनयमन	आवयकतानुसार Zकाउट वेधन/गंे/खाई खोदना ।	बोर िछ ि_ड/नमूना दूरी कम से कम 800 मी. x 400 मी. या ित वग' <क.मी. कम से कम 5 बोर िछ ।	बोर िछ ि_ड/नमूना दूरी कम से कम 400 मी. x 200 मी. या ित वग' <क.मी. कम से कम 18 बोर िछ ।	बोर िछ ि_ड/नमूना दूरी कम से कम 200 मी. x 100 मी. या ित वग' <क.मी. कम से कम 65 बोर िछ ।	जी1 Qम पर अपे-ानुसार ेड के पुंज िनधारण सहित खोज संबंधी खान िववर खुला गंा या भूमिगत िवकास ।
II. समत आयाम& के मसूराकार यूरेिनियम िनकाय, िजनके अंतगBत सिंमक िशरा, लास, पाकेट, टाकवकB के रेखीये/& मा पाए जने बने िनकाय	आवयकतानुसार Zकाउट वेधन/गंे/खाई खोदना ।	बोर िछ ि_ड/नमूना दूरी कम से कम 400 मी. x 200 मी. या ित वग' <क.मी. कम से कम 18 बोर िछ ।	बोर िछ ि_ड/नमूना दूरी कम से कम 200 मी. x 100 मी. या ित वग' <क.मी. कम से कम 65 बोर िछ ।	बोर िछ ि_ड/नमूना दूरी कम से कम 100 मी. x 50 मी. या ित वग' <क.मी. कम से कम 230 बोर िछ ।	जी1 Qम पर अपे-ानुसार ेड के पुंज िनधारण सहित खोज संबंधी खान
कार वगहकृत हां: मेटामोरफाइट (कायात3रत), मेटासोमाटाइट (धा9वंत3रत), असंEप संबं, अंतवGधी, ेनाइट-संबं, ब धाि9वक शोणितज संकोणाem संकर कार, ज्वालामुखी-संबंधी और आपितत संकोणाem पाइप					गंा या भूमिगत िवकास ।
III. दुलBभ धातु और आर.ई.ई. पौमेटाइनस, रीफ और िशरा/ पाइप, काबBनाटाइट और आयार आयेय शैल ।	आवयकतानुसार Zकाउट वेधन/गंे/खाई खोदना ।	ित वग' <क.मी. 10 से 25 गंे/खाई वेधन कदशा म5, बोर िछ क दूरी 40मी. x 20मी. या 40मी. x 40मी. हो सकेगी ।	अधमानत: 20 मी. के अंतराल पर गंा/खाई खोदना । वेधन क दशा म5, बोर िछ क दूरी 20मी. x 10मी. या 20मी. x 20मी. हो	10मी. x 10मी. या उससे कम दूरी पर खोज संबंधी खुला गंा या बोर िछ या जहां कहS भी आवयक हो, ेड और वसूली के	

बालू-तट और अंतःथलीय कछारी िनेप भारी खिनज िन-ेप(इलमेनाइट, यूकोसीन, एटाइल, मैग्नेटाइट, मोनेज़ाइट, गारनेट, िसिलमेनाइट और ज़क़न) का बालू-तट, बालू का टीला और अंतःथलीय (टेरी/लाल बालू)	नमूना िबदुह क उपलब्धता के अनुसार यादृच्छिक नमूने लेना ।	औगर/कोनराड/ बंका/डोरमर/ िवबरोकोर/आर.सी.डी . वेधन: >2000 से 3000 मी. x 200मी. ।	औगर/कोनराड/ बंका/डोरमर/ िवबरोकोर/आर.सी . डी. वेधन: जी.2.1: >200 से 1000 मी. x 100 से 200मी. िड जी.2.2: >1000 से 2000 मी. x 200मी. िड ।	औगर/कोनराड/ बंका/डोरमर/ िवबरोकोर/आर.सी.डी . वेधन: 200 मी. x 100 मी. िड या उससे िनकट ।	
---	---	--	---	---	--

ग - 4

एउरयल भू-भौतिकय, भू-रासायन, भू-िवकान सवग-ण और परी-ण के मायम से जिनत खोज नमून और परी-ण के सभी आंकड़ को समेकत करके खिनज संसाधन के ालन और उरपोट करने के िलए भू-िवकान उरपोट और ौवोगिक अययन, भू-िवकान अययन के

9येक Qम के िलए अथात् जी 4 से जी 1 तक िलए संसाधन के िनधारण हेतु ली जा सकेगी । इन अययन क उरपोट म5 साधारणतया िनलिखित म5 समाविB होगा ।

Hkkx IIµ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vIk/kj.k

25

Nम सं.	मानदंड	पीकरण
1	हक और उवािम9व	- पूर्वG-क का, ई-मेल आई डी, टेलीफोन न. सहित नाम, पता
2	-े4 के हयैरे	- पूर्वG-ण/खिनज अधिकार, यद कोई हो, क अविध के हयैरे - गांव, िजला, राज्य - भारतीय सवG-ण टोपोशीट संख्या । सभी कोण िबदुह के -े4 के भू-समवय - भूमि उपयोग सहित -े4 के भू-कर हयैरे - अवे-णाधीन खिनज
3	अवसंरचना और पयावरण	- उथानीय अवसंरचना, उथानीय जनसंख्या, ऐतिहासिक उथल, वन, अभयारण्य, राणीय उवान और -े4 क वातावरणीय िउथित ।
4.	पूर्व खोज	- अय अभिकरण/प.कार ारा क गई पूर्व खोज के हयैरे - यद उ -े4 म5 पूर्व खोज के अतगत आने वाले -े4 का कोई भाग भी है तो उसे उचित मापमान के साथ मानिच4 म5 दशत कया जाए
5	भू-िवकान	- नापक भू-वैकानिक संरचनामक ढांचे क एपरेखा देते ए भू-े4 क संि- -े4ीय भू-िवकान । - अययनाधीन -े4 का िजसके अतगत िनकटउथ िमले ए -े4, यद उपलब्ध ह, झुकाव (िडप) के हयैरे, मापदंड, पुराने खिनत, सतही िवगोपन क िन-ेप कउ म, भू-वैकानिक नवउथा और हयैरे और उ जानकारी का अययनाधीन -े4 पर पढ़ने वाला संभावित भाव । - मुख्य शैलिकय इकाइय, संरचनामक और िनमाण िवषयक िवशेषताह को दशत करने वाले भू-समवयक के साथ समुचित माप का िवसनीय भू-िवकान संबंधी मानिच4, सतही खिनजीकरण का िवउतार, संरचना, बोरहोस, गढ़, खाइय, पुराने खिनत और अय सम वयक का िवउतार । - उपयु अतराल पर शैलिक इकाइय और खिनजीकरण ऊवाधन -ेपण को दशत करने वाले अनुउथ पउर-े4 ।

6	एउरयल/भूतल भू-भौतक/भू-रसायन आंकड़े	एउरयल, भू-भौतक और भू-रसायनिक सर्वेक्षण के पत्रणाम, यद कोई ह, के हयैरे ।
7	ौवौगिकय अवेषण	- ौवौगिकय अवेषण के हयैरे (गढ़े खोदना/खाई बनाना, िल लग और अ य ह यैरे) - खोज पत्रणाम को उरपोट करने हेतु डाटा अतरण : चाहे डाटा अतरण और िवतरण वग 1 और वग 2 पर आधाउरत हो या न हो तथा लागू खिनज संसाधन संबंधी ालन क <Qया(h) और वग;करण के िलए भूवैकानिक िड्डी और
8	नमूना लेने क तकनीक	- नमूना लेने क <Qया और ालिलटी (उदाहरणाथ कट चैनल, सांयौगिक िचप और
9	िल लग तकनीक और योग क गई िल	- िल कार (उदाहरणाथ अंतभाग िवपयय पत्रचालन, ओपेन होल हेमर, रोटरी एयर बलाउट, बरमा, बंगका, उवनीय (सोिनक) और अन् य िल लग तकनीक और हयैरे (उदाहरणाथ कोर डाइमीटर, ितगुना या उटडड डूब, कोलर आर एल, नमूना लेना दशाकोण, झकाव, बोर िछ के समवयक और अ य - फ्या उचित एप से अंतभाग और िचप नमूना युरण को अभिलिखत कया गया है और पत्रणाम का िनधारण कया गया है । - नमूने के युरण को बढ़ाने हेतु कए गए उपाय और नमून क आदश कृति को सुनिजत करना । - लाग करना – फ्या अंतभाग और िचप नमून को, समुचित खिनज संसाधन के ालन, खनन अययन और धातुकम;य अययन के समथन के िलए हयैरेवार
10	उप-नमूना लेने क तकनीक और नमूना तैयार करना	- यद अंतभाग है तो फ्या िवभाजित या कचित है और फ्या चतुथक, आधा या सभी अंतभाग को हण कया गया है । - यद गैर अंतभाग है तो फ्या खांचा, निलका ितदश, रोटरी िउपट आद है और फ्या नमूनानम या शुनक है । - सभी नमूना कार के िलए, नमूना तैयार करने संबंधी तकनीक क कृति, फ वालिलटी और उपयुता । - नमूना क समपता को बढ़ाने के िलए सभी उप ितदशन Qम के िलए अंगीकृत फ वालिलटी िनयंण <Qयाएं । - यह सुनिजत करने के िलए क उपदशन म5 संगृहीत यथावत् साम्ी क
11	िवेषण आंकड़ और योगशाला परीण क गुणवा	यु िवेषण और योगशाला <Qयाह क कृति, गुणवा और उपयुता तथा फ्या तकनीक को अपूण या पूण समझा गया है । अंगीकृत गुणवा िनयंण <Qयाह (उदाहरणाथ मानदंड, पत्रणाम रिहत, िएपण, बा योगशाला परीण) और फ्या पत्रशुता के उतर पर उवीकाय करने योय है (अथात् प-पात रिहत) तथाविशता उथापित हो गई है ।
12	आता	- फ्या शुनक आधार पर या ाकृतिक आता के साथ टनभार का ालन कया जा
13.	सघनता पुंज	फ या किपत है या अवधाउरत है । यद किपत है तो धारणाह का आधार । यद अवधाउरत है तो यु पयित आ या शुनक, मापन क आवृ, कृति, नमून का आकार और समपता ।

14	संसाधन ा□लन तकनीक	- खिनजीकरण क िनरतरता सुनिजित करने के िलए पया. आंकड़े पुंज और ा□लन के िलए यु संेषण पया. आंकड़े आधार संबंधी िववेचना । - अनुयु ा□लन तकनीक (तकनीक) और मुय धारणा िजसके अतगत अधिकतम णेणीमूय, भाव -े4 का उपचार भी है, क कृति और उपयुता । - अतवGशन पैरामीटर, डाटा पाइंट से बिहवGशन क अधिकतम दूरी । - प3रवत} िवश् वसनीय वगW म5 खिनज संसाधन के वग}करण का आधार । - गौण उ9पाद क वसूली के संबंध म5 क गई धारणाएं । - टनभार और णेणियके ा□लन के िलए यु पयुति और बनाई गई धारणा का िवZतृत िववरण (खंड, ब भुज आकृति, ितलोभ दूरी, भू-सांयकय या अय पयुति) । - संसाधन ा□लन के िनयं4ण हेतु भू-िवkान िनवचन का कैसे उपयोग कया गया
----	-------------------	---

Hkxx IIμ[k.M 3(i)°

Hkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

27

		यद कंयूटर पयुति का चयन कया गया था तो उपयोग कए गए ो_ाम और पैरामीटर का िववरण । - भूZथैतिकय पयुतियां अ9याधिक प3रवातत हC और उनका िवZतार से वणन करना होगा । चुनी गई पयुति यायसंगत होगी । भूZथैतिकय पैरामीटर, िजसके अतगत वे3रयो_ाम भी है और भू-वैkानिक िनवचन के अनुसार उनक संगतता
15	अित3र काय	- सुनियोजित अित3र काय' क कृति और मापमान (उदाहरणाथ' पाaक प3रवय'न या गहन प3रवय'न या NापकZतर पर Zटेपअप ि□लग)
16	3रपोट' के उपबंध/संल□क	- 3रपोट' म5 कए गए ा□लन के समथन म5 मानिच4, खंड, लाग, िवेषण 3रपोट',
17	कोई अय जानकारी	- कोई अय जानकारी, जो कसी ाधिकारी ारा उपलब्ध कराई जाए या अपेित

तापूवB या सा यता रपोटB के िलए मापदंड

खिनज आरि-ितय के ा□लन और 3रपोट' करने के िलए (खनन कंपिनय ारा तैयार और Zतुत क जाने वाली) सा० यतापूव/सा० यता 3रपोट' के मानदंड (भाग 4 के सूचीबय मानदंड खिनज आरि-ितय के ा□लन और 3रपोट' करने के िलए भी लागू हगे) । भू-िवkान अ०ययन 3रपोट' भी पूव' सा० यतापूव/सा० यता 3रपोट' का भाग होगी ।

Nम सं.	मानदंड	पीकरण
1	खिनज आरि-ती म5 संरप3रवत'न के िलए खिनज संसाधन ा□लन	- ऐसे खिनज संसाधन ा□लन का िववरण िजसका खिनज आरि-ती के संप3रवत'न के िलए आधार के हप म5 उपयोग कया गया है । - इस संबंध म5 ZपB कथन क Fया खिनज संसाधन क खिनज आरि-ितय के अित3र 3रपोट' क गई है या उनको सिXमिलत कया गया है । - खिनज संसाधन खिनज आरि-ितय म5 संप3रवातत कए जाने हेतु समथ बनाने के िलए कए गए अ०ययन का कार और Zतर अथात् सा० यतापूव/सा०
2	िनिजित (कट-आफ) पैरामीटर	अंगीकृत िनिजित णेणी (णेणिय) या लागू F वालिटी पैरामीटर का आधार, िजसके अतगत भारतीय खान b यूरो ारा िविहत समतु'य धातु सू4 और ारंभिक मू' य का आधार, यद समुचित हो,

3.	खनन कारक या धारणाएं	- खिनज संसाधन को खिनज आरि-ती म5 संप3रवातत करने के िलए यु प्यित और धारणाएं (अथात् या तो इBतमीकरण ारा समुचित कारक का योग करके या खनन के िलए िवZ तृत योजना ारा समाथत ारंभिक या िवZतृत िडजाइन ारा) - चयिनत खनन प्यित (प्यितय) का िनवचन, उनक कृति और उपयुता, चयिनत खनन इकाई का आकार (लंबाई, चौड़ाई, ऊंचाई) और अय खनन पैरामीटर िजसके अतगत सहयु िडजाइन मुंे जैसे पूव िववृ9 त, अभगमन और अय सहयुF त िडजाइन मुंे । - भू-ौwोगिकय पैरामीटर के संबंध म5 बनाई गई धारणाएं (उदाहरणाथ िगटZलोपस, Zटोप सादज और अय जैव तकनीक पैरामीटर) ेड िनगं/गा
		- उपयोग <कए गए खनन तनूकरण कारक, खनन 9युरण और यूनतम खनन िवZतार । - चयिनत खनन प्यितय क अवसंरचना9मक अपे-ाएं । जहां लागू हो वहां अनापालन
4.	धातुकम' संबंधी कारक या धारणाएं	- Zतावित धातुकम' संबंधी <Qया और भंडारण कार के अनुसार उस <Qया क उपयुता । - <कए गए धातुकम' संबंधी परी-ण, काय' क कृति, मा4ा और ितEपता और उपयोग क गई धातुकम' संबंधी 9युरण कारक । - हािनकारक त9व के िलए बनाई गई धारणाएं या अनुमोदन । - <कसी नमूना पुंज या पाइलेट Zकेल टेZटवक' क िवमानता और िड_ी िजस तक ऐसे नमून म5 संपूण' अयZ क णड को दशाती है । - खिनज आरि-ितय के िलए 3रपोट' <कया गया टनभार और ेड म5 यह
5.	लागत और राजZव संबंधी कारक	- ि-. पूंजी और चालन लागत के संबंध म5 िनकष' या क गई उपधारणा । - शीष', ेड, धातु या वZतु सहित राजZव के संबंध म5 बनाई गई धारणा - कमत िविनमय दर, प3रवहन और उपचार भार, शाित और अय राजZ व कारक। - सरकार और ाइवेट दोन को संदेय ZवािमZव के िलए मोक ।
6.	बाजार िनधारण	- िविशB वZतु क मांग, दाय और Zटाक क िZथित, खपत Eज्ञान और भिवनय म5 दाय और मांग को भावित करने वाले कारक । - उ9पाद िवपणन अभिवयासन जैसी पहचान के साथ ाहक और ितZपथ; िवेषण । - कमत और प3रणाम पूवानुमान और इन पूवानुमान के िलए आधार । - संविदा का दाय करने के पूव औwोगिक खिनज के िलए ाहक िविनदGश, परी-ण और Zवीकृति संबंधी अपे-ाएं ।
7	अय उपातरण करने संबंधी कारक	- प3रयोजना क Nवहायता और/या खिनज आरि-ितय के ाF कलन और वग; करण पर पड़ने वाले ाकृतिक जोखिम पयावरणीय िविधक अवसंरचना, िवपणन, समाजिक या सरकारी कारक का भाव, य<द कोई हो - हक और अनुमोदन क ािZथित जो प3रयोजना क Nवहायता के िलए संकटमय है जैसे <क खनन पाा, िनवहन अनुकाप4, सरकारी और कानूनी अनुमोदन ।

8	वगु करण	- विविभर विवसनीय वगW म5 खिनज आरि-तिय के वगु करण का आधार । - सभी आवेयक अनुमोदन/संविदाह के अधीन रहते ए Zतावित ारिभक खान डिजाइन/ 9यया9मक योजना को ायान म5 रखते ए ाणीवार खान योय मा4ा के अंतिम ालन क पुिB हो गई है या ऐसे युियु अपवाद हC <क सभी ऐसे अनुमोदन/संविदाएं युियु समयसीमा के भीतर और ऐसे माणीकरण के साथ
---	---------	--

Hkkx II [k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vll/kj.k

29

अनुसूची ग

कायBपालन ितभूित के िलए बाक गारंटी का उपविधान

[िनयम 6(6)(ख) देखिए]

[बCक का संदभ' संत्यांक]

[तारीख]

सेवा म5,

राज्यपाल (राज्य का नाम)

(पता)

अ. [नाम] कंपनी अधिनयम, [1956/2013] के अधीन भारत म5 िनगिमत सरकारी [कंपनी/िनगम] है िजसका कारपोरेट पहचान संत्यांक (आवेदक का सीआईएन) है, िजसकारिजZीकृत कायालय (रिजZीकृतकायालय का पता), भारत म5 है और कारोबार

का मुख Zथान [कारोबार के मुख Zथान का पता, य<द रिजZीकृत कायालय से िभर हो] है ("आवेदक") को िनपादन बCक

9याभूित क समाि. क तारीख) ("समाि. तारीख") तक िविधमाय िनपादन सुर-ा के तौर पर भारतीय xपए [अंक म5]

[भारतीय xपए (शब्द म5)] के बराबर क रकम के िलए िबना शत' और अतिसंहरणीय बCक 9याभूित देना अपेित है ।

आ. राज्यपाल (राज्य का नाम), ("राज्य") को [उरयायत क िविशिBयां](संयु EP से "उरयायत दZतावेज") के संबंध म5 तारीख

[तारीख]का मूल दZतावेज के संदभ' म5 खनन पTा, खान िवकास और उ9पादन करार के अधीन कितपय बायताह के िनवहन के

िलए कायपालन ितभूित Zतुत करना अपेित है ।

इ. हम [बCक का नाम] ("बCक") आवेदक के अनुरोध पर इसम5 अतवB िनबंधन और शतW पर राज्य क मांग पर उरयायत दZतावेज

के अधीन आवेदक क बायताह को सुरित करने हेतु भारतीय xपए [अंक म5](भारतीय xपए [शब्द म5]) ("9याभूित रकम")

से अनिधक क रकम का राज्य को संदाय करने का वचन देते हC ।

अतः, अब, बCक 9 याभूित के EP म5 आवेदक क ओर से यह अतिसंहरणीय और अशत' संदाय बCक 9याभूित ("9याभूित") राज्य के प- म5

जारी करता है :

1. बCक, इस योजन से राज्य से ा. थम िलिखत मांग क ाि. पर त9काल राज्य को उसम5 िविनAदB धनरािश हेतु ऐसी मांग के

िलए राज्य ारा बCक आधार या कारण को दशाने अथवा सािबत करने क राज्य क आवेयकता के िबना और <कसी भी मामले

पर राज्य और आवेदक के मय कोई िववाद अथवा मतभेद के होते ए भी वह धनरािश अथवा धनरािशयां (एक अथवा अधिक

दाव के मायम से) जो <क कुल 9याभूित मा4ा से अधिक न हो, िबना <कसी आपि, आरण, केवियट, िवरोध अथवा आय

के अशत' तथा अतिसंहरणीय तौर पर संदाय करने का वचन देता है । बCक, संपूण और ZपB होने के अधीन बCक के दायि9व के

संबंध म5 <कसी यायालय अथवा अधिकरण के सम- लंबित <कसी वाद अथवा कायवाही म5 आवेदक ारा उभूत <कसी विवाद

अथवा विवाद के होते ए भी राज्य को मांगी गई राशि का संदाय करने का वचन देता है ।

2. बCक यह करार करता है <क राज्य को बCक ारा संदाय क जाने वाली रकम क राज्य ारा ऐसी कोई भी मांग 3रयायत दZतावेज

के अधीन राज्य को आवेदक ारा संदाय क जाने वाली रकम के संबंध म5 अंतिम, बांयकारी और िनणायक साय होगी ।

3. बCक इसके ारा आवेदक से, राज्य क पूर्व रकम या उसके <कसी भाग क मांग क आवयकता को अधि9 यिजत करता है और

ऐसे अधिकार का भी अधि9यजन करता है जो इस 9याभूित के अधीन संदाय हेतु बCक क <कसी िलिखत मांग को Zतुत करने से

पूर्व आवेदक के विव्य उसके विविध उपचार को वृ करने के िलए राज्य से अपेित है ।

4. इसके अतिर बCक, राज्य से बिना शत यह करार करता है <क राज्य को बCक क सहमित के बिना और इस 9याभूित के अधीन

बCक के <कसी बांयता को <कसी रीित म5 भावित <कए बिना समय-समय पर :

(i) 3रयायत दZतावेज के िनबंधन और शतW म5 फेरफार करने और/या उपांत3रत करने;

(iiiiiii) 3रयायत दZतावेज के अधीन आवेदक क बांयता के िनपादन हेतु समय को बढ़ाने और/या Zथिगत करने ;

(iiiiiii) 3रयायत दZतावेज के िनबंधन और शतW के अधीन आवेदक के विव्य राज्य ारा अपनाए जाने वाले <कसी अधिकार

से विवत रहने अथवा वृ करने,

क छूट होगी और बCक को ऐसे <कसी कृ9य के कारण अथवा राज्य क ओर से ए लोप अथवा आवेदक के राज्य ारा <कसी अनु ह अथवा <कसी अय कारण जो ितभूितय से संबंथित िनयम के अधीन बCक को उसके कतN से मु नहS करेगा अपितु

इस उपबंध के िलए इस 9याभूित के अधीन बCक को उसके दािय9व से मु करने का भाव होगा ।

5. इसके अधीन <कया गया कोई भी संदाय <कसी वतमान और भावी कर, उहण, लाग, शु'क, भार, फस, कमीशन, कटौतय अथवा <कसी भी कृित क रोक के कारण से, <कसी कटौतय से मु और ZपB होगा ।

6. बCक यह करार करता है <क राज्य अपने विवकप पर आवेदक के विव्य थम-दृBया कायवाही के बिना थम दृBांत म5 मूल ऋणी

के EP म5 बCक के विव्य इस 9याभूित को वृ करने का हकदार होगा ।

7. बCक यह और करार करता है <क इसम5 अतावB 9याभूित का, उस अविध के दौरान, जो 3रयायत दZतावेज म5 िविनAदB क

जाए, पूर्णतया वृ और भावशील रहेगी और यह <क यह तब तक जारी रहेगी जब तक आवेदक के कायपालन ितभूित के संबंध म5उ 3रयायत दZतावेज के आधार पर अथवा उसके अधीन सभी बांयता का पूरी तरह संदाय नहS कर <दया जाता है और उसके दाव का समाधान या िनमचन नहS हो जाता या जब तक राज्य यह माणित नहS कर देता <क आवेदक ारा कायपालन ितभूित के संबंध म5 3रयायत दZतावेज के िनबंधन और शतW को पूर्णतया और उचित EP से पूरा <कया गया है और

तदनुसार इस 9याभूित का िनवहन <कया गया है । इसम5 अतावB <कसी बात के होते ए भी, जब तक समाि. क तारीख पर

अथवा उसके पूर्व िलिखत म5 बCक पर इस 9याभूित के अधीन कोई मांग अथवा दावा पेश नहS <कया जाता है तब तक बCक को

तदनंतर इस 9याभूित के अधीन सभी दािय9व म5 मु रखा जाएगा ।

8. इस 9याभूित के अधीन बCक ारा इस कार <कया गया संदाय इसके अधीन संदाय हेतु बCक के दािय9व का विविधमाय िनमचन

होगा और राज्य ऐसा संदाय करने के िलए बCक के विव्य कोई दावा नहS करेगा ।

9. यह 9याभूति भारत क विविध के अधीन है। इस 9याभूति अथवा इसक विषय-वस्तु से उभूत कोई वाद, कारवाई अथवा
- अय कायवाहिय मऽ [संबंधित राज्य]के यायालय क अनय अधिकाऽरता होगी।
10. बऽक केपास राज्य के प- मऽ यह 9याभूति जारी करने क शि है। यह 9याभूति बऽक के गठन मऽ पऽरवतन के फलऽवऽप उमोचित नहऽ होगी।
11. बऽक लिखित मऽ राज्य क पूव सहमित के िसवाय इस 9याभूति का इसके जारी रहने के दौरान ितसंहरण न करने के लिए वचनबऽ है।
12. राज्य, बऽक को पूव सूचना से, <क हऽ अय विभाग, मं०ालय अथवा <कसी सरकारी अभिकरण का इस 9याभूति के अधीन अधिकार दे सकेगा, जो राज्यपाल के नाम से काय कर सकऽ गे। खंड 12 मऽ यथा उपबंधित के िसवाय, यह 9याभूति समनुदेशनीय अथवा अतरणीय नहऽ होगी।
13. इसमऽ अतऽवऽ <कसी बात के होते ए भी,--
- (क) इस बऽक 9याभूति के अधीन बऽक का दाऽयऽव 9याभूति रकम से अधिक नहऽ होगा ;
- (ख) यह बऽक 9याभूति समाऽि. क तारीख तक विविधमाय होगी।
14. बऽक इस बऽक 9 याभूति के अधीन 9याभूति क रकम अथवा उसके <कसी भाग के संदाय का केवल और िसफ केवल तभी

उरदायी है य<द राज्य समाऽि. क तारीख को अथवा उसके पूव बऽक पर लिखित दावा अथवा मांग क तामील करता है।
(वष)के(मास)कतारीख (<दवस) को
बऽक ने,इसके साऽि यऽ वऽप,अपने ाधिकृत अधिकारी ारा, उसके हऽता-र और मोहर ारा जारी <कया है।

.....

(हऽता-र)

.....

(नाम और पदनाम)

(बऽक क मोहर)

१Hkkx िμ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

31

अनुसूची घ

खनन प.ा विवेख का ऽपिवधान

[िनयम 6(9)(क) देखिए]

यह विवेख खनन प.ा ("प.ा") के अनुदऽ त <कए जाने के लिए िनलिखित ारा और उनके बीच िनपा<दत <कया जाता है :
पकार :

1. [राज्य के] राज्यपाल [राज्य का खान और भूविज्ञान विभाग] ("राज्य सरकार") क ओर से, और
2. [पादेदार का नाम] सरकार [कंपनी/िनगम] जो कंपनी अधिनयम, 2013 के अधीन भारत मऽ िनगिमत है िजसका कारपोरेट पहचान संख्यांक [सीआईएन] है, िजसका रिजऽीकृत कायालय [रिजऽीकृत कायालय का पता] भारत मऽ है और कारोबार का मुखऽथान [कारोबार का मुखऽथान का पता, य<द रिजऽीकृत कायालय से िभर हो] ("पादेदार")।

प्रभूमि :

अ. पादेदार ने खननप.ा अनुद <कए जाने के लिए खान और खिनज (विकास और िविनयमन) अधिनयम, 1957 ("अधिनयम")

और इन िनयम क अपे-ाएं पूण कर ली हऽ।

आ. तदनुसार राज्य सरकार, अब पादेदार ारा पादे के लिए संदाय <कए जाने, उसका पालन <कए जाने और उसको िनपा<दत <कए

जाने के लिए इसमें इसके पश्चात् सुरि-त और निहित फस, ZवािमZव, सिंवदा और करार के तितफलाथ' पादेदार को पटा

अनुद9 त करने के लिए यह विवेख निपादत करती है ।

1. परभाषाएं

इस पादे म5 यु पद के वही अथ' हगे जो अधिनयम और इन नियम म5 उनके हC ।

2. पे का अनुद+ त, कया जाना

2.1 राज्य सरकार पादेदार को निलिखित खिनज (खिनज), [खिनज के नाम] ('खिनज') के संबंध म5 [ारंभ होने के तारीख] से ारंभ होने वाली अविध (समयाविध) हेतु खनन सं<Qयाएं करने के लिए अनुसूची ड [("पटा -े4")] म5 वाणत -े4 के लिए पटा दान करती है ।

2.2 पटा पटा -े4 म5 या उसके अधीन िZथत (मौजूद) खिनज क सभी उन खान संZतर/िशरा सीवन से संबंधित होगा ।

2.3 पादेदार इसमें निहित सभी ंसिवदाह और करार को निपादत करने तथा पादेदार ारा <कए जाने वाली पयवे-ण

और निपादन के लिए संदेय अपे-ित अय भुगतान करने और ZवािमZव का भुगतान करने के अयधीन पटा -े4 पर

कब्जा ले सकता है और दी गई अविध के दौरान राज्य सरकार से या उसके ारा िबना <कसी विविधवxy हZत-ेप के

अथवा <कसी नि ारा िबना<कसी अधिकार हेतु दावे के पटा -े4 के प3रसर म5 अधिकार का योग कर सकेगा ।

3. अधिकार और बायताएं

3.1 राज्य सरकार और पादेदार के अधिकार और बायताएं वे हगी जो, अधिनयम और इन नियम तथा तारीख[तारीख] के खान विकास और उ9 पादन करार म5 विनिAदन ट हC ।

3.2 पूवगामी उपबंध क नापकता पर तितकूल भाव डाले िबना,--

(क) पादेदार —

(i) इस अधिनयम और इन नियम और कोई अय लागू विविध के उपबंध का सदैव पालन करेगा ;

(ii) पादेदार ारा Zवािम9व और अय अपे-ित संदाय का त9काल संदाय करेगा ;

(iii) पादेदार इस पटे ारा द शिय का योग करने म5 पादेदार ारा उभूत सभी नुकसान, -ित या

Nवधान के संबंध म5 वृ विविध के अनुसार विविधपूण' ाधिकारी ारा यथा आकिलत ऐसे तितकर का संदाय करेगा और इस संबंध म5 <कसी नि या निय ारा प ंचाए गए ऐसे <कसी नुकसान, -ित या Nवधान और सभी कार के खच' और m यय संबंधी सभी दाव के तित राज्य सरकार को -ितपूत करेगा और उसे पूणतः और पूरी तरह से सुरि-त रखेगा ;

(iv) पयावरण संर-ा के लिए अपने खच' पर वृ-ारोपण, खिनत भूमि का सुधार, दूषण नियं4ण युिय

का उपयोग के उपाय और ऐसे अय उपाय करेगा, जो कीय या राज्य सरकार ारा समय-समय पर विविहत <कए जाएं ;

(v) इस पटे के अधीन क सं<Qयाह के दौरान होने वाली म9यु या गंभीर शारी3रक -ित या संपि को

गंभीर EP से -ित या जीवन अथवा संपि को गंभीर EP से भावित या संकटाप न करने वाली <कसी दुघटना क 3रपोट' अविलंब उपायु/कलेटर और विभाग को भेजेगा ;

(vi) पटा-े4 से समय-समय पर ा. <कए गए सभी खिनज के संबंध म5 पटा-े4 के कुछ भाग म5 तौल करेगा

या कराएगा अथवा माप कराएगा और ऐसे 9 येक माप-तौल के लिए उपायु/कलेटर को [<दन क संत्या] पूव सूचना दी जाएगी िजससे वह अथवा उसक ओर से कोई नि 9येक समय पर उपिZथत हो सके ;

(vii) Z वयं ारा <कए गए काय' क पूण' 3रपोट' राज्य सरकार और विभाग को Zतुत करेगा और इस पटे के अधीन क गई सं<Qयाह के दौरान इस पटे के अतगत समाविB -े4 का भूविक्तान और खिनज

संसाधन के संबंध में पाटेंदार द्वारा अज्ञात सभी सूचनाओं को कट करेगा ;
 (viii) ऐसा डाटाप शुल्क और रिजर्वीकृत भार काभुगतान करेगा, जो इस विवेक के संबंध में लागू हो ।
 (ख) राज्य सरकार को :

- (i) ऐसी <कसी कायपालन तिभूति के निबंधन के अनुसार पाटेंदार द्वारा दी गई <कसी कायपालन तिभूति को विनियोजित करने और पाटेंदार से कायपालन तिभूति का पुनः प्राप्त करने का अपेक्षा करने का अधिकार होगा । यद कायपालन तिभूति, पाटे के समापन और पाटेंदार द्वारा सभी बाधताओं को पूर्ण करने के बाद <कसी तिभूति निष्पेक्ष के माध्यम से दी गई है तो ऐसा तिभूति निष्पेक्ष पाटेंदार को समुचित कठौतिय के बाद लौटा दी जाएगी यह ZपB <कया जाता है <क इस तिभूति निष्पेक्ष पर कोई हयाज देय नहऽ होगा; और
- (ii) ऐसे <कसी काय या विषय को करने या निष्पादित करने का अधिकार होगा जो इस निम्न सिंविदा के अनुसार पाटेंदार द्वारा <कए या निष्पादित <कए जाने थे <कतु इस निम्न विनियमन समय के भीतर <कए नहऽ जा सके या निष्पादित नहऽ <कए जा सके और पाटेंदार राज्य सरकार का मांग पर ऐसे सभी नय का संदाय करेगा जो उसे करने या निष्पादित करने में उपगत ए थे ।

3.3
इस

यु या आपातकाल (जिसके विमान रहने पर भारत के राष्ट्रपित पूर्णतः निष्णायक हगे और भारत के राष्ट्रपति 4 में

आशय का अधिसूचना उसका निष्णायक सबूत होगी) का दशा में राज्य सरकार का केय सरकार का सहमित से समय-समय पर और उ अविध के दौरान सदैव इस पाटेंदार 4 या इस पाटे के अधीन का संक्याओं से संबंधित या पाटेंदार का कमशाला, संयं, मशीनरी और संपि पर तुरत काजा करने और पाटेंदार का कमशाला, संयं, मशीनरी और संपि या इस पाटे के अधीन संक्याओं पर नियंत्रण करने का अधिकार (पाटेंदार/पाटेंदार को लिखित सूचना देकर)

होगा और ऐसे काजे या नियंत्रण के दौरान पाटेंदार ऐसी कमशाला, संयं, संपि और खिज में संलि.करण के उपयोग के संबंध में केय सरकार या राज्य सरकार द्वारा या उसका ओर से <दए गए सभी निदग्ध का पुंB और पालन करेगा, परतु पाटेंदार को ऐसे उचित तिकर का, जो राज्य सरकार द्वारा अवधाउरत <कया जाएगा, इस खंड द्वारा दशिय का योग करने के कारण या उसके पउरणावप उसे/उह ई है, सभी हांन या नुकसान के लिए संदाय <कया जाएगा और परतु यह भी <क ऐसी शि का योग उ अविध में समा. नहऽ होगा जो उसके द्वारा द है और इस खंड के निबंधन और उपबंध को भावित करता है ।

3.4

पाटेंदार को <दए जाने के लिए अपेक्षित सूचना ऐसे नि को लिखित में दी जाएगी जिसे पाटेंदार द्वारा नामिनदग्ध

<कया जाए और राज्य सरकार को ऐसे नामिनदग्धन का सूचना लिखित में दी जाएगी । यद ऐसा कोई नामिनदग्धन

नहऽ <कया जाता है तो यह सूचना पाटेंदार को रिजर्वीकृत डाक/पीड पोस्ट से पाटेंदार के लिए आवेदन में दशाए गए पते

पर दी जाएगी या भारत में उस पते पर दी जाएगी जो पाटेंदार ने समय-समय पर अभिहत <कया हो और ऐसी प्रत्येक तामील पाटेंदार पर उचित और विधिमाय तामील समझी जाएगी इस पर कोई " या चुनौतीखड़ी नहऽ का जाएगी ।

¹Hkkx 11μ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

33

4. शासित विध

यह पाटेंदार और इसके निवचन संबंधी सभी " का अथावयन भारत का विधि के अनुसार होगा । इस पाटे के संबंध में विवाद का दशा में और पाटेंदार तथा राज्य सरकार के संबंध को भावित करने वाले सभी मामल में वाद या याचिका [शहर का नाम] के सिविल यायालय में फाइल <कए जाएंगे और यहां यह ZपB एप से सहमित न का जाती है <क ऊपर वाणत यायालय के अतउर <कसी अय Zथान पर कोई भी प-कार कोई वाद या अपील फाइल या ऐसी कोई भी कायवाही नहऽ करेगा ।

इसके साथै वएप इसे कायावित करने हेतु [तारीख] को [Zथान का नाम] पर उपिउथत ए ।

अनुसूची ड

पुनरीण या आदेश पारत करने के लिए आवेदन का उप विधान

[नियम 24(1) देखिए]

सेवा म५,

[पता]

म८/हम पुनरी-ण/आदेश पा३रत करने के िलए िनलिखत आवेदन करता ००/करते ह८ जो अपे-त समयाविध के भीतर पा३रत नह८ <कया गया है ।

Q.सं.	मद के बयौरे	िविशिBयां
1.	आवेदक का नाम (फम' या अय NिBक संगम क दशा म५, यथािZथित, फम' या NिBक संगम का गठन करने वाले १येक Nि का नाम बताएं)	
2.	आवेदक का पता (फम' या अय NिBक संगम क दशा म५, यथािZथित, फम' या NिBक संगम का गठन करने वाले १येक Nि का नाम बताएं)	
3.	आवेदक क िZथित • NिBक • फम' • अय NिBक संगम • कंपनी	
4.	आवेदन का योजन (पा३रत आदेश का पुनवलोकन/आदेश पा३रत करने का अनुरोध जहां िविनAदn ट समयाविध के भीतर आदेश पा३रत नह८ <कया गया है)	
5.	<कसी आदेश के पुनवलोकन क दशा म५, आवेदक को आदेश क संसूचना होने क तारीख या कोई आदेश पा३रत करने हेतु अनुरोध क दशा म५ वह तारीख िजसको ऐसा आदेश पा३रत करने क समयाविध समा हो गई ।	
6.	संदेय आवेदन फस	
7.	ब८क का नाम, मांगदेय िाट या चालान संत्या तारीख सहित िजसके मायम से आवेदन फस का संदाय <कया गया है ।	
8.	खिनज िजसके या िजनके िलए आवेदन फाइल <कया गया है ।	
9.	े4 के बयौरे िजसके संबंध म५ आवेदन फाइल <कया गया है ।	
10.	Fया आवेदन िविनAदn ट समयाविध के भीतर फाइल <कया गया है ।	हां/नह८
11.	य<द नह८ तो उसके िविनAदn ट सीमा के भीतर Zतुत न <कए जाने के कारण और िवलंब के िलए माफ क ईसा ।	
12.	अभयोिजत प-कार/प-कार के नाम और पूरा पता	
13.	संल यािचका क संत्या (यािचका तीन ितय म५ Zतुत क जाएगी य<द <कसी प-कार को अभयोिजत नह८ <कया गया है । इनके अित३र अभयोिजत १येक प-कार के िलए एक अित३र ित संल क जाएगी)	
14.	पुिनरी-ण के आधार	

म८/हम यह घोषणा करता ००/करते ह८ <क ऊपर दी गई िविशि यां सही ह और म/हम कोई अ य यौरे, िजनक आपके ारा अपे!ा क जाए, देने को तैयार \$०/ह ।

भवदीय,

& थान :

तारीख :

आवेदक के ह& तार

आवेदक& के िलए अनुदेश—(क) य<द आवेदक कोई कंपनी है तो आवेदन आवेदक के सXयक् एप से ािधकृत ितिनिध ारा हZता-३रत होना चािहए । य<द आवेदक कोई NिB है तो आवेदन Nिगित एप से आवेदक ारा हZता-३रत होना चािहए । फम' या NिB संगम क दशा म५फम' या NिB संगम का गठन करने वाले सभी Nिय ारा आवेदन पर हZता-र <कए जाएंगे ।

(ख) आवेदन के साथ आवेदक (जो कंपनी है) के ािधकृत हZता-रकता' का कारपोरेट ािधकार संल होगा । ऐसे कारपोरेट ािधकार म५ <कए गए <कसी प३रवतन क सूचना त१काल राज् सरकार को दी जानी चािहए ।

अनुसूची च

िविशिय& मा परवतBन क सूचना

[िनयम 28 देखिए]

सेवा म५,

1. परमाणु ऊजा िवभाग

अणुशि भवन, मुखर्ष

2. संबंढत राज् सरकार

मह+ वपूणB

संबंढत ाढकाउरय को नाम और पते म5 पउरवतन क तारीख से साठ <दनके भीतर इस EP म5 सूचना भेजी जाएगी 1. (i) खिनत खिनज का (खिनज के) नाम :

(ii) ऐसे अय खिनज का (के) नाम, य<द कोई ह, िजसके िलए पाटा अनुद <कया गया है :

2. (i) खान का नाम :

(ii) पउरवतन क दशा म5 खान के नाम, य<द कोई ह :
(पुराना नाम और पउरवतन के कारण उपदशत कर5) :

3. (i) पाेदार/उवामी का नाम और पता :

(ii) पाेदार/उवामी के नाम और पते म5 पउरवतन :
पुराना नाम और पउरवतन के कारण उपदशत कर5) :

4. खनन पाे क िविशिBयां :

(i) िननपादन क तारीख :
(ii) अविध :..... वर्ष..... से तक
(iii) पाेधीन -े4 :..... हेफटेयर/एकड़ :

5. खनन पाे क अविशुथित :

(i) ाम..... िजला..... तालुक/तहसील..... :
(ii) डाक घर पुलिस थाना..... िजला
(iii) िनकटतम रेल उटेेशन..... दूरी

Hkkx IIµ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

35

(iv) िनकटतम िवामगृह/डाक बंगला

6. अभकता' क िविशिBयां : नाम और पता

7. खान के बंधक क िविशिBयां : नाम और पता

8. खान म5 िनयोिजत खनन इंजीिनयर क िविशिBयां :

(i) नाम और पता :

(ii) अह'ता :

(iii) िनयुि क तारीख :

(iv) िनयोजन क िशुथित : पूणकालिक या अंशकालिक

9. प4 संत्यांक और तारीख िजसके मायम से परमाणु खिनज खोज और अनुसंधान िनदेशालय ारा खनन योजना का अनुमोदन <कया गया था ।

अनुमोदन प4 संत्यांक और अनुमोदन क तारीख :

10. कोई अय िविनAदB जानकारी

उथान :

हउता-रतारीख :

पूरा नाम :

पदनाम : उवामी/अभकता'/बंधक/खनन इंजीिनयर

(उन मद को काट द5 जो लागू नहS होती हC)

अनुसूची छ

खनन प.& का रिजटर

[िनयम 32 देखिए]

Q. सं.	मद का ढौरा	िविशिBयां
1.	Qम संत्यांक	
2.	आवेदक का नाम (फम' या अय NIBक संगम क दशा म5, यथािशुथित, फम' या NIBक संगम का गठन करने वाले 9येक NIB का नाम बताएं)	
3.	आवेदक का पता (फम' या अय NIBक संगम क दशा म5, यथािशुथित, फम' या NIBक संगम का गठन करने वाले 9येक NIB का नाम बताएं)	

4.	आवेदक क िऒथित • NिBक • फम' • अय NिBक संगम • कंपनी	
5.	आवेदन क तारीख	
6.	ा.कता' अधिकारी को आवेदन ा. होने क तारीख	
7.	पTा अनुदान का संत्यांक और तारीख	
8.	खनन पTे के िनपादन क तारीख	
9.	-े4 के ढयैरे	
	िजला	
	_ाम	
	ता'लुक	
	खसरा संत्या	
	अंतरीय भौगोलिक िऒथित णाली के अनुसार -े4 के भू-समवयक्	
	भारतीय सवG-ण टोपोशीट संत्यांक	
10.	खिनज िजसके (िजनके) िलए खनन पTा अनुद <कया गया है	
11.	तारीख सहित खनन पTे म5 जोड़ा या जोड़े जाने वाले खिनज	
12.	-े4 का िवऒतार िजसके िलए खनन पTा अनुद <कया गया है (हेफ्टेयर)	
13.	वह अविध िजसके िलए खनन पTा अनुद <कया गया है	
14.	नवीकरण क तारीख और अविध	
15.	प3रवतन के ढयैरे के साथ प3रवतन क तारीख, जो खनन पTाधारक के नाम और अय िविशिBयां म5 <कए जाने हC ।	
16.	तारीख िजससे -े4 पुनःअनुद <कए जाने हेतु उपलब्ध होगा	
17.	3टपिण्यां, य<द कोई ह	
18.	अधिकारी के हऒता-र	

[सं. 1/16/2015-एम.VI]

आर. णीधरन, अपर सिचव

MINISTRY OF MINES**NOTIFICATION**

New Delhi, the 11th July, 2016

G.S.R.677(E).—In exercise of the powers conferred by section 11B of the Mines and Minerals (Development and Regulation) Act, 1957 (67 of 1957), the Central Government hereby makes the following rules, namely:

CHAPTER I**PRELIMINARY****1.**

Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Atomic Minerals Concession Rules, 2016.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2.

Definitions.—(1) In these rules, unless the context otherwise requires,—

(a) “**Act**” means the Mines and Minerals (Development and Regulation) Act, 1957 (67 of 1957);

(b) “**atomic minerals**” means minerals specified in Part B of the First Schedule to the Act;

(c) “**Beach Sand Minerals**” means economic heavy minerals found in the teri or beach sands, which include ilmenite, rutile, leucosene, garnet, monazite, zircon and sillimanite;

(d) “**Board**” means the Atomic Energy Regulatory Board constituted under section 27 of the Atomic Energy Act, 1962 (33 of 1962);

(e) “**Department**” means the Department of Atomic Energy, in the Central Government;

(f) “**Directorate**” means the Atomic Minerals Directorate for Exploration and Research under the Department;

1Hkkx ढμ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

37

(g) “**illegal mining**” means any reconnaissance or prospecting or mining operation undertaken by any person or a company in any area without holding a mineral concession as required by sub-section(1) of section 4 of the Act.

Explanation. – For the purposes of this clause,

(a) violation of any rules, other than the rules made under section 23C of the Act, within the mining lease area by a holder of a mining lease shall not be construed as illegal mining;

(b) any area granted under a mineral concession shall be considered as an area held with lawful authority by the holder of such mineral concession, while determining the extent of illegal mining;

(h) “**prescribed substances**” means minerals included in the list of prescribed substances under the Atomic Energy Act, 1962 (33 of 1962);

(i) “**railway**” and “**railway administration**” have the meanings respectively assigned to them in the Railways Act, 1989 (24 of 1989);

(j) “**run-of-mine**” means the raw unprocessed or uncrushed material in its natural state obtained after blasting or digging or dredging from mineralised zone of mining lease area;

(k) “**Schedule**” means a Schedule to these rules;

(l) “**section**” means a section of the Act;

(m) “**threshold value**” means the grade of atomic mineral, specified as percentage of weight of the prescribed substances contained in the ore, to be specified and notified by the Department from time to time in **Schedule A** as the threshold value for the particular atomic mineral occurring as such or in association with one or more minerals; and

(n) “**Total Heavy Mineral**” means the minerals which comprises of Ilmenite, Rutile, Zircon, Monazite, Sillimanite, Leucosene and Garnet.

(2) The words and expressions used in these rules but not defined herein shall have the same meanings as assigned to them in the Act, the rules made thereunder or the Atomic Energy Act, 1962 (33 of 1962), as the case may be.

3. Applicability.-(1) These rules shall apply only to mineral concessions relating to atomic minerals occurring as such or in association with one or more other minerals, provided the grade of such atomic minerals is equal to or more than the threshold value.

(2) Mineral concessions relating to atomic minerals where the grade of atomic mineral contained in the ore is less than the threshold value will be governed, *mutatis mutandis*, by the provisions of the Minerals (Other than Atomic and Hydrocarbons Energy Minerals) Concession Rules, 2016, in force.

(3) A determination regarding applicability of these rules pursuant to assessment of threshold value against the evidence of mineral contents shall be made by the Directorate in accordance with the provisions of sub-rule (5) of rule 4 or sub-rule (3) of rule 6, as the case may be.

(4) If one or more atomic minerals occur in association with other minerals but the grade of atomic minerals is less than the threshold value, then any atomic minerals resulting from mining operations, processing or beneficiation shall be handled and disposed of in accordance with directives issued by the Department regarding conservation of atomic minerals and the directives issued by the Atomic Energy Regulatory Board regarding radiological safety.

4. Prospecting for atomic minerals under second proviso to section 4.-(1) The agencies permitted under the second proviso to sub-section (1) of section 4 of the Act may carry out prospecting operations for atomic minerals without a prospecting licence and such prospecting operations shall be carried out in compliance with **Schedule B**:

Provided that where prospecting operation is to be undertaken under this sub-rule, the agencies desirous of undertaking the prospecting operation shall submit a request to the State Government along with particulars of the area and the period required for prospecting.

(2) The State Government shall within thirty days of receipt of the request issue a notification for the purposes of sub-rule (1) in the Official Gazette with prior approval of the Directorate.

(3) Upon issuance of the notification, the State Government shall not grant any mineral concession to any other person or agency for an area or a part thereof in relation to which a notification has been issued.

(4) Upon completion of prospecting operations under sub-rule (1), the agency conducting the prospecting operations shall submit a geological report of its findings to the Department and the State Government in the format specified in the **Schedule B** and no such report is required if the prospecting operation is carried out by the Directorate.

(5) Upon receipt of a geological report under sub-rule (4), the Directorate shall compare the grade of atomic minerals in the prospecting area with the threshold value and,–

- (a) if the grade of atomic minerals is less than the threshold value, the Directorate shall provide a written intimation, along with a copy of the geological report, to the State Government, which may grant mineral concessions over such area in accordance with section 10B and section 17A of the Act, as the case may be, and the rules made thereunder;
- (b) if the grade of atomic minerals is equal to or above the threshold value, then a mining lease shall be granted by the State Government only in accordance with these rules:

Provided that the Directorate shall also subject the geological reports for prospecting operations generated by the Directorate, to a similar scrutiny as above and hand over the data to the State Governments for action contemplated under clauses (a) and (b).

- (6) If the Directorate finds the geological report submitted under sub-rule (4) to be insufficient for making a determination under sub-rule (5), it may seek additional information or direct further exploration and submission of findings with regard to such additional data as may be specified by the Directorate and upon receipt of such findings and data, the Directorate shall take action as specified in sub-rule (5).
- (7) The State Government may revoke the notification granted under sub-rule (1), if the Directorate communicates in writing that the prospecting operations have been completed.

CHAPTER II

DISCOVERY AND GRANT OF MINERAL CONCESSIONS

5. Grant of mining lease at the instance of Department.— (1) Where on an examination of a prospecting report prepared in conformity with the parameters specified in **Schedule B** by the Directorate, in accordance with the provisions of sub-rule (5) of rule 4, indicates the grade of atomic minerals to be equal to or above the threshold value, the State Government shall,—

- (a) identify and demarcate the area where a mining lease is proposed to be allocated into forest land, land owned by the State Government, and land not owned by the State Government;
- (b) submit a proposal for grant of mining lease over the area identified and demarcated under clause (a) with the precise areas along with survey numbers, to the Central Government with a request to nominate a Government company or corporation owned or controlled by the Government for the grant of such mining lease:

Provided that where the Central Government is of the opinion that mining in such identified area is not required to be undertaken by a Government company or corporation owned or controlled by the Government and subject to provisions of rule 6, it may, by order in writing, declare so and in such cases, the provisions of sub-rule (2) shall apply *mutatis mutandis*, and the State Government may grant a mineral concession over such area in accordance with section 10B or section 11 or section 17A of the Act and the provisions of the Minerals (Evidence of Mineral Contents) Rules, 2015, the Mineral (Auction) Rules, 2015, the Mineral (Mining by Government Company) Rules, 2015 and the Minerals (Other than Atomic and Hydro Carbons Energy Minerals) Concession Rules, 2016, made under section 13:

Provided further that atomic minerals discovered during the mining operations shall be handled and disposed of in accordance with the directives issued by the Department regarding conservation of atomic minerals and the directives issued by the Board regarding radiological safety.

(2) Where on an examination of a prospecting report prepared in conformity with the parameters specified in **Schedule B** by the Directorate, in accordance with the provisions of sub-rule (5) of rule 4 indicates the grade of atomic minerals to be less than the threshold value, the State Government may grant a mineral concession over such area in accordance with the provisions of section 10B or section 11 or section 17A of the Act and the provisions of the Minerals (Evidence of Mineral Contents) Rules, 2015, the Mineral (Auction) Rules, 2015, the Mineral (Mining by Government Company) Rules, 2015 and the Minerals (Other than Atomic and Hydro Carbons Energy Minerals) Concession Rules, 2016, made under section 13:

Provided that atomic minerals extracted during the mining operations shall be handled and disposed of in accordance with the directives issued by the Department regarding conservation of atomic minerals and the directives issued by the Board regarding radiological safety.

6. Mining by a Government company or corporation owned or controlled by the Government.—(1) In response to the request made by the State Government under clause (b) of sub-rule (1) of rule 5, the Department shall intimate to the State Government in writing of the prospective lessee, along with a confirmation regarding grade of atomic minerals in such area being equal to or above the threshold value.

१Hkkx IIµ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

39

(2) The intimation referred to in sub-rule (1) shall be considered to be evidence to show the existence of mineral contents for atomic minerals in the area for the purposes of clause (b) of sub-section (2) of section 5 and a copy of such intimation shall also be sent to the prospective lessee.

(3) Notwithstanding anything contained in sub-rules (1) and (2), the Department shall reserve its rights, wherever required, to additionally notify region and deposit-specific threshold values in the case of uranium and thorium bearing minerals, and authorise the Ministry of Mines in the Central Government and the State Government concerned, subject to terms and conditions specified by the Department, to grant mining lease for one or more specific mineral present associated with atomic minerals.

(4) The prospective lessee shall within two months from the receipt of a copy of the intimation under sub-rule (2) shall submit an application to the State Government for grant of a mining lease in the format specified by the Department along with an application fees of ten thousand rupees per square kilometre.

(5) The State Government shall within ninety days of receipt of a duly completed application under sub-rule (4), communicate to the prospective lessee to submit an approved mining plan and other necessary clearances from the concerned Government agencies as required, for grant of mining lease:

Provided that for the private lands not owned by the prospective lessee which are available within the area demarcated by the State Government under clause (a) of sub-rule (1) of rule 5, the State Government shall not insist for furnishing consent of the concerned private land owners or obtaining the surface rights or the like, etc., during the issuance of order under sub-rule (5):

Provided further that the State Government shall obtain an undertaking or an affidavit from the prospective lessee stating that consents of the private land owner or surface rights will be obtained and furnished in a phased manner to the State Government prior to entering into the private lands for mining, and no mining shall be carried out in private lands not owned by lessee without obtaining the consents or surface rights.

(6) Upon receipt of such communication from the State Government under sub-rule (5), the prospective lessee shall –

- (a) prepare a mining plan in accordance with provisions of Chapter IV and submit the same for approval of the Directorate for approval under clause (b) of sub-section (2) of section 5, within a period of twelve months from the date of issuance of the communication from the State Government under sub-rule (5);
- (b) provide a performance security to the State Government in the form of a bank guarantee as per the format specified in **Schedule C** or as a security deposit, for an amount equivalent to 0.50 per cent. of the value of estimated resources, which performance security may be invoked by the State Government as per the terms and conditions of Mine Development and Production Agreement and the mining lease deed;
- (c) the performance security shall be adjusted every five years so that it continues to correspond to 0.50 per cent. of the reassessed value of estimated resources;
- (d) obtain approval or permit or no-objection or the like from the concerned Government authorities as may be required under applicable laws for commencement of mining operations;
- (e) sign an Mine Development and Production Agreement with the State Government as per the format specified by the Central Government after compliance of conditions specified in clauses (a), (b), (c) and (d) of this sub-rule; and
- (f) meet other conditions as may be specified by the State Government with the prior approval of the Department.

(7) The prospective lessee shall submit the documents in support of the fulfilment of the conditions specified in sub-rule (6), and within ninety days of receipt of such documents the State Government shall issue an order to the prospective lessee for granting the mining lease.

(8) The prospective lessee shall execute a mining lease deed within ninety days of receipt of the order of grant of lease as in sub-rule (7), and if no such deed is executed within the said period due to any default on the part of the prospective lessee, the State Government may revoke the order granting the lease and in that event the fee paid under sub-rule (4) shall be forfeited to the State Government.

(9) The mining lease deed shall be subject to the following conditions, namely:–

- (a) the mining lease deed shall be in the format specified in **Schedule D**;
- (b) the area of such mining lease shall be the same as specified by the State Government as in clause (a) of sub-rule (1) of rule 5 and no change in area shall be made by the State Government without the prior approval of the Department:

Provided that in the interest of development of atomic minerals, a Government company or corporation may acquire, in respect of one or more atomic minerals, one or more mining leases covering an area in excess of the area specified in clause (b) of sub-section (1) of section 6, if so permitted by the Department.

(c) in case the atomic minerals in grade equal to or more than the threshold value exists in association with other minerals, then the mining lease shall be granted for all such minerals including the atomic minerals to the same lessee.

(10) The date of the commencement of the period for which a mining lease is granted shall be the date on which a duly executed mining lease is registered.

(11) All mining leases granted under these rules, shall be granted for a period until the entire reserves of such minerals in the mine is exhausted:

Provided that an existing mining lease as on the date of coming into force of these rules granted to a Government company for extraction of prescribed substances including uranium or thorium, shall be deemed to have been granted for a period until the entire reserves of such minerals in the mine is exhausted.

(12) The State Government shall not include any new minerals found in an existing mining lease area granted to a Government company or corporation owned or controlled by the Government:

Provided that for such inclusion of a new mineral, the lessee shall obtain the permission from the Department through the concerned State Government, and after receipt of the permission from the Department, modify the mining plan including the new minerals and get the approval from the Directorate:

Provided further that where subsequent to grant of a mining lease, one or more mineral is found in an area and such minerals are included in the mining lease or a separate mining lease is granted for such minerals, the periods of lease for all minerals shall be co-terminus with that for which the first lease was originally granted.

7. Discovery of atomic minerals by holder of a mineral concession.— (1) If a holder of a mineral concession which has been granted pursuant to the rules made under section 13 discovers any atomic mineral, then he shall report the findings to the Directorate and the State Government in a format as may be prescribed by the Department.

(2) Upon receipt of a report under sub-rule (1), the Directorate shall compare the grade of atomic minerals in the concession area with the threshold value and,—

(a) if the grade of atomic minerals is less than the threshold value, the mineral concession may continue its operations; or

(b) if the grade of atomic minerals is equal to or above the threshold value, then,

(i) in case of a reconnaissance permit which was granted prior to 12th January, 2015, the holder of such reconnaissance permit shall be eligible to receive a prospecting licence followed by a mining lease, only if it is a Government company or corporation approved by the Department;

(ii) in case of a prospecting licence, including a prospecting licence-cum-mining lease under section 10A, the holder of such prospecting licence shall be eligible to receive a mining lease, only if it is a Government company or corporation approved by the Department; or

(iii) in case of a mining lease, the lessee shall continue mining for that particular mineral for which the mining lease was granted with the prior approval of the Department and in case of refusal by the Department the mining lease shall be terminated by the State Government as soon as the communication to this effect is received by the State Government:

Provided that the atomic minerals so discovered during the mining operations, shall be handled and disposed of in accordance with the directives issued by the Department regarding conservation of atomic minerals and the directives issued by the Board regarding radiological safety:

Provided further that in case the State Government terminates the reconnaissance permit or the prospecting licence or in case the State Government terminates the mining lease on grounds of refusal by the Department, the State Government shall pay the holder of the reconnaissance permit or the prospecting licence or the mining lease, as the case may be, such sum as in its opinion would represent a fair estimate of the expenditure incurred on such reconnaissance or prospecting or mining operations, as the case may be.

(3) If the Directorate finds the report submitted under sub-rule (1) to be insufficient for making a determination under sub-rule (2), it may seek additional information from the holder of mineral concession or direct the holder of mineral concession to continue exploration and submit findings with regard to such additional data as may be specified by the Directorate.

(4) On receipt of the findings and data referred to in sub-rule (3), the Directorate shall take action as specified in sub-rule (2).

¹Hkkx IIµ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

41

CHAPTER III

MINING PLAN FOR ATOMIC MINERALS

8. Mining plan.-(1) No mining operations shall be undertaken with respect to a mining lease granted under sub-rule (7) of rule 6, except in accordance with a mining plan which has been approved by the Directorate pursuant to clause (b) of sub-section (2) of section 5:

(2) If a mining lease granted under sub-rule (7) of rule 6 is also for minerals other than atomic minerals, then the lessee shall prepare a composite mining plan for mining of all the minerals specified in the mining lease, including the atomic minerals and in such a case, the composite mining plan shall be approved only by the Directorate pursuant to clause (b) of sub-section (2) of section 5.

(3) The composite mining plan shall be submitted for approval to the Director of the Directorate along with a non-refundable fee of one thousand rupees per square kilometer on a *pro-rata* basis of area over which the mining lease is applied for.

(4) The Directorate shall dispose of the application for approval of the mining plan within a period of ninety days from the date of receipt of a duly completed application:

Provided that if the Directorate finds an application incomplete and requires any modification, then the aforementioned period of ninety days shall be reckoned from the date on which a complete application is resubmitted.

(5) The mining plan shall contain –

- (i) the plan of the lease hold area showing the nature and extent of the mineral body;
- (ii) details of the geology and lithology of the area including mineral reserves of the area;
- (iii) the extent of manual mining or mining by the use of machinery and mechanical devices;
- (iv) the plan of the area showing natural water courses, limits of reserves and other forest areas and density of trees, if any, assessment of impact of mining activity on forest, land surface and environment including air and water pollution; details of scheme of restoration of the area by afforestation, land reclamation, use of pollution control devices and such other measures as may be directed by the Department or the State Government from time to time;
- (v) a tentative scheme of mining and annual programme and plan for excavation from year to year for five years;
- (vi) precise area or allocated area from the State Government marked in the cadastral maps.
- (vii) a progressive mine closure plan as provided in the Mineral Conservation and Development Rules, 1988 made under section 18; and
- (viii) any other matter which the Directorate may require to be provided in the mining plan.

(6) The mining plan shall be made in accordance with the format provided by the Directorate.

(7) The mining plan once approved shall be subject to review and updation at an interval of every five years starting from date of registration of the duly executed mining lease deed:

Provided that any modification of the mining plan shall be approved by the Directorate in accordance with the procedure specified in this rule regarding approval of a mining plan, and such an approval of the modified mining plan shall remain valid for the next five years term.

(8) The lessee shall submit, one hundred and eighty days before the expiry of every five years period specified in sub-rule (7), a mining plan for mining operations for the next period of subsequent five years.

(9) A holder of a mining lease may seek modifications in the approved mining plan as are considered expedient, keeping in view changes in the business environment; or in the interest of safe and scientific mining, conservation of minerals, for the protection of environment, increase in production, increase or decrease in lease area, any drastic changes in the beneficiation process or any other reason to be specified in writing by the holder of a mining lease and any modification to a mining plan shall be approved by the Directorate.

9. Preparation of mining plan.– (1) Every mining plan under clause (b) of sub-section (2) of section 5 shall be prepared by a person having the following qualifications and experience, namely:-

- (a) a degree in mining engineering or a post-graduate degree in geology granted by a University established or incorporated by or under a Central Act, a provincial Act or a State Act, including any institution recognised by the University Grants Commission under section 4 of the University Grants Commission Act, 1956 (3 of 1956) or any equivalent qualification granted by any University or institution outside India and recognised by the Central Government; and
- (b) professional experience of five years of working in a supervisory capacity in the field of mining after obtaining the degree.

(2) Modifications to a mining plan shall be carried out by a person qualified to prepare a mining plan.

(3) The lessee shall ensure that the mining plan is prepared in accordance with the format specified by the Directorate in this regard.

CHAPTER IV

TERMS AND CONDITIONS OF A MINING LEASE

10. Conditions.—(1) Every mining lease granted by the State Government shall be subject to the following conditions, namely:—

- (a) the lessee shall at all times comply with the provisions of the Act, the rules and all other applicable laws, including the Atomic Energy Act, 1962 (33 of 1962);
- (b) the lessee shall report in writing to the State Government and the Department, the discovery in the leased area of any mineral not specified in the lease, within sixty days of such discovery;
- (c) if any mineral not specified in the lease is discovered in the leased area, the lessee shall not win and dispose of such mineral unless such mineral is included in the lease or a separate lease is obtained therefor;
- (d) the lessee shall pay, for every year, except the first year of the lease, such yearly dead rent at the rates specified in the Third Schedule to the Act and if the lease permits the working of more than one mineral in the same area, the State Government shall not charge separate dead rent in respect of each mineral:

Provided that the lessee shall be liable to pay—

- (i) the aggregate of royalty in respect of all minerals; or
- (ii) the dead rent for the highest value mineral, whichever is higher;
- (e) the lessee shall also pay, for the surface area used by him for the purposes of mining operations, surface rent and water rate at such rate, not exceeding the land revenue, water and cesses assessable on the land, as may be specified by the State Government in the lease;
- (f) the lessee shall commence mining operations within two years from the date of execution of mining lease deed and shall thereafter conduct such operations in a proper, skilful and workman-like manner.

Explanation.—For the purposes of this clause, “mining operations” shall include the erection of machinery, laying of a tramway or construction of a road in connection with the working of the mine;

(g) subject to the provisions of the Act, the rules and any other applicable law, the lessee shall, with respect to the land leased to him, have the right for the purpose of mining operations on that land—

- (i) to work in the mines and conduct mining operations;
- (ii) to sink pits and shafts and construct buildings and roads;
- (iii) to erect plant and machinery;
- (iv) to quarry and obtain building and road materials and make bricks;
- (v) to use water and take timber;
- (vi) to use land for stacking purpose;
- (vii) to do any other thing specified in the lease;
- (h) the lessee shall at his own expenses erect and at all times maintain and keep in good repair boundary marks and pillars necessary to indicate the demarcation shown in the mining plan annexed to the lease;
- (i) the lessee shall construct and upkeep the boundary pillars as follows:—
 - (A) each corner of the lease area shall have a boundary pillar (corner pillar);
 - (B) there shall be erected intermediate boundary pillars between the corner pillars in such a way that each pillar is visible from the adjacent pillar located on either side of it;
 - (C) the distance between two adjacent pillars shall not be more than fifty metres;
 - (D) the pillars shall be of square pyramid frustum shaped above the surface and cuboid shaped below the surface;

¹Hkkx HkM 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

43

- (E) each pillar shall be of reinforced cement concrete;
- (F) the corner pillars shall have a base of 0.30m X 0.30m and height of 1.30m of which 0.70m shall be above ground level and 0.60m below the ground;
- (G) the intermediate pillars shall have a base of 0.25m X 0.25m and height of 1.0m of which 0.70m shall be above ground level and 0.30m below the ground;
- (H) all the pillars shall be painted in yellow colour and the top ten centimetres in red colour by enamel paint and shall be grouted with cement concrete;
- (I) shall mark on all corner pillars, distance and bearing to the forward and backward pillars and latitude and longitude;
- (J) each pillar shall have serial number in a clockwise direction and the number shall be engraved on the pillars;
- (K) the number of pillar shall be the number of the individual pillar upon the total number of pillars in the lease;
- (L) the tip of all the corner boundary pillars shall be a square of fifteen centimetres on which a permanent circle of ten centimetres diameter shall be drawn by paint or engraved and the actual boundary point

- shall be intersection of two diameters drawn at ninety degrees;
- (M) the lease boundary survey shall be accurate within such limits of error as the Director of the Directorate may specify in this behalf;
- (N) the location and number of the pillars shall also be shown in the surface and other plans maintained by the lessee; and
- (O) in case of forest area within the lease, the size and construction and colour of the boundary pillars shall be as per the norms specified by the Forest Department of the State Government in this behalf; (j) the lessee shall not carry on, or allow to be carried on, any mining operations at any point within a distance of fifty metres from any railway line, except under and in accordance with the written permission of the railway administration concerned, or under or beneath any ropeway or ropeway trestle or station, except under and in accordance with the written permission of the authority owning the ropeway, or from any reservoir, canal or other public works, or buildings, except under and in accordance with the prior permission of the State Government.

Explanation.—For the purposes of this clause the distance of fifty metres shall be measured in the case of railway, reservoir or canal, horizontally from the outer toe of the bank or the outer edge of the cutting, as the case may be, and in case of a building, horizontally from the plinth thereof;

- (k) the lessee shall not, in the case of village roads, including any track shown in the revenue record as village road, allow any working to be carried on within a distance of ten metres of the outer edge of the cutting except with the prior permission of the Deputy Commissioner or Collector or any other officer duly authorised by the State Government in this behalf and otherwise than in accordance with such directions, restrictions and additions, either general or special, which may be attached to such permission;
- (l) the lessee shall keep accurate and faithful accounts showing the quantity and other particulars of all minerals obtained and dispatched from the mine, the number and nationality of persons employed therein, and complete plans of the mine, and shall allow any officer authorised by the Department or the Directorate or the State Government in this behalf to examine at any time any account, plan and record maintained by him and shall furnish to the Central Government or the State Government with such information and returns as it or any officer authorised by it in this behalf may require:

Provided that in the case of minerals containing prescribed substances such information and returns shall be furnished only to the Director of the Directorate;

- (m) the lessee shall keep accurate records of all trenches, pits and drillings made by him in the course of mining operations carried on by him under the lease, and shall allow any officer authorised by the Central Government or the State Government to inspect the same and such records shall contain the following particulars, namely:—
- (i) the subsoil and strata through which such trenches, pits or drillings pass;
 - (ii) any mineral encountered;
 - (iii) such other particulars as the Central Government or the State Government may from time to time require;
- (n) the lessee shall strengthen and support, to the satisfaction of the railway administration concerned or the State Government, as the case may be any part of the mine which in its opinion requires such strengthening or support for the safety of any railway, reservoir, canal, road or any other public works or buildings;
- (o) the lessee shall allow any officer authorised by the Central Government or the State Government to enter upon any building, excavation or land comprised in the lease for the purpose of inspecting the same;
- (p) whenever mining is undertaken for beach sand mineral deposits or heavy mineral deposits available at in-land teris or areas containing atomic mineral in association with other minerals, the lessee shall maintain the records and details of the list of minerals mined, details of mining methodology and storage location of these minerals within the mining lease area, tonnage of such minerals, the mineralogy, complete material balance towards conservation of such minerals with respect to *in situ* mineral contents.

Provided that in case of beach sand minerals, the preferential separation of one or more of the heavy minerals of commercial interest from beach sand minerals would invariably result in enhancement of the relative content of other minerals and atomic minerals including monazite in the left-over beach sands and the lessee shall —

- (i) also maintain the details of quantity of waste and tailings generated during mining and mineral beneficiation activities;
- (ii) the storage location shall be clearly maintained in the plans and registers;
- (iii) the lessee shall not transfer or sell or dispose such materials without the prior approval of the Department regarding conservation of atomic minerals and the directives issued by the Board regarding radiological safety;

- (q) the lessee shall, in the matter of employment, give preference to the tribals and to the persons who become displaced because of the taking up of mining operations;
- (r) the lessee shall pay to the occupier of the surface of the land such compensation as may become payable under these rules;
- (s) the State Government or any lessee or person authorised by it in that behalf by the State Government shall have the right to —

(i) enter into and upon the leased land and to construct upon, over or through the same, any railways, tramways, roadways or pipelines for any purpose authorised by the State Government and to get from the said lands, stones, gravel, earth and other materials for making, maintaining and repairing such railways, tramways, roads or any existing railways and roads; and

(ii) to pass over or along any such railways, tramways, road lines and other ways, at all times, with or without horses, cattle or other animals, carts, wagons, carriages, locomotives or other vehicles for all purposes:

Provided that in the exercise of such liberty and power by such other lessee or person authorised by the State Government, no substantial hindrance or interference shall be caused to or with the liberties, powers and privileges of the lessee and fair compensation as may be mutually agreed upon or in the event of disagreement, as may be decided by the State Government, shall be made to the lessee for all loss or damage substantial hindrance or interference caused to the lessee by such other lessee or person authorised by the State Government;

(t) the lessee shall also comply with the provisions of any other rules made under section 11B.

(2) A mining lease may contain such other conditions as the State Government may deem necessary in respect of the following, namely:-

- (a) the time-limit, mode and place of payment of rents and royalties;
- (b) the compensation for damage to the land covered by the lease;
- (c) the felling of trees;
- (d) the restriction of surface operations in any area prohibited by any authority;
- (e) the notice by lessee for surface occupation;
- (f) the provision of proper weighing machines;
- (g) the entering and working in a reserved or protected forest;
- (h) the securing of pits and shafts;
- (i) the reporting of accidents;
- (j) the indemnity to Government against claims of third parties;
- (k) the delivery of possession of lands and mines on the surrender, expiration or determination of the lease;

¹Hkkx Πμ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

45

- (l) the time limit for removal of mineral, ore, plant, machinery and other properties from the lease hold area after expiration, or sooner termination or surrender or abandonment of the mining lease;
- (m) the forfeiture of property left after termination of lease;
- (n) the power to take possession of plant, machinery, premises and mines in the event of war or emergency;
- (o) filing of civil suits or petitions relating to disputes arising out of the area under lease.

(3) The State Government may, either with the prior approval of the Department or at the instance of the Department, impose such further conditions as may be necessary in the interests of development of atomic minerals or areas containing atomic minerals in association with other minerals.

(4) If the lessee does not allow entry or inspection under clauses (l), (m), or (o) of sub-rule (1), the State Government shall give notice in writing to the lessee requiring him to show cause within such time as may be specified in the notice why the lease should not be terminated and if the lessee fails to show cause within the aforesaid time to the satisfaction of the State Government, the State Government may terminate the lease with due permission from the Department.

(5) If the lessee holding a mining lease is convicted of illegal mining and there are no interim orders of any court of law suspending the operation of the order of such conviction in an appeal pending against such conviction in any court of law, the State Government may, without prejudice to any other proceedings that may be taken under the Act or the rules framed thereunder, after giving such lessee an opportunity of being heard and for reasons to be recorded in writing and communicated to the lessee, may opt for termination of the lease with due permission from the Department.

(6) If the lessee makes any default in the payment of royalty as required by section 9 or payment of dead rent as required by section 9A or payment of monies as required by section 9B or section 9C or commits a breach of any of the conditions specified in these rules, the State Government shall give notice to the lessee requiring him to pay the royalty or dead rent or remedy the breach, as the case may be, within sixty days from the date of the receipt of the notice and if the royalty or dead rent is not paid or the breach is not remedied within the said period, the State Government may, with prior permission from

the Department, without prejudice to any other proceedings that may be taken against him, terminate the lease and forfeit the whole or part of the performance security.

11. Grant of mining lease by State Government over areas containing atomic minerals.—(1) Prior to conduct of auction process for grant of mining lease or a prospecting licence-cum-mining-lease, over an area containing atomic minerals, with respect to which the Directorate has not made an assessment regarding threshold value, the State Government shall submit an application to the Directorate, specifying the particulars of the area proposed to be auctioned, the geological report and any other information as may be relevant.

(2) Within two months from the date of receipt of the application, the Directorate shall make an assessment pursuant to sub-rule (5) of rule 4 and follow the procedure specified in sub-rule (6) of rule 4.

12. Action for contravention or non-fulfillment of obligations.—(1) In the case of contravention or non-fulfillment of the obligations under the mining lease deed or the terms and conditions of mining lease, the State Government, under intimation to the Department, reserves the right to take appropriate action, including the right to terminate the mining lease or forfeit, in whole or part, the amount of performance security deposited by the holder of mining lease:

Provided that no such order shall be made without giving the lessee a reasonable opportunity of stating his case.

(2) If the lessee fails to carry out or perform any of its obligations hereunder or under the lease deed within the time specified in that behalf, the State Government may cause the same to be carried out or performed and the lessee shall pay the State Government, on demand, all expenses incurred in this regard by the State Government and the decision of the State Government as to such expenses shall be final.

(3) If the lessee fails to fulfill any of the terms and conditions hereunder or under the mining lease shall not give the Central Government or the State Government any claim against the lessee or be deemed a breach of the lease, in so far as such failure is considered by the relevant Government to arise from *force majeure*.

Explanation.—In this rule the expression “*force majeure*” means act of God, war, insurrection, riot, civil commotion, strike, earth quake, tide, storm, tidal wave, flood, lightning, explosion, fire, earthquake and any other happening which the lessee could not reasonably prevent or control.

(4) If there is any delay by the lessee to fulfill any of the terms and conditions hereunder or under the mining lease on account of a *force majeure* event, the period of such delay shall be added to the period fixed by these rules or the mining lease.

CHAPTER V

LAPSE, SURRENDER OR TERMINATION

13. Lapsing of mining lease.—(1) Subject to the provisions of this rule, the mining lease shall lapse where mining operations are not commenced within a period of two years from the date of execution of the mining lease, or is discontinued for a continuous period of two years after commencement of such operations.

(2) The lapsing of a mining lease shall be recorded through an order issued by the State Government and shall also be communicated to the lessee.

(3) Where a lessee is unable to commence the mining operations within a period of two years from the date of execution of the mining lease or discontinuation of mining operations for reasons beyond his control, he may submit an application to the State Government, explaining the reasons therefor, at least three months before the expiry of such period of two years:

Provided where the lessee has failed to make the application within the time stipulated above, the lease shall lapse on expiry of the period of two years.

(4) Application made under sub-rule (3) shall specify in detail:—

- (a) the reasons on account of which it is not possible for the lessee to undertake mining operations or continue such operations;
- (b) the manner in which such reasons are beyond the control of the lessee; and
- (c) the steps that have been taken by the lessee to mitigate the impact of such reasons.

(5) Every application under sub-rule (3) shall be accompanied by a fee of one lakh rupees.

(6) The State Government shall, after examining the adequacy and genuineness of the reasons for the non-commencement of mining operations or discontinuance thereof, pass an order, within a period of three months from the date of receipt of the application made under sub-rule (3) or the date on which the mining lease would have otherwise lapsed, whichever is earlier, either granting or rejecting such request:

Provided that such mining lease shall lapse on failure to undertake mining operations or inability to continue the same before the end of a period of six months from the date of the order of the State Government communicating that the lease has not lapsed.

(7) The State Government may, on an application made by the holder of a mining lease submitted within a period of six months from the date of its lapse and on being satisfied of the adequacy and genuineness of the reasons for non-commencement of mining operations or discontinuance thereof was beyond the control of the holder of the mining lease, revive the mining lease within a period of three months from the date of receiving the application from such prospective or retrospective date as it thinks fit but not earlier than the date of lapse of the mining lease:

Provided that no mining lease shall be revived for more than twice during the entire period of the mining lease.

(8) Application made under sub-rule (7) for revival of the mining lease shall specify in detail –

- (a) the reasons on account of which the lessee failed to undertake mining operations or continue such operations;
- (b) the manner in which such reasons are beyond the control of the lessee; and
- (c) the steps that have been taken by the lessee to mitigate the impact of such reasons:

Provided that the State Government may seek such additional information, documents or clarifications with respect to the application as it may require.

(9) Every application under sub-rule (7) shall be accompanied by a fee of one lakh rupees.

(10) The State Government shall have the right to enforce the performance security of the lessee to carry out protective, reclamation and rehabilitation measures in the leased area of the mining lease which has lapsed.

(11) The lessee shall pay any expenditure over and above the performance security incurred by the State Government, towards protective, reclamation and rehabilitation measures in the leased area of the mining lease which has lapsed.

14. Surrendering mining lease.– (1) The lessee may make an application for surrendering the entire area of the mining lease after giving a notice in writing of not less than twelve calendar months from the intended date of surrender and such application shall be accompanied by an approved final mine closure plan:

Provided that the lessee may make an application for surrendering a part of the area under mining lease only in case the lessee is unable to comply with any of the conditions of the mining lease.

(2) In case of surrendering a part of the mining lease area, the minimum area of the mining lease shall stand adjusted
 १Hkkx Πμ[k.M 3(i)° Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k 47
 accordingly.

(3) The State Government shall permit surrender of part of the area only with the prior approval from the Department.

(4) The State Government may allow surrendering a mining lease under sub-rule (1) if the following conditions are satisfied, namely:–

- (a) the lessee has submitted a certificate from the Director of the Directorate confirming implementation of the final mine closure plan approved by the Director of the Directorate, including protective, reclamation and rehabilitation work; and
- (b) all dues with respect to the mining lease have been settled.

(5) In case of surrender of the entire area of the mining lease, the performance security provided by the lessee shall be forfeited.

(6) The lessee shall pay any expenditure over and above the performance security incurred by the State Government, towards protective, reclamation and rehabilitation measures in the leased area of the mining lease which has been surrendered.

15. Termination.–(1) If the termination of a mining lease under the provisions of sub-section (1) of section 4A, or these rules, the State Government shall have the right to enforce the performance security of the lessee to carry out protective, reclamation and rehabilitation measures in the area.

(2) The lessee shall pay any expenditure over and above the performance security incurred by the State Government, towards protective, reclamation and rehabilitation measures in the leased area of the mining lease which has been terminated.

(3) The lessee may, after paying the rents, rates and royalties payable hereunder or under the lease deed, on the expiry or termination of the lease term or within six calendar months thereafter, whichever is earlier take down and remove for its own benefit, all or any ore mineral excavated during the currency of the lease, engines, machinery, plant, buildings structures, tramways, railways and other works, erections and conveniences which may have been erected, set up or placed by the lessee in or upon the leased lands and which the lessee is not bound to deliver to the State Government or which the State Government does not desire to purchase.

Provided that the provisions of this sub-rule shall not apply if the lease is terminated for default of the lessee.

(4) In case the lease is terminated for default of the lessee, he shall be entitled for claiming the benefit of sub-rule (3) at any time not earlier than three calendar months nor later than six calendar months.

(5) If at the end of six calendar months after the expiry or termination of the lease term there shall remain in or upon the leased land, any ore or mineral, engines, machinery, plant, buildings structures, tramways, railways and other work, erections and conveniences or other property which are not required by the lessee in connection with operations in any other lands held by it under prospecting licence or mining lease, the same shall, if not removed by the lessee within one calendar month of being notified to do so by the State Government, be deemed to become the property of the State Government and may be sold or disposed of in such manner as the State Government shall deem fit without liability to pay any compensation or to account to the lessee in respect thereof.

CHAPTER VI

COMPENSATION

16. Payment of compensation to owner of surface rights, etc.—(1) The holder of a mineral concession shall be liable to pay to the occupier of the surface of the land over which he holds the concession, such annual compensation as may be determined by an officer appointed by the State Government by notification in this behalf in the manner provided in sub-rules (2) to (6).

(2) In the case of agricultural land, the amount of annual compensation referred to in sub-rule (1) shall be worked out on the basis of the average annual net income from the cultivation of similar land for the previous three years.

(3) In the case of non-agricultural land, the amount of annual compensation referred to in sub-rule (1) shall be worked out on the basis of average annual letting value of similar land for the previous three years.

(4) The annual compensation referred to in sub-rule (1) shall be payable on or before such date as may be specified by the State Government in this behalf.

(5) The holder of a mineral concession may implement the provisions of rehabilitation and resettlement policy for payment of such compensation, approved by the State Government, as the case may be.

(6) If after the receipt of an offer of compensation for any damage which is likely to arise from the proposed operation of the lessee, the occupier of the surface of any part of the said land refuses his consent to the exercise of the rights and powers reserved to the State Government and granted by the mining lease, the lessee shall report the matter to the State Government and shall deposit with it the amount offered as compensation and if the State Government is satisfied that the amount of compensation is reasonable or if it is not so satisfied and the lessee shall have deposited with it such further amount as the State Government may consider reasonable, the State Government shall order the occupier to allow the lessee to enter upon the said land and carry out such operations as may be necessary for the purpose of the lease.

(7) In assessing the amount of such compensation, the State Government shall be guided by the provisions of the Right to Fair Compensation and Transparency in Land Acquisition, Rehabilitation and Resettlement Act, 2013 (30 of 2013).

(8) Whenever the private patta land owners provide the consent to the lessee for a short period towards surface operations over their lands, the payment of compensation amount for the said short period shall be arrived based on the mutually agreed terms and conditions.

(9) The amount of compensation referred to in sub-rule (8) shall be assessed either as per the prevailing rules of the State Government or by the officer appointed by the State Government.

(10) The payment of compensation amount by the lessee to the concerned land owner, undertaking the surface operations over the private land for a short period as per the consent and handing over back the said private land after completion of surface operations shall be as per the mutually agreed terms and conditions between the lessee and the private land owner.

(11) The lessee shall not enter into the private patta lands for surface operations without obtaining consent of the patta land owner.

17. Assessment of compensation for damage.—(1) After the termination of a mineral concession, the State Government shall assess the damage, if any, done to the land by the reconnaissance or prospecting or mining operations, as the case may be, and shall determine the amount of compensation payable by the mineral concession holder, as the case may be, to the occupier of the surface land.

(2) Every assessment referred to in sub-rule (1) shall be made within a period of one year from the date of termination of the mineral concession and shall be carried out by an officer appointed by the State Government by notification in this behalf.

CHAPTER VII

PAYMENTS

18. How fees and deposit are to be made.— Any amount payable under the Act or rules made thereunder except that payable in respect of revision petition under sub-rule (2) of rule 24 and mining plan under sub-rule (3) of rule 8, shall be paid in such manner as the State Government may specify in this behalf.

19. Payment of interest.— The State Government may, without prejudice to the provisions contained in the Act or rules made thereunder, charge simple interest at the rate of twenty-four per cent. per annum on any rent, royalty or fee other than the fee payable under sub-rule (2) of rule 23 and sub-rule (3) of rule 8, or other sum due to that Government under the Act or rules made thereunder or terms and conditions of any mineral concession from the sixtieth day of the expiry of the date fixed by that Government for payment of such royalty, rent, fee or other sum and until payment of such royalty, rent, fee or other sum is made.

20. Payments under mining lease.—(1) The lessee shall pay royalties to the State Government in the manner specified in section 9 of the Act or the dead rent specified in section 9A of the Act.

(2) The lessee shall pay, for every year, except the first year of the lease, such yearly dead rent at the rates specified in the Third Schedule to the Act and if the lease permits the working of more than one mineral in the same area, the State Government shall not charge separate dead rent in respect of each mineral:

Provided that the lessee shall be liable to pay.—

- (i) the aggregate of royalty in respect of all minerals; or
- (ii) the dead rent for the highest value mineral, whichever is higher.

(3) The lessee shall also pay, for the surface area used by him for the purposes of mining operations, surface rent and water rate at such rate, not exceeding the land revenue, water and cess assessable on the land, as may be specified by the State Government in the lease.

21. Payments under section 9B and section 9C.— In addition to the payments specified in rule 20, the holder of a mining lease shall be required to pay monies to the District Mineral Foundation and the National Mineral Exploration Trust in accordance with the provisions of sections 9B and section 9C, and the rules in relation thereto.

¹Hkkx IIμ[k.M 3(i)^o

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

49

22. Charging of royalty in case of minerals subjected to processing.—(1) If processing of run-of-mine mineral is carried out within the leased area, then, royalty shall be chargeable on the processed mineral removed from the leased area.

(2) If the run-of-mine mineral is removed from the leased area to a processing plant which is located outside the leased area, then, royalty shall be chargeable on the unprocessed run-of-mine mineral and not on the processed product.

23. Manner of payment of royalty on minerals on *ad valorem* basis.— (1) Every owner of mine, his agent, manager, employee, contractor or sub-lessee shall compute the amount of royalty on minerals where such royalty is charged on *ad valorem* basis in accordance with the provisions of sub-rule (2).

(2) For all atomic minerals in Part-B of the First Schedule to the Act, the State-wise sale prices for different minerals as published by the Department shall be the sale price for computation of royalty in respect of any mineral produced any time during a month in any mine in that State, and the royalty shall be computed as per the formula given below:

Royalty = $\sum$ Sale price of mineral (grade wise and State-wise) published by Department of Atomic Energy/ Indian Bureau of Mines / State Government X Rate of royalty (in percentage) X Total quantity of mineral of a particular grade dispatched (removed from the lease area):

Provided that if for a particular mineral, the information for a State for a particular month is not published by the State Government and the Department the latest information available for that mineral in the State shall be considered, failing which the latest information for all India for the mineral shall be considered.

CHAPTER VIII

REVISION

24. Application for revision.—(1) Any person aggrieved by —

- (a) any order made by the State Government or other authority in exercise of the powers conferred on it by or under the Act or these rules in relation to regulation of atomic mineral concessions and for purposes connected therewith; or
- (b) non-passing of any order specified in clause (a) within the time specified therefor may,

within three months from the date of communication of the order to him, or the date on which the time period for passing such order expired, apply to the Department in the form specified in **Schedule E** for passing of an order, pursuant to section 30.

(2) The application shall be accompanied by a bank draft for ten thousand rupees as application fee drawn on a Scheduled bank in the name of 'Pay and Accounts Officer, the Department payable at Mumbai or by way of a bank transfer to the designated bank account of the Department:

Provided that any such application may be entertained after the said period of three months if the applicant satisfies the Central Government that he had sufficient cause for not making the application within time.

(3) In every application under sub-rule (1) against the order of a State Government refusing to grant a mineral concession, any person to whom a mineral concession was granted in respect of the same area or for a part thereof, shall be impleaded as party.

(4) The applicant shall, along with the application under sub-rule (1), submit as many copies thereof as there are parties impleaded under sub-rule (3).

(5) On receipt of the application and copies thereof, the Central Government shall send a copy of the application to each of the parties impleaded under sub-rule (3) specifying a date on or before which he may make his representation, if any, against the revision application:

Provided that in case where the revision application has been filed for the reason that no order has been passed by the State Government within the time specified therefor, the Central Government shall before passing an order give the State Government an opportunity of being heard or to represent in the matter.

25. Orders on revision application.—(1) On receipt of an application for revision under rule 24, copies thereof shall be forwarded to the State Government or other authority and to all the impleaded parties calling upon them to make such comments as they may like to make within three months from the date of issue of the communication, and the State Government or other authority and the impleaded parties, while furnishing comments to the Central Government shall simultaneously endorse a copy of the comments to the other parties.

(2) The comments received from any party under sub-rule (1) shall be forwarded to the other parties for making such further comments as they may like to make within one month from the date of issue of the communication and the parties making further comments shall forward such further comments to all the other parties.

(3) The revision application, the communications containing comments and counter-comments referred to in sub-rule (1) and (2) shall constitute the records of the case.

(4) After considering the records referred to in sub-rule (3), the Central Government may confirm, modify or set aside the order or pass such other order in relation thereto as the Central Government may deem just and proper.

(5) The Central Government may for sufficient cause, pending the final disposal of an application for revision, stay the execution of the order against which any revision application has been made.

(6) If in any event the orders of the State Government are revised, reviewed or cancelled by the Central Government in pursuance of proceedings under these rules, the lessee shall not be entitled to compensation for any loss sustained by the lessee in exercise of the powers and privileges conferred upon the lessee by the lease deed.

CHAPTER IX

MISCELLANEOUS

26. Power to rectify apparent mistakes.—Any clerical or arithmetical mistake in any order passed by the Government or any other authority or officer under these rules and any error arising therein from accidental, inadvertent slip or omission, may, within two years from the date of the order, be corrected by the Government, authority or officer, as the case may be:

Provided that no order prejudicial to any person shall be passed unless he has been given a reasonable opportunity of being heard.

27. Copies of leases and annual returns to be supplied to Government.—(1) A copy of every mining lease granted under these rules shall be supplied by each State Government within two months of such grant or renewal to the Director of the Directorate and the Director General Mines Safety.

(2) A consolidated annual return of all mining leases granted under these rules shall also be supplied by each State Government to the Director, Atomic Minerals Directorate, Hyderabad and the Director General Mines Safety in such form as may be specified by him, not later than the 30th day of June following the year to which the return relates.

28. Change of name, address to be intimated.—The holder of a mining lease shall intimate to the Department and State Government within sixty days any change that may take place in his name and other particulars in the format specified in Schedule F.

29. Prior approval of Central Government to be obtained through State Government.—Where in any case, prior approval of the Central Government is required under the Act or these rules, the application for such approval shall be made to the Central Government through the State Government.

30. Facilities for training of students.—(1) Every owner, agent or manager of a mine shall permit researchers or students of mining, geological and mineral processing institutions approved by the Department or the Central Government to conduct research or acquire practical training of the mines and plants operated by them and provide all necessary facilities required for the training of such students.

(2) The applications for research or training from students of institutions teaching mining, geology or mineral processing shall be forwarded to the owner, agent or manager of a mine through the Principal or Head of the Institution.

(3) The cases of refusal to provide facilities for research or practical training by any owner, agent or manager of a mine shall be referred to the Secretary, Department of Atomic Energy, Mumbai, for his decision within a period of thirty days.

31. Geophysical data to be supplied to Department.— (1) A holder of mining lease or a person conducting prospecting operations, as the case may be, shall furnish all information pertaining to investigations of atomic minerals collected by him during the course of exploration and mining operations to the Director, Atomic Minerals Directorate for Exploration and Research, Hyderabad, Director General, Geological Survey of India, and to the Director of Geology and Mining of the State, in which the mining operations are carried on.

(2) The data or information referred to in sub-rule (1) shall be furnished every year reckoned from the date of commencement of the period of the mining lease.

32. Registers.—A register of mining leases granted under these rules shall be maintained by the State Government in the format specified in **Schedule G**, which shall be accessed by the Directorate, the Department and the Board, whenever required, for the purpose of ensuring conservation of atomic minerals, and enforcing radiological safety regulations, respectively.

१Hkkx Iµ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

51

33. Amalgamation of leases.—(1) The State Government may, in the interest of mineral development, and with reasons to be recorded in writing, permit amalgamation of two or more adjoining leases held by a lessee:

Provided that the period of amalgamated leases shall be co-terminus with the lease, whose period will expire first:

Provided further that prior approval of the Department shall be obtained for such amalgamation.

(2) An application for the amalgamation of mining leases pending at the commencement of these rules shall be disposed of in accordance with these rules.

34. Boundaries below surface.—The boundaries of the area covered by a mining lease shall run vertically downwards below the surface towards the centre of the earth.

35. Pending applications.—An application pending at the commencement of these rules, which is not inconsistent with the Act and these rules shall be disposed of in accordance with the provisions of these rules.

36. Power of the Department to amend Schedule A.—The Department may, by notification in the Official Gazette, amend **Schedule A** so as to amend the threshold value, as may be specified in the notification.

CHAPTER X

PENALTY

37. Penalty.—Any contravention of these rules shall be punishable with imprisonment for a term which may extend to two years or with fine which may extend to five lakh rupees, or with both, and in the case of a continuing contravention, with additional fine which may extend to rupees fifty thousand for every day during which such contravention continues after conviction for the first such contravention.

SCHEDULE A

PARTICULARS OF THRESHOLD VALUE FOR ATOMIC MINERALS

(See rule 2 (1) (m) and rule 36)

1.	Beryl and other beryllium - bearing minerals	0.1% BeO (1000 ppm BeO) of the rock or 10kg/tonne Beryl in excavated material
2.	Lithium bearing minerals	0.5% (5,000ppm) Li ₂ O in ore, except brine (200 ppm Li, i.e. 200 g/tonne Li).
3.	Minerals of the 'rare earths' group containing uranium and thorium	60 ppm U ₃ O ₈ and/or 250 ppm ThO ₂ in ore.
4.	Niobium-bearing minerals	100 ppm (Nb+Ta) ₂ O ₅ (100 g/tonne) in ore.
5.	Phosphorites and other phosphatic ores containing	60 ppm U ₃ O ₈ in ore.
6.	Pitchblende and other	60 ppm U ₃ O ₈ in ore, except in Singhbhum Shear zone in Jharkhand where the threshold value will be 150 ppm U ₃ O ₈ in ore.
7.	Titanium bearing minerals and ores (ilmenite, rutile and	In case of titanium-bearing minerals occurring in hard rock, 60 ppm U ₃ O ₈ and/or 250 ppm ThO ₂ in the rock.
8.		100 ppm (Ta+Nb) ₂ O ₅ (100 g/tonne) in ore.
9.	Uraniferous allanite, monazite and other thorium minerals	60 ppm U ₃ O ₈ and/or 250 ppm ThO ₂ and/or 0.75% monazite in Total Heavy Minerals in Beach Sand Minerals and other placer deposits.
10.	Uranium bearing tailings left over from ores after extraction of copper and gold, ilmenite and other	60 ppm U ₃ O ₈ and/or 250 ppm ThO ₂ .
11.	Zirconium bearing minerals and ores including zircon.	0.75% monazite in Total Heavy Minerals, in the case of Zirconium bearing minerals and ores including zircon, occurring in Beach Sand Minerals in association with monazite, In other cases, zircon containing less than 2000 ppm of Hafnium

SCHEDULE B**PARAMETERS FOR ESTABLISHING THE EXISTENCE OF MINERALIZATION FOR ATOMIC MINERALS****[See rules 4(1), 4(4), 5(1) and 5(2)]**

Geological assessment.-The purpose of Geological assessment is to identify mineralization, to establish continuity, quality and quantity of mineral deposit for feasibility assessment in order to define an investment opportunity. The Economic viability is generally evaluated initially by assumptions indicating that deposit is of intrinsic interest.

Part - I: Explanations:- (1) The exploration for any mineral deposit essentially involves four steps, namely, Reconnaissance Survey (G4), Preliminary Exploration (G3), General Exploration (G2) and Detailed Exploration (G1). These provide resource and reserves categories reflecting increasing degree of geological assurance which can be documented in respective geological reports.

(2) Depending upon the extent of area to be explored, topography, time available and the level of details required one step can be combined with another or more steps of exploration.

(3) Reconnaissance Survey (G4) identifies areas of enhanced mineral potential based primarily on results of regional geological studies, regional geological mapping, airborne and indirect methods, preliminary field inspection, and geological inference and extrapolation. The objective is to identify mineralised areas worthy of further investigation towards deposit identification.

(4) Preliminary Exploration (G3) is the systematic process of searching for a mineral deposit by narrowing down areas of promising enhanced mineral potential. The methods utilised are outcrop identification, geological mapping, and indirect methods such as geophysical and geochemical studies. Limited wide spaced pitting or trenching or drilling with sampling to identify a deposit which will be the target for further exploration. Estimates of quantities are inferred, based on interpretation of geological, geophysical, geochemical and geo-technical investigations results.

(5) General Exploration (G2) (Prospecting) involves the initial delineation of an identified deposit. Methods used include surface mapping, pitting or trenching or drilling followed by sampling for evaluation of mineral quantity and quality (including mineralogical tests on laboratory scale if required), and limited interpolation based on indirect methods of investigation. The objective is to establish the main geological features of a deposit, giving a reasonable indication of continuity and providing an initial estimate of size, shape, structure and grade. The degree of accuracy should be sufficient for deciding whether a Prefeasibility Study and Detailed Exploration are warranted.

(6) Detailed Exploration (G1) involves the detailed three-dimensional delineation of a known deposit achieved through sampling, such as from outcrops, pits, trenches, boreholes, exploratory mining (wherever required) shafts and tunnels etc. Sampling grids are closely spaced such that size, shape, structure, grade, and other relevant characteristics of the deposit are established with a high degree of accuracy. Processing tests involving bulk sampling from exploratory mining may be required.

(7) Mineral Resource (G4 and G3) is a concentration of solid material of economic interest in or on the Earth's crust in such form, grade or quality and quantity that there are reasonable prospects for eventual economic extraction. The location, quantity, grade or quality, continuity and other geological characteristics of a mineral resource are known, estimated or interpreted from specific geological evidence and knowledge, including sampling.

(8) Mineral resources are sub-divided, in order of increasing geological confidence into Inferred, Indicated and Measured categories.

(9) Inferred Mineral Resource (G4) is that part of a Mineral Resource for which quantity and grade or quality are estimated on the basis of limited geological evidence and sampling achieved through a stage of preliminary exploration.

(10) An Inferred Resource has a lower level of confidence than that applying to an Indicated Mineral Resource. The majority of Inferred Mineral Resources could be upgraded to Indicated Mineral Resources with continued exploration.

(11) Indicated Mineral Resource (G3) is that part of a Mineral Resource for which quantity, grade or quality, densities, shape and physical characteristics are estimated with sufficient confidence to allow the application of Modifying Factors in sufficient detail to support mine planning and evaluation of the economic viability of the deposit.

(12) Geological evidence is derived from adequately detailed and reliable exploration, sampling and testing and is sufficient to assume geological and grade or quality continuity between points of observation.

(13) Measured Mineral Resource (G3 and G2) is that part of a Mineral Resource for which quantity, grade or quality, densities, shape, and physical characteristics are estimated with confidence sufficient to allow the application of Modifying Factors to support detailed mine planning and final evaluation of the economic viability of the deposit.

(14) Geological evidence is derived from detailed and reliable exploration, exploratory mining, sampling and testing and is sufficient to confirm geological and grade or quality continuity between points of observation.

 ${}^1\text{Hk} \times \Pi \mu[\text{k.M } 3(\text{i})^0$

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

53

(15) A Measured Mineral Resource has a higher level of confidence than that applying to either an Indicated Mineral Resource or an Inferred Mineral Resource. It may be converted to a Measured Mineral Reserve or to an Indicated Mineral Reserve.

(16) Mineral Reserve (G2 and G1) is the economically mineable part of Mineral Resource. It includes diluting materials and allowances for losses, which may occur when the material is mined or extracted and is defined by studies at Pre-Feasibility or Feasibility level as appropriate that include application of Modifying Factors.

(17) Probable Mineral Reserve (G2) is the economically mineable part of an Indicated Mineral Resource, and in some circumstances, a Measured Mineral Resource.

(18) The confidence in the Modifying Factors applying to a Probable Mineral Reserve is lower than that applying to a Proven Mineral Reserve.

(19) Proven Mineral Reserve (G1) is the economically mineable part of a Measured Mineral Resource. A Proven Mineral Reserve implies a high degree of confidence in the Modifying Factors.

(20) Modifying Factors are considerations used to convert Mineral Resources to Mineral Reserves. These include, but are not restricted to, mining, processing, end use, cut-off grade, threshold value, metallurgical, infrastructure, economic, marketing, legal, environmental, social and governmental factors.

(21) Pre-Feasibility Study is a study of a range of options for the technical and economic viability of a mineral project that has advanced to a stage where a preferred mining method, in the case of underground mining, or the pit configuration, in the case of an open pit, is established and an effective method of mineral processing is determined. It includes a financial analysis based on reasonable assumptions on the Modifying Factors and the evaluation of any other relevant factors which are sufficient, to determine if all or part of the Mineral Resource may be converted to a Mineral Reserve at the time of reporting. A Pre-Feasibility Study is at a lower confidence level than a Feasibility Study.

(22) Feasibility Study is a detailed comprehensive technical and economic study of the selected development option for a mineral project that includes appropriately detailed assessments of applicable Modifying Factors together with any other relevant operational factors and detailed financial analysis that are necessary to demonstrate at the time of reporting that extraction is reasonably justified (economically mineable). The confidence level of the study will be higher than that of a Pre-Feasibility Study.

(23) Economic viability: The Economic viability of a deposit shall depend on the activities indicated in Part II to Part IV and shall act as a qualifier based on the activities taken up.

(24) “Cut off grade” means the minimum economic assay grade of the mineral for a deposit below which the mining operations become unviable in the present market dynamics or end use quality. It may vary from time to time and deposit to deposit depending upon market requirement.

Part-II: Geological Parameters for exploration

1	Aerial reconnaissance: Satellite imagery/ remote sensing/ airborne geophysical survey etc. using appropriate technology (applicable mainly for reconnaissance survey (G4) stage)
	Geological survey (Mapping): On 1 : 50,000 or smaller scale for reconnaissance (G4) stage; on 1 : 10,000 or larger scale for preliminary exploration (G3) stage; 1:4000 / 1 : 5,000 or larger scale for general exploration (G2) stage; on 1 : 2,000 or larger scale for detailed exploration (G1) stage.
	Ground Geophysical and Geochemical survey: Geophysical and geochemical survey using appropriate techniques as may be necessary
	Technological :Exploration and sampling using appropriate techniques from locations such as outcrops, trenches, pits, old workings and drill holes. The sampling locations are spaced suitably (in a grid pattern to the extent possible and may be modified depending on structural complexity) for establishing existence of ore body and its lateral and vertical continuity. For General (G2) and detailed (G1)stages of exploration, the depth continuity of mineralisation may be considered limited to the depth up to which direct evidence of mineralization is established. The lateral extension to be considered for resource assessment shall depend on geological considerations and in any case shall not be more than 50% of the grid spacing of the probe points. Assessment based on selected information such as isolated assays, isolated drill holes, assays of panned

	Sampling and sub-sampling: (a) Random grab/chip/channel sampling from surface exposure/escarpments/ nallah cuttings/ pit/channel etc. for reconnaissance stage. (b) Systematic sampling from pits/trenches/outcrops/workings etc. spaced closely enough to confirm geological and grade continuity for other stages of geological assessment. (c) Litho-logging and gamma-ray logging of boreholes as the case may be, sampling of drill core/chip samples at regular interval, preferably metre wise or less for the mineralized portions. ~~(d) The drill techniques to be deployed shall depend on the rock type to be penetrated and with a view to~~
	Assay data and Laboratory tests: Analysis of all samples generated for major radicals appropriate to the mineral under investigation. Analysis of by-products and deleterious elements wherever necessary.
	Petrographic and Mineragraphic studies: Petrographic analysis of mineralized portions to ascertain the rock types and mineral assemblages including grain size, texture, gauge and its liberation characteristics etc. if considered necessary.
	Bulk density study: The bulk density must be measured by methods that adequately account for void spaces (vugs, porosity and other void spaces)
	Bulk Sampling for Beneficiation studies: Bulk sampling if necessary for testing processing technology.
	Environmental setting.-details about local infrastructure, host population, historical sites, forests, sanctuaries, national park and base line information on environmental setting of the area to be collected.
	Any other relevant data: groundwater, geotechnical and rock characteristics and other data that may be relevant

Part –III

Suggested norms for Exploration by drilling for different types of Uranium, Thorium and Rare Metal and Rare Earth Element deposits

Type of deposit and Principal Minerals	G4 stage	G3 stage	G2 stage	G1 stage	Remarks
I. Bedded Stratiform and Tabular Uranium Deposits of Regular and irregular Habit, and classified as: Sandstone type, Carbonate hosted, Phosphate, Black	Scout drilling/ pitting/ trenching as per necessity	Bore-hole grid/ sample spacing may be atleast 800m x 400m or atleast 5 boreholes per sq km	Bore-hole grid/ sample spacing may be atleast 400m x 200m or atleast 18 boreholes per sq km	Bore-hole grid/ sample spacing may be atleast 200m x 100m or atleast 65 boreholes per sq km	Exploratory mine openings- open pit or underground development with bulk determination of grades at G1 stage as per requirement
II. Lenticular Uranium bodies of all dimensions including bodies occurring in linear zones of composite veins, lenses, pockets, stockworks, and classified as: Metamorphite, Metasomatite, Unconformit-related.	Scout drilling/ pitting/ trenching as per necessity	Bore-hole grid/ sample spacing may be atleast 400m x 200m or atleast 18 boreholes per sq km	Bore-hole grid/ sample spacing may be atleast 200m x 100m or atleast 65 boreholes per sq km	Bore-hole grid/ sample spacing may be atleast 100m x 50m or atleast 230 boreholes per sq km	Exploratory mine openings- open pit or underground development with bulk determination of grades at G1 stage as per requirement

¹Hkkx Iµ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

55

hematite breccia complex type, Volcanic related and Collapse Breccia Pipe types of uranium deposits.					
--	--	--	--	--	--

III. Rare metal and REE pegmatites, reefs and veins/pipes, Carbonatite and other Alkali Igneous Rocks	Scout drilling/ random pitting/ trenching as per necessity	10 to 25 pits/ trenches/ per sq.km. In case of drilling, borehole spacing may be 40m x 20m or 40m x 40m.	Pitting/ Trenching/ preferably at 20m interval. In case of drilling, borehole spacing may be 20m x 10m or 20m	Exploratory open pit or boreholes at 10m x 10m or closer or underground sampling with bulk determination of grades and recovery	
IV. Beach and Inland Placer Deposits Beach, dune and inland (Teri/Red Sands) placer concentration of heavy mineral deposits (ilmenite, leucoxene, rutile, magnetite, monazite, garnet, sillimanite and zircon etc.) formed by wave and	Random sampling as per availability of sample points	Auger/Conrad/Bunka/ Dormer/Vibrocore/ RCD drilling >2000-3000m x 200m	Auger/Conrad/Bunka/ Dormer/Vibrocore/ RCD drilling: G.2.1.: >200-1000m x 100-200m grid G.2.2.: >1000-2000m x 200m grid	Auger/Conrad/Bunka/ Dormer/Vibrocore/ RCD drilling 200m x 100m grid or closer.	

Part-IV

A Geological Report for estimation and reporting of Mineral Resources integrating all data of exploration, sampling and testing generated through aerial, geophysical, geochemical, geological surveys and technological study may be undertaken for every stage of geological study i.e. from G4 to G1 for assessing the resources. The report on these studies generally incorporates the following.

S. No.	Criteria	Explanation
1	Title and Ownership	- Name, address of the prospector including E-mail ID, telephone number.
2	Details of the area	-Details of period of prospecting/mineral right if any. -Village, District, State - Survey of India Toposheet No. Geo-coordinates of the area of all corner points - cadaster details of the area with land use
3	Infrastructure and Environment	-Local infrastructure, host population, historical sites, forests, sanctuaries, national park and environmental settings of the area
4	Previous Exploration	-Details Of previous exploration carried out by other agencies/parties. - In case the area forms part of the area covered under earlier exploration then the same
5	Geology	-Brief regional geology of the area outlining the broad geological, structural frame work.- Deposit type, geological setting and details of dip, strike, old workings, surface exposures etc. of the area under study also of adjoining nearby areas if available and the information is likely to have an impact on the area under study. -Reliable geological map of appropriate scale with geo-coordinates showing major lithological units, structural and tectonic features; extent of surface mineralisation, structure location of boreholes, pits, trenches, old workings and other geo-coordinates - mineralization.
		- The extent and variability of the mineralization expressed as length (along strike or otherwise), plan width, and depth below surface to the upper and lower limits of the
6	Aerial/ground geophysical/ geochemical	Details of aerial, geophysical and geochemical survey results taken up if any.
7	Technological investigation	-Details of technological investigation (pitting/trenching/drilling and other details) -Data spacing for reporting of Exploration Results: Whether the data spacing and distribution is based on section I and II and is sufficient to establish the degree of geological and grade continuity appropriate for the Mineral Resource estimation
8	Sampling Technique	Nature and quality of sampling (For example cut channels, random chips and other sampling) and measures taken to ensure sample representivity

9	Drilling Technique and drill employed	-Drill type (For example core, reverse circulation, open-hole hammer, rotary air blast, auger, Bangka, sonic and other drilling techniques) and details (For example core diameter, triple or standard tube, collar R.L, sampling, azimuth, inclination, coordinates of bore holes and other details). -Whether core and chip sample recoveries have been properly recorded and results assessed. -Measures taken to maximize sample recovery and ensure representative nature of the samples. Logging.-Whether core and chip samples have been logged to a level of detail to support
10	Sub-sampling techniques and sample preparation	-If core, whether cut or sawn and whether quarter, half or all core taken. -If non-core, whether riffled, tube sampled, rotary split etc. and whether sampled wet or dry. -For all sample types, the nature, quality and appropriateness of the sample preparation technique. -Quality control procedures adopted for all sub-sampling stages to maximize representivity of samples. -Measures taken to ensure that the sampling is representative of the in situ material collected.
11	Quality of assay data and laboratory tests	The nature, quality and appropriateness of the assaying and laboratory procedures used and whether the technique is considered partial or total. Nature of quality control procedures adopted (For example standards, blanks, duplicates, external laboratory checks) and whether acceptable levels of accuracy (that is lack of bias)
12	Moisture	-Whether the tonnages are estimated on a dry basis or with natural moisture, and the method of determination of the moisture content
13	Bulk Density	Whether assumed or determined. If assumed, the basis for the assumptions. If determined, the method used, whether wet or dry, the frequency of the measurements, the nature, size and representativeness of the samples
14	Resource estimation techniques	- Discussion on sufficient data density to assure continuity of mineralization and synthesis adequate data base for estimation procedure used. -The nature and appropriateness of the estimation technique(s) applied and key assumptions, including treatment of extreme grade values, domaining, Interpolation parameters, maximum distance of extrapolation from data points. -The basis for the classification of the Mineral Resources into varying confidence categories. -The assumptions made regarding recovery of byproducts. -Detailed description of the method used and the assumptions made to estimate tonnages and grades (section, polygon, inverse distance, geostatistical, or other method). -Description of how the geological interpretation was used to control the resource estimates. -Discussion of basis for using or not using grade cutting or capping. If a computer method

Hkkx Iµ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vIk/kj.k

57

		their compatibility with the geological interpretation shall be discussed. Experience gained in applying geostatistics to similar deposits should be taken into account. -Data verification and /or validation procedures used.
15	Further work	-The nature and scale of planned further work (For example tests for lateral extensions or depth extensions or largescale step-out drilling)
16	Annexures/ enclosures to the report	The report shall include all relevant data including maps, sections, logs, analysis reports photographs etc. in support of the estimates made
17	Any Other Information	Any other information as may be available or required by any authority.

Part-V.-Criteria for Pre-feasibility or Feasibility Report

The Criteria for pre-feasibility/feasibility report (to be prepared and submitted by the mining companies) for estimation and reporting of mineral reserves (the criteria listed in Part-IV shall also be applicable for estimation and reporting of mineral reserves). The Geological Study Report shall also form a part of the prefeasibility/feasibility report.

S. No.	Criteria	Explanation
--------	----------	-------------

1	Mineral Resource estimate for conversion to Mineral	- Description of Mineral Resource estimate used as a basis for the conversion to a Mineral reserve. - Clear statement as to whether the Mineral Resources are reported additional to, or inclusive of the Mineral Reserves. -The type and level of study undertaken to enable Mineral Resources to be converted to <u>Mineral Reserves, that is Pre-feasibility/ Feasibility level.</u>
2	Cut off Parameters	-The basis of the adopted cut-off grade(s) or quality parameters applied, including the basis, if appropriate, of equivalent metal formulae and the threshold values prescribed by <u>Indian Bureau of Mines.</u>
3	Mining factors or assumptions.	-The method and assumptions used to convert the Mineral Resource to a Mineral Reserve (that is either by application of appropriate factors by optimisation or by preliminary or detailed design supported with conceptual plan for mining). -The choice of, the nature and the appropriateness of the selected mining method(s), the size of the selected mining unit (length, width, height) and other mining parameters including associated design issues such as pre-strip, access, and other associated designations. -The assumptions made regarding geotechnical parameters (For example pit slopes, stope sizes, and other geo technical parameters), grade control and pre-production drilling. -The major assumptions made and Mineral Resource model used for pit optimisation (if appropriate). -The mining dilution factors, mining recovery factors, and minimum mining width used. -The infrastructure requirements of the selected mining methods. Where available, the
4	Metallurgical factors or assumptions.	-The metallurgical process proposed and the appropriateness of that process to the type of deposit. -The nature, amount and representativeness of metallurgical test work undertaken and the metallurgical recovery factors applied. -Any assumptions or allowances made for deleterious elements. -The existence of any bulk sample or pilot scale test work and the degree to which such samples are representative of the orebody as a whole. -The tonnages and grades reported for Mineral Reserves should state clearly whether these
5	Cost and revenue factors	-The derivation of, or assumptions made, regarding projected capital and operating costs. - The assumptions made regarding revenue including head grade, metal or commodity price exchange rates, transportation and treatment charges, penalties, and other
		- revenue factors. - The allowances made for royalties payable, both Government and private. -
6	Market assessment	-The demand, supply and stock situation for the particular commodity, consumption trends and factors likely to affect supply and demand into the future. -A customer and competitor analysis along with the identification of likely market windows for the product. -Price and volume forecasts and the basis for these forecasts. -<u>For industrial minerals the customer specification, testing and acceptance</u>
7	Other modifying factors	-The effect, if any, of natural risk, infrastructure, environmental, legal, marketing, social or governmental factors on the likely viability of a project and/or on the estimation and classification of the Mineral Reserves. -The status of titles and approvals critical to the viability of the project, such as mining leases, discharge permits, government and statutory approvals. -<u>Environmental descriptions of anticipated liabilities. Location plans of mineral rights</u>
8	Classification.	-The basis for the classification of the Mineral Reserves into varying confidence categories. - Finalization of estimates of grade wise mineable quantities in contemplation with proposed preliminary mine design/conceptual plan subject to all necessary approvals/contracts have been confirmed or there are reasonable expectations that all such approvals/contracts will be obtained within a reasonable timeframe and with certification that Economic viability is not affected by short-term

SCHEDULE C

FORMAT OF BANK GUARANTEE FOR PERFORMANCE SECURITY

[See rule 6(6)(b)]

[Reference number of the bank]

[Date]

To

The Governor of [Name of State]

[address]

WHEREAS

- A. [Name], a government [company/corporation] incorporated in India under the Companies Act, (1956/2013) with corporate identity number [CIN of the Applicant], whose registered office is at [address of registered office], India and principal place of business is at [address of principal place of business, if different from registered office] (the “Applicant”) is required to provide an unconditional and irrevocable bank guarantee for an amount equal to INR [figures] (Indian Rupees [words]) as a performance security valid until [date of expiry of performance bank guarantee] (“Expiry Date”).
- B. The Performance Security is required to be provided to The Governor of [Name of State], (the “State”) for discharge of certain obligations under the [reference to the principal documents – mining lease, mine development and production agreement] dated, [date] with respect to [particulars of concession] (collectively the “Concession Document”).
- C. We, [name of the bank] (the “Bank”) at the request of the Applicant do hereby undertake to pay to the State an amount not exceeding INR [figures] (Indian Rupees [words]) (“Guarantee Amount”) to secure the obligations of the Applicant under the Concession Document on demand from the State on the terms and conditions herein contained herein.

NOW, THEREFORE, the Bank hereby issues in favour of the State this irrevocable and unconditional payment bank guarantee (the “Guarantee”) on behalf of the Applicant in the Guarantee Amount:

1. The Bank for the purpose hereof unconditionally and irrevocably undertakes to pay to the State without any demur, reservation, caveat, protest or recourse, immediately on receipt of first written demand from the State, a sum or sums (by way of one or more claims) not exceeding the Guarantee Amount in the aggregate without the State needing to prove or to show to the Bank grounds or reasons for such demand for the sum specified therein
- 1Hkkx 11µ[k.M 3(i)° Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k 59

and notwithstanding any dispute or difference between the State and Applicant on any matter whatsoever. The Bank undertakes to pay to the State any money so demanded notwithstanding any dispute or disputes raised by the Applicant in any suit or proceeding pending before any court or tribunal relating thereto the Bank’s liability under this present being absolute and unequivocal.

2. The Bank acknowledges that any such demand by the State of the amounts payable by the Bank to the State shall be final, binding and conclusive evidence in respect of the amounts payable by Applicant to the State under the Concession Document.
3. The Bank hereby waives the necessity for the State from demanding the aforesaid amount or any part thereof from the Applicant and also waives any right that the Bank may have of first requiring the State to pursue its legal remedies against the Applicant, before presenting any written demand to the Bank for payment under this Guarantee.
4. The Bank further unconditionally agrees with the State that the State shall be at liberty, without the Bank’s consent and without affecting in any manner the Bank’s obligation under this Guarantee, from time to time to:
- vary or modify the terms and conditions of the Concession Document;
 - extend or postpone the time for performance of the obligations of the Applicant under the Concession Document, or
 - forbear or enforce any of the rights exercisable by the State against the Applicant under the terms and conditions of the Concession Document,

and the Bank shall not be relieved from its liability by reason of any such act or omission on the part of the State or any indulgence by the State to the Applicant or other thing whatsoever which under the law relating to sureties would, but for this provision, have the effect of relieving the Bank of its obligations under this Guarantee.

5. Any payment made hereunder shall be made free and clear of and without deduction for, or on account of, any present or future taxes, levies, imposts, duties, charges, fees, commissions, deductions or withholdings of any nature whatsoever.
6. The Bank agrees that State at its option shall be entitled to enforce this Guarantee against the Bank, as a principal debtor in the first instance without proceeding at the first instance against the Applicant.
7. The Bank further agree that the guarantee herein contained shall remain in full force and effect during the period that specified in the Concession Document and that it shall continue to be enforceable till all the obligations of the Applicant under or by virtue of the said Concession Document with respect to the Performance Security have been fully paid and its claims satisfied or discharged or till the State certifies that the terms and conditions of the Concession Document with respect to the Performance Security have been fully and properly carried out by the Applicant and accordingly discharges this guarantee. Notwithstanding anything contained herein, unless a demand or claim under this guarantee is made on the Bank in writing on or before the Expiry Date the Bank shall be discharged from all liability under this guarantee thereafter.
8. The payment so made by the Bank under this Guarantee shall be a valid discharge of Bank's liability for payment thereunder and the State shall have no claim against the Bank for making such payment.
9. This Guarantee is subject to the laws of India. Any suit, action, or other proceedings arising out of this Guarantee or the subject matter hereof shall be subject to the exclusive jurisdiction of courts at the State of [respective State].
10. The Bank has the power to issue this Guarantee in favour of the State. This guarantee will not be discharged due to the change in the constitution of the Bank
11. The Bank undertakes not to revoke this Guarantee during its currency except with the previous consent of the State in writing.
12. The State may, with prior intimation to the Bank, assign the right under this Guarantee to any other departments, ministries or any governmental agencies, which may act in the name of the Governor. Save as provided in this clause, this Guarantee shall not be assignable or transferable.
13. Notwithstanding anything contained herein,
 - (a) the liability of the bank under this bank guarantee shall not exceed the Guarantee Amount.
 - (b) This bank guarantee shall be valid up to the Date of Expiry.
14. The Bank is liable to pay the guaranteed amount or any part thereof under this bank guarantee only and only if the State serves upon the Bank a written claim or demand on or before the Expiry Date.

Dated the [day] day of [month] [year].

In witness whereof the Bank, through its authorized officer, has set its hand and stamp.

(Signature)

(Name and Designation)

(Bank Stamp)

SCHEDULE D

FORMAT OF MINING LEASE DEED

[See rule 6(9)(a)]

This deed for grant of a mining lease ("Lease") is made by and between the following:

PARTIES:

1 **The Governor of [State]**, acting through [*Department of Mines and Geology of the State*] (the "**State Government**").

AND

2 **[Name of the Lessee]** a government [company/corporation] [incorporated in India under the Companies Act, 2013 with corporate identity number [CIN], whose registered office is at [address of registered office], India and principal place of business is at [address of principal place of business, if different from registered office]] (the "**Lessee**").

BACKGROUND:

A. The lessee has completed the requirements under the Mines and Minerals (Development and Regulation) Act, 1957 ("**Act**") and these rules for grant of a mining lease].

B. Accordingly, the State Government is now executing this deed for grant of a lease to the lessee in consideration of the fee, royalties, covenants and agreements hereinafter reserved and contained on the part of the Lessee to be paid, observed and performed.

1. DEFINITIONS.—The expressions used in this lease shall have the same meaning as ascribed to them under the Act and these rules.

2. GRANT OF LEASE

- 2.1. The State Government hereby grants the lease to the lessee over an area described in Schedule E (“**Lease Area**”) for conducting mining operations for a period of [time period], commencing from [date of commencement] with respect to following mineral(s), [name of the minerals] (“**Minerals**”).
- 2.2. The lease shall be with respect to all those the mines beds/veins seams of the Minerals situated lying and being in or under the Lease Area.
- 2.3. Subject to the lessee paying the royalties and making other payments required to be paid and observing and performing all the covenants and agreements herein contained and on the part of the lessee to be observed and performed shall and may quietly hold and enjoy the rights and premises of the lease area for and during the term hereby granted without any unlawful interruption from or by the State Government, or any person rightfully claiming under it.

3. RIGHTS AND OBLIGATIONS

3.1. The rights and obligations of the State Government and the lessee shall be as specified in the Act and these rules and the Mine Development and Production Agreement dated [date].

3.2. Without prejudice to the generality of the foregoing,

(a) the lessee shall:

(i) at all times comply with the provisions of the Act and these rules and any other applicable law;

(ii) make prompt payment of royalty and any other payment required to be made by the lessee;

¹Hkkx HkM 3(i)^o

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

61

(iii) pay such compensation as may be assessed by lawful authority in accordance with the law in force on the subject for all damage, injury, or disturbance which may be done by the lessee in exercise of the powers granted by this lease and to indemnify and keep indemnified fully and completely the State Government against all claims which may be by any person or persons in respect of any such damage, injury or disturbance and all costs and expenses in connection therewith;

(iv) take measures, at his own expense, for the protection of environment like planting of trees, reclamation of mined land, use of pollution-control devices, and such other measures as may be prescribed by the Central or State Government from time to time;

(v) without delay send to the Deputy Commissioner/Collector and the Department, a report of any accident causing death or serious bodily injury or serious injury to property or seriously affecting or endangering life or property which may occur in the course of the operations under this lease;

(vi) weigh or cause to be weighed or measured upon some part of the lease area all minerals from time to time won from the lease area, with [number of days] prior notice being given to the Deputy Commissioner/Collector every such measuring or weighing in order that he or some person on his behalf may be present thereat;

(vii) submit to the State Government and the Department a full report of the work done by the lessee and disclose all information acquired by the lessee in the course of the operations carried on under this lease regarding the geology and mineral resources of the area covered by the lease; and

(viii) pay stamp duty and registration charges as may be applicable in respect of this deed.

(b) the State Government shall:

(i) have the right to appropriate any performance security provided by the lessee in accordance with terms of such performance security and require the lessee to replenish the performance security. In case the performance security has been provided through a security deposit after termination of the lease and fulfilment of all obligations of the lessee, such security deposit shall be returned to the lessee after appropriate deductions. It is clarified that the security deposit shall not carry any interest; and

(ii) have the right to carry out or perform any work or matters which in accordance with the covenants in that behalf are to be carried out or performed by the lessee, but have not been so carried out or performed within the time specified In that behalf, and the lessee shall pay the State

Government on demand all expenses which shall be incurred in such carrying out or performance of the same.

3.3. In the event of the existence of a state of war or emergency (of which existence the President of India shall be the sole judge and a notification to this effect in the Gazette of India shall be conclusive proof) the State Government with the consent of the Central Government shall from time to time and at all times during the said term have the right (to be exercised by a notice in writing to the lessee/lessees) forthwith take possession and control of the works, plant, machinery and premises of the Lessee on or in connection with the lease area or the operations under this lease and during such possession or control, the lessee shall conform to and obey all directions given by or on behalf of the Central Government or State Government regarding the use of employment of such works, plants, premises and minerals, provided that fair compensation, which shall be determined in default of agreement by the State Government shall be paid to the lessee for all loss or damage sustained by him/them by reason or in consequence of the exercises of the powers conferred by this clause and provided also that the exercise of such power shall not terminate the said term hereby granted or affect the terms and provisions of this clause.

3.4. Every notice required to be given to the lessee shall be given in writing to such person as may be nominated by the lessee and such nomination shall be informed to the State Government in writing. If no such nomination is made then the notice shall be given to the lessee by registered post/speed post addressed to the Lessee at the address shown in the application for the lease or at such other address in India as the lessee may designate from time to time and every such service shall be deemed to be proper and valid service upon the lessee and shall not be questioned or challenged by him.

4. GOVERNING LAW

This lease and all questions of its interpretation shall be construed in accordance with the laws of India. In the event of any dispute in relation to the this lease and in respect of all matters touching the relationship of the lessee and the State Government, suits of petitions shall be filed in civil courts at [name of the city]) and it is hereby expressly agreed that neither party shall file a suit or appeal or bring any actions at any place other than the courts named above.

In witness whereof there presents have been executed at the [name of place] on [date].

SCHEDULE E
FORMAT OF APPLICATION FOR REVISION OR PASSING OF ORDER

[See rule 24(1)]

To

[Address]

I/We submit the following application for revision / passing of an order which has not been passed within the required time period.

S. No.	Details of Item	Particulars
1.	Name of applicant (In case of a firm or other association of individuals, provide names of each person constituting the firm or the association of individuals, as the case may be.)	
2.	Address of the Applicant (In case of a firm or other association of individuals, provide addresses of each person constituting the firm or the association of individuals, as the case may be.)	
3.	Status of the applicant • Individual • Firm • Other association of individuals	
4.	Purpose of the application (Review of an order passed / Request for passing of an order where such an order has not been passed within the time period specified)	
5.	In case of review of an order, date of communication of the order to the applicant; or In case of request for passing of an order, the date on which the time period for	
6.	Application fee payable	
7.	Name of bank, demand draft or challan number with date, through which application fee has been paid	
8.	Mineral or minerals for which the application is filed	
9.	Details of area with respect to which the application is filed	
10.	Whether the application is filed within the specified time period.	Yes/No
11.	If not, the reasons for not presenting it within the specified limit and seeking condonation of delay	
12.	Name and complete address of the party/parties impleaded	
13.	Number of copies of petition attached (Petition is to be submitted in triplicate if no party is impleaded. Besides these, for each party impleaded, one additional copy is to be enclosed)	
14.	Grounds of revision	

I/We do hereby declare that the particulars furnished above are correct and am/are ready to furnish any other details, as may be required by you.

Yours faithfully,

Place:

Date:

Signature of the applicant

१Hkkx IIµ[k.M 3(i)°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

63

Instructions to applicants.-(a)The application must be signed by a duly authorized representative of the applicant, in case the applicant is a company. In case the applicant is an individual, the applicant must personally sign the application. In case of a firm or association of individuals, all the persons constituting the firm or association of individuals shall sign the application.

(b) The corporate authorisation of the authorised signatory of the applicant (which is a company) must be enclosed with the application. Any change in such corporate authorisation must be immediately intimated to the State Government.

SCHEDULE F
NOTICE OF CHANGE IN PARTICULARS

[See rule 28]

To

1.Department of Atomic Energy,

Anushakti Bhawan, Mumbai
2.State Government Concerned

IMPORTANT

Notice in this Form shall be sent so as to reach concerned authorities within sixty days of the date of change in name and address

1. (i) Name(s) of the mineral (s) worked

(ii) Name(s) of other minerals if any, for which lease has been granted:

2.(i) Name of the mine

(ii) Change in the name of mines, if any: (Indicate old name and reason of change)

3.(i) Name and address of the lessee/owner:

(ii)Change in Name and address of the lessee/owner
(Indicate old name and reason of change)

4.Particulars of the Mining Lease:

(i)Date of execution:

(ii)Period: _____ Years, from _____ to _____

(iii) Areas under lease: _____ hectares/acres

5.Location of the Mining Lease:

(i) Village _____ Distt. _____ Taluka/Tahsil _____

(ii) Post Office _____ Police Station _____ Distt. _____

(iii)Nearest railway station _____ Distance _____

(iv)Nearest Rest House/Dak Bungalow _____

6.Particulars of Agent: Name and address:

7.Particulars of the Manager of the mine: Name and address

8.Particulars of Mining Engineer employed in the mines:

(i) Name and address:

(ii)Qualification :

(iii)Date of appointment :

(iv)Status of employment: Whole time Part time

9. Letter No. and date through which the mining plan was approved by the Atomic Minerals for Directorate for Exploration and Research

No. of Approval Letter and date of Approval:

10. Any other specific information

Place: Signature :

Date: Name in full:

Designation: Owner/Agent/
Manager/ Mining
Engineer

(Strike out the items which are not applicable)

SCHEDULE G
REGISTER OF MINING LEASES
[See rule 32]

S. No.	Details of Item	Particulars
1.	Serial No.	
2.	Name of applicant (In case of a firm or other association of individuals, provide names of each person constituting the firm or the association of individuals, as the case may be.)	
3.	Address of the applicant (In case of a firm or other association of individuals, provide addresses of each person constituting the firm or the association of individuals, as the case may be.)	
4.	Status of the applicant • Individual • Firm • Other association of individuals	
5.	Date of application	
6.	Date on which application was received by Receiving Officer	
7.	Number and date of grant of lease	
8.	Date of execution of mining lease	
9.	Details of area	
	District	
	Village	
	Taluka	
	Khasra No.	
	Geo co-ordinates of the area as per Differential Geographical Positioning System	
	Survey of India Toposheet number	
¹ Hkkx IIµ[k.M 3(i)° Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k		65
10.	Mineral (s) for which the mining lease has been granted	
11.	Mineral or minerals added to the mining lease with date	
12.	Extent of the area for which mining lease has been granted (Ha)	
13.	Period for which granted	
14.	Date and period of renewal	
15.	Date of change together with details of change that take place in name, or other particulars of the holder of mining lease	
16.	Date from which the area is available for re-grant	
17.	Remarks, if any	
18.	Signature of the officer.	

[No. 1/16/2015-M.VI]

R. SRIDHARAN, Addl. Secy.

Uploaded by Dte. of Printing at Government of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054.